“शादी और सेवकाई”

नीतिवचन 18:22 वह जिसे पत्नी पाता है वह उत्तम पदार्थ पाता है और यहोवा का अनुग्रह प्राप्त करता है।

भजन सहिता 127:1 यदि घर को यहोवा ना बनाये, तो उसके बनानेवालों का परिश्रम व्यर्थ होगा।

रेव. डॉ. जेरी श्मोयर

© 2013

प्रकाशित-2013
1000 प्रतियां

C सभी अधिकार सुरक्षित है

प्रकाशकों की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भी भाग को किसी भी रूप में, इलेक्ट्रॉनिक्स, मैकेनिकल, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या अन्यथा, पुन: प्रस्तुत, एक पुनर्प्राप्ति प्रणाली में संग्रहीत या प्रसारित नहीं क्या जा सकता है।

रु. 30/-

प्रतियों के लिए:

बेथल प्रार्थना फैलोशिप
घर .सं. 8-2-293/129 रोड नंबर 14,
वेंकटेश्वरनगर,
बंजारा हिल्स, हैदराबाद-500 034.
आंध्र प्रदेश, भारत।
bpfellowship@gmail.com
फोन: 9866543468।

मुद्रित स्थान :
स्फूरथी डिजिटल ग्राफिक्स
हैदराबाद। ए. पी. इंडिया।

विवाह और सेवकाई

I. पति - बलिदानी प्रेम 8

क. बलिदानी प्रेम क्या है 10

ख. बलिदानी प्रेम क्यों दिखाएं 15

ग. बलिदानी प्रेम कैसे दिखाएं 18

घ. बलिदानी प्रेम कैसे पायें 26

मेरी पत्नी की तरफ से 28

II. पत्नियां - विनम्र भरोसा 29

क. विनम्र भरोसा क्या है? 29

ख. विनम्र भरोसा क्यों रखे 32

ग. विनम्र भरोसा कैसे दिखाएं 33

घ. विनम्र भरोसा कैसे रखे 37

मेरी पत्नी की तरफ से 38

III. विवाह और सेवकाई 38

क. वह एक टोली के रूप में एक साथ काम करते थे 39

ख. उनकी शादी प्रथम स्थान पर थी 41

ग. उन्होंने अपने बच्चों की लापरवाही नहीं की 46

मेरी पत्नी की तरफ से 47

IV. बच्चे 48

क. धर्मी प्रशिक्षण क्या है 49

ख. धर्मी प्रशिक्षण क्यों लें 50

ग. धर्मी प्रशिक्षण कैसे पाएं 50

मेरी पत्नी की तरफ से 55

पुस्तक का निष्कर्ष 56

प्रस्तावना

हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के सबसे अनमोल नाम में नमस्कार! सबसे पहले मैं रेव डॉ. जेरी को "सेवकाई और विवाह" नामक एक और अद्भुत पुस्तक लिखने के लिए बधाई देना चाहता हूं। यह पुस्तक पादरियों/पासबानो, कलीसिया के प्रचिनो और आम अगुवों के उपयोग के लिए लिखी गई है। हालाँकि इसका उपयोग परामर्श और प्रशिक्षण के लिए भी कीया जा सकता है। उसके राज्य के विस्तार के लिए मसीह - समान सेवक अगुवों को विकसित करने के लिए इस पुस्तक का संदेश बहुत प्रासंगिक है।

डॉ. जेरी श्मोयर एक व्यक्ति के शारीरिक,आध्यात्मिक,सामाजिक और भावनात्मक दोनों रूप से समाकलित विकास के बारे में अधिक चिंतित हैं। सेवकाई और विवाह-गाड़ी के दो पहियों को, आगे बढ़ने के लिए, ठीक से समन्वित कीया जाना चाहिए। वह कहता है कि यदि आप एक अच्छे पति और एक अच्छे पिता नहीं हैं तो आप पादरी बनने के योग्य नहीं हैं (1 तीमुथियुस 3:5)। मैं सेवकाई में शामिल सभी लोगों के लिए इस पुस्तक की दृढ़ता से सिफारिश करता हूं।

मैं बहुत सम्मानित महसूस कर रहा हूं कि मुझे पादरियों/पासबानो, चर्च के अगुवों और प्रत्येक विश्वासी के लाभ के लिए इस पुस्तक को प्रकाशित करने का अवसर मिला है।

रेव. पी. करुणाकर मोसेस

पादरी

बेथेल प्रार्थना फेलोशिप, बंजारा हिल्स, हैदराबाद।

भूमिका

मैं रेव डॉ. जेरी श्मोयर द्वारा लिखित तीसरी पुस्तक - "सेवकाई और विवाह " अन्य दो पुस्तकों - आध्यात्मिमिक युधकला " और " परमेशवर पासबानो/ पादरीओं से क्या उम्मीद रखता है " को पेश करने की स्वतंत्रता लेना चाहता हूं। ये पुस्तकें पहले से ही प्रचलन में हैं और प्रस्तुत सिद्धांतों को पढ़ने और लागू करने से बहुत से लोग लाभान्वित हुए हैं।

यद्यपि यह पुस्तक, सेवकाई और विवाह विशेष रूप से सेवकाई में शामिल परमेशवर के सेवकों के लिए लिखी गई है, इसके सिद्धांत लागू होने में सार्वभौमिक/विश्व्यापी हैं। इस अद्भुत पुस्तक में डॉ. जेरी एक बार अपने परिवार की देखभाल करने के महत्व पर जोर देते हैं, पहली प्राथमिकता परमेशवर को और दूसरी पत्नी और बच्चों को फिर कलीसिया को देना चाहिए हैं। क्योंकि शैतान का मुख्य लक्ष्य परिवार है, एक बार जब परिवार नष्ट हो जाता है तो समुदाय का पूरा ताना-बाना नष्ट हो जाता है।" मनुष्य के लिए क्या फ़ायदा है कि वह सारे संसार को प्राप्त करे और अपने आप को खो दे "(लूका 9:25)।

इस पुस्तक को पढ़कर मुझे व्यक्तिगत रूप से लाभ हुआ, इससे मुझे अपनी प्राथमिकताओं को ठीक करने में मदद मिली। लेखक, बाइबिल से प्रिस्किल्ला और अक्विला का उदाहरण देते हुए पत्नी और पति दोनों को एक टीम के रूप में काम करने पर जोर देता है ताकि वह उसे प्राप्त कर सके जिसकी परमेशवर अपने सेवको से उम्मीद करता है। अपनी सेवकाई के दौरान कई बार पौलूस ने सार्वजनिक रूप से इस पति और पत्नी टीम के काम का प्रतिउत्तर कीया । इस जोड़े ने अभ्यास कीया और परमेशवर के राज्य को आगे बढ़ाने के लिए काम करने की गहरी इच्छा दिखाई।

लेखक कई सिद्धांतों को सामने लाता है जो मसीही समाज में प्रचलित वर्तमान परिस्थितियों के लिए आवश्यक हैं। यह पुस्तक उन सभी के लिए एक आंख खोलने जैसी होगी जो अक्सर दूसरों की सेवा करने में व्यस्त रहते हैं और अपने परिजनों और रिश्तेदारों की लापरवाही करते हैं। लेखक ने कई वर्षों के पासबानी अनुभव के साथ, कई परिवारों को परामर्श देते हुए, आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि एकत्रत की है जिसे वह अपनी इस पुस्तक में हमारे लिए अपनी इस पुस्तक में पेश करता है । पाठक जब इन अद्भुत सिद्धांतों को अपने जीवन में लागू करेंगे तो उन्हें प्रभु की सेवा करने में अधिक आनंद मिलेगा। परमेशवर हमें आशिष दे! ***एक देव ग्लोरिया!***

डॉ। देव कुमार सर्वपल्ली
निदेशक,
लोगोस ब्यूरो-ट्रांसलेशन एंड पब्लिकेशन,
लाइफ मिनिस्टरीज , हैदराबाद, ए.पी.

लेखक की जीवनी

रेव डॉ. जेरी श्मोयर डलास थियोलॉजिकल सेमिनरी से स्नातक हैं, जहां उन्होंने 1975 में मास्टर डिग्री और 2006 में डॉक्टर्स की डिग्री प्राप्त की। उन्होंने 1981 से डोयलेस्टाउन, पीए में मेन स्ट्रीट बैपटिस्ट चर्च में पादरी के रूप में काम किया है। वह 6 बच्चों के पिता और 12 पोते-पोतियों के दादा/नाना है । उनकी शादी नैन्सी से हुई है, जो 34 साल से एक नर्स हैं। एक चर्च की पासबानी करने के अलावा वह विवाह, परिवार और युवा सम्मेलनों का नेतृत्व करता है, परामर्श में बहुत सक्रिय है और युवा पादरियों के लिए परामर्शदाता है। वे 2006 से भारत में पादरियों की सेवकाई में शामिल हैं। वह jerry@schmoyer.net पर संपर्क किया जा सकता है।

पुस्तक का परिचय

<u>मसीही पारिवारिक जीवन और बाइबल</u>

जब से मेरी शादी हुई है, मेरी अधिक दिलचस्पी, धर्मी मसीही पारिवारिक जीवन को बेहतर ढंग से समझने मे रही है। मैंने हमेशा ऐसा पति और पिता बनना चाहा , जैसा परमेशवर ने मुझसे बनने की उम्मीद की थी। मेरी शादी को 34 साल हो चुके हैं और मेरे 6 बच्चे और 12 पोते-पोतियां हैं। मैं एक अद्भुत पत्नी और अच्छे बच्चों के साथ बहुत धन्य हूं। मैंने उनसे बहुत कुछ सीखा है और मैं उनका बहुत आभारी हूं।

एक पासबान और सलाहकार के तौर पर , मैं अपनी सेवकाई के 45 वर्षों के दौरान विवाह और परिवार सलाहकारी में बहुत शामिल रहा हूँ। मैंने इस विषय पर बाइबल में और मसीही लेखकों द्वारा प्रकाशित कई पुस्तकों को पढ़कर गहराई से अध्ययन कीया है। मुझे मैरिज काउंसलिंग करने और कई मैरिज रिट्रीट (वर्कशॉप / सेमिनार) और सम्मेलनों का नेतृत्व करने का आनंद और विशेषाधिकार प्राप्त है। जबकि मैं एक विशेषज्ञ होने का दावा नहीं करता, मुझे लगता है कि मैं समझ गया हूँ कि परमेशवर के मन में क्या था जब उसने पुरुष और महिला को बनाया और उन्हें एक विवाह और परिवार बनाने के लिए एक साथ रखा।

मैंने इस पुस्तक में उन बुनियादी सिद्धांतों को बताने की कोशिश की है। यह अमेरिकी संस्कृति और वेशभूषा पर आधारित विवाह के बारे में एक किताब नहीं है, और ना ही यह इस पर आधारित है कि भारत में विवाह और परिवार कैसे संचालित होते हैं। यह एक ऐसी विवाह पुस्तक भी नहीं है जैसा प्रारंभिक कलीसिया में प्रचलित था। यह केवल बाइबल के अनंत सिद्धांतों को लेने और उनका अर्थ सिखाने के लिए है ताकि उन्हें किसी भी समय और किसी भी संस्कृति पर लागू कीया जा सके। ये परमेशवर के मूल सत्य हैं। उसने हमें बनाया है इसलिए वह जानता है कि हमारे लिए सबसे अच्छा क्या है। इन सच्चाइयों को लें और उन्हें अपने जीवन और संस्कृति में लागू करें क्योंकि वह आपकी अगुवाई करता है।

जबकि मैंने इस पुस्तक को विशेष रूप से भारत में मसीही पासबानो और उनकी पत्नियों के लिए लिखा है, यह सभी भारतीय मसीहियों पर भी लागू होता है। चूंकि यह परमेशवर के मूल सिद्धांतों पर आधारित है, इसलिए इसे किसी भी समय किसी भी देश के पासबानो और मसीहीयों पर भी लागू कीया जा सकता है।

परमेशवर इस पुस्तक का उपयोग भारत और दुनिया भर में परिवारों को मजबूत करने के लिए करे,और काश कि कि हम जो कुछ भी करते हैं, उसमें उसकी महिमा हो। तेरा राज्य आए,**" तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग में है वैसे ही पृथ्वी पर भी पूरी हो"** (मत्ती 6:10)।

रेव. डॉ. जेरी श्मोयर

I. पति - बलिदानी प्रेम

मुख्य विचार: परमेशवर यह जरूरी समझता है कि पतियों को अपनी पत्नियों के प्रति बिना शर्त, बलिदानी प्रेम दिखाना चाहिए जैसे यीशु उन्हें ये दिखाता हैं।

विवाह परमेशवर की ओर से एक अद्भुत उपहार है। पाप के दुनिया में प्रवेश करने से पहले उसने इसे बनाया और स्थापित क्या । यदि मानव जाति ने कभी पाप नहीं किया होता तो विवाह अभी भी सिद्ध अवस्था में ही होता। लेकिन हम गिरे हुए , पापी, आत्मकेंद्रित लोग हैं, और इसलिए किसी और के साथ प्रतिदिन रहना कठिन हो सकता है। सिर्फ लंबे समय तक शादीशुदा बने रहने से शादी की परेशानियां दूर नहीं हो जातीं। अक्सर यह उन्हें बदतर बना देता है। यह पुस्तक हमें समझने में मदद करने के लिए है कि हमारे पाप और असफलताओं के बावजूद कैसे हमारे विवाह को ऐसा बनाऐ जैसे परमेशवर चाहता है। परमेशवर ने हमें बनाया और हमारी शादी को भी रचा है, इसलिए वह जानता है कि हम कैसे एक ऐसा विवाहत जीवन पा सकते है जो शांति और आनंद देता है । इस पुस्तक को खुले दिमाग और दिल से पढ़ें, जो आप पढ़ते हैं उसके माध्यम से परमेशवर को आपसे बात करने दें। चूँकि परुष अगुवा है, हम इस बारे में बात करेंगे कि परमेशवर पहले परुषों से क्या उम्मीद करता है।

यूसुफ और मरियम- यूसुफ का विवाह मरियम से होना था (मत्ती 1:18-25; लूका 2:1-20)। कानूनी कागजात पर हस्ताक्षर किए गए थे, और उसने (युसफ ने) उसे (मरियम को) अपना दहेज (मेहर) दिया था। जो कुछ बचा था वह अंतिम समारोह था ताकि वे एक साथ रहना शुरू कर सकें। उस समय के दौरान यूसुफ को पता चला कि मरियम एक बच्चे की उम्मीद कर रही थी। वह नहीं जानता था कि यह परमेशवर का बच्चा है। उसने सोचा कि वह बेवफा थी, और इससे उसे गहरा दुख हुआ। बहुत से लोग उस व्यक्ति को चोट पहुँचाना चाहते होगे जिसकी वजह से उन्हें इतना दर्द मिला होता है , लेकिन यूसुफ ऐसा नहीं था ।

परमेशवर का कानून कहता था कि वह इस शादी के साथ आगे नहीं बढ़ सकता था । कानून कहता था कि इसे तोड़ा जाना था। यह यूसुफ पर निर्भर था कि वह इससे कैसे निपटता । उसके पास तीन विकल्प थे। वह उसे व्यभिचार के लिए पत्थरवाह करके मार सकता था (लैव्यव्यवस्था 20:10)। या वह उसे सभी लोगों के सामने ला सकता था, उसके पाप के लिए सार्वजनिक रूप से उसका मज़ाक उड़ा कर शर्मिंदा कर सकता था कि संबंध कानूनी रूप से टूट गया है और आपना दहेज वापस ले लेता । लोगों ने एक उदाहरण बनाने के लिए ताकि दूसरे इस तरह से पाप न करें, यूसुफ की सराहना की होगी। यह मरियम के लिए क्रूर और दर्दनाक रहा होता। उसका तीसरा विकल्प था, चुपचाप रिश्ते को खत्म कर देना। उसे उसका दहेज तो वापस नहीं मिलता और इसके अतिरिक्त लोग उसका मजाक जरूर उड़ाते और उसकी आलोचना जरूर करते , हर चीज के लिए उसे दोषी ठहराते। उसकी (मरियम) जगह उसकी (युसफ) प्रतिष्ठा बर्बाद हो जाती । क्या आप जानते हैं कि यूसुफ ने, परमेशवर के कहने से पहले कि वह वैसे भी उससे शादी कर सकता है, कौन सा विकल्प चुना था ?

यूसुफ ने तीसरा विकल्प चुना (मत्ती 1:19)। आपको क्या लगता है, मरियम को कैसा लगा होगा जब उसे पता चला कि यूसुफ उसे सार्वजनिक शर्म से बचाने जा रहा है और इसके बजाय खुद पर दोष लेने वाला है, भले ही ऐसा लग रहा था कि वह उसके प्रति बेवफा थी? इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि परमेशवर ने अपने पुत्र को पालने के लिए यूसुफ जैसे व्यक्ति को चुना!

यूसुफ ने मरियम और उसकी आवश्यकताओं को अपनी आवश्यकताओं से प्राथमिकता पर रखा (लूका 2:1-20)। कोई आश्चर्य नहीं कि गर्भवती होने के बावजूद वह उसके साथ बेतलेहम जाना चाहती थी। कोई आश्चर्य नहीं कि उसने शीघ्र ही आज्ञा का पालन कीया जब परमेशवर ने, यूसुफ के माध्यम से, उन्हें मिस्र जाने के लिए और फिर बाद में नासरत लौटने के लिए कहा, जहां उनके बारे में सभी बातें बहुत आलोचनात्मक थीं (मत्ती 2:13-23)। मुझे लगता है कि यूसफ बाइबिल के सबसे अच्छे व्यक्तियों में से एक है, जो आज सभी पतियों के लिए एक महान उदाहरण है।

अब्राहाम और सारा -हालांकि सभी पति यूसुफ की तरह नहीं हैं। अब्राहाम इसके विपरीत था। जब हम पहली बार अब्राहाम और सारा से मिलते हैं (उत्पत्ति 11:27-30), तो ऐसा प्रतीत होता है कि उनका विवाह अच्छा है। उसे अपने घर और परिवार को किसी अनजान देश में जाने के लिए छोड़ने में कोई परेशानी नहीं होती है जब अब्राहाम समान पैक करने और अनजाने देश को जाने के लिए कहता है (उत्पत्ति 12:1-5)। हालाँकि जल्द ही समस्याएं उत्पन्न होती हैं।जब वे वादा किए हुए देश में पहुँचे, वहाँ अकाल पड़ा हुआ था । परमेशवर पर भरोसा करने केऔर इसमें बने रहने कि बजाय, अब्राहाम ने हालातों को अपने हाथों में ले लिया और मिस्र को चला गया। क्योंकि सारा 60 वर्षो के करीब आयु में होने के बावजूद अभी भी सुंदर थी, अब्राहाम को डर था कि फिरौन उसे मार डालेगा ताकि वह सारा को अपने हरम(गोलिओं का कक्ष) में ले जा सके। उसने उसे यह कहकर, उसकी रक्षा करने के लिए अपने रिश्ते के बारे में झूठ बोला था, कि वह उसकी बहन जैसे थी (उत्पत्ति 12:10-20)। उसे ले जाया गया, लेकिन अब्राहाम सुरक्षित था। यह सारा को कैसा महसूस कराता होगा, आप क्या सोचते है ?

उसने अब्राहाम की रक्षा के लिए खुद को बलिदान कर दिया, जबकि उसे उसकी रक्षा के लिए बलिदान देना चाहिए था। एक महिला को अपने पति के प्यार में सुरक्षित और मजबूत महसूस करने की जरूरत होती है। सारा के पास ऐसा नहीं था। अब्राहाम ने उसे दिखाया कि वह खुद को प्राथमिकता पर रख रहा है और खुद की देखभाल कर रहा है, उसकी नहीं। दुर्भाग्य से यह अब्राहाम के साथ केवल एक बार की घटना नहीं थी। बीस साल बाद वही हुआ (उत्पत्ति 20:1-18)। अब्राहाम ने कभी सारा की रक्षा नहीं की, लेकिन केवल खुद की।

सारा ने खुद को बचाने के लिए अपने जीवन पर नियंत्रण कर लिया क्योंकि अब्राहाम ऐसा नहीं कर रहा था। क्योंकि वह उस पर भरोसा नहीं कर सकती थी, इस लिए जब परमेशवर की ओर से दूत आए , वह तम्बू के द्वार के पास खड़ी सुन रही थी (उत्पत्ति 18:10)। उसने अब्राहाम को हाजिरा के द्वारा एक वारिस पाने के लिए कहा (उत्पत्ति 16:1-3), और फिर जब वह हाजिरा के द्वारा हीन भावना से देखी जाने लगी और उससे दुखी होने लगी , तो उसने अब्राहाम के द्वारा उसे घर से निकलवा दिया था (उत्पत्ति 16:4-6)। वह होने वाले पुत्र के लिए परमेशवर की भविष्यवाणी पर भी हँसी (उत्पत्ति 18:9-15)। जब इसहाक का जन्म हुआ, तो उसने उसका उपयोग उन जरूरतों को पूरा करने के लिए क्या जो उसका पति पूरी नहीं कर रहा था: आवश्यक और महत्वपूर्ण महसूस कराना (उत्पत्ति 21:1-7)। इसने इसहाक को एक मजबूत महिला के अधीन रहना सिखाया, एक तौर-तरीका जिसे उसने जारी रखा और याकूब को दिया। यहाँ तक कि सारा ने अब्राहाम को इश्माएल को घर से निकालने के लिए मजबूर कीया (उत्पत्ति 21:8-13)। जब परमेशवर ने इन सब के बारे में अब्राहाम पर काम करना शुरू कीया और उसे इसहाक को लेकर और उसका बलिदान करने के लिए कहा, तो ऐसा लगता है कि उसने सारा को नहीं बताया (उत्पत्ति 22:1-3)। ध्यान दें कि,अब्राहाम के खुद को प्राथमिकता देने केकारणयह रिश्ता किस हद तक बिगड़ चूका था।

पुरुषों, आप किस के जैसे हो, अब्राहाम या युसफ ? आपकी पत्नी आप को किसके जैसा कहेगी, कि आप उसकी तरह है ? क्या वह कहेगी कि आप उस की रक्षा करते हैं , चाहे कुछ भी सहन कियों ना करना पड़े , जैसे यूसुफ ने मरियम के लिए कीया था, या कि आप खुद को प्राथमिकता पर रखते हो , जैसे अब्राहम ने सारा के साथ कीया था? शायद हम सबसे पहले यह पूछें कि मेरी पत्नी किसके जैसी जयादा है। यदि वह सारा की तरह अधिक है, तो उसे सुरक्षित महसूस कराने और आप पर विश्वास करने के लिए आपको क्या करने की आवश्यकता है? अगर वह मरियम की तरह अधिक है - बढ़िया! सारा श्रेय लेने से पहले एक मिनट प्रतीक्षा करें। क्या वह आपके बलिदानी प्रेम और सुरक्षा केकारणमरियम की तरह है, इस लिए क्योंकि आप उसके साथ कैसा व्यवहार करते हैं, या इसकारणक्योंकि वह परमेशवर पर भरोसा कर रही है, बावजूद इसके की आप का वर्ताव उसके साथ कैसा भी है ?

बड़े होने पर आपने अपने माता-पिता से क्या नमूना लिया ? क्या तुम्हारा पिता, अधिक अब्राहाम की तरह या यूसुफ की तरह था? क्या आपकी माँ सारा जैसे या मरियम जैसी थी? आप अपने बच्चों को क्या पढ़ा रहे हैं? अब्राहाम ने इसहाक और याकूब को आपने आप को पहल पर रखना सिखाया। क्या तुम्हारे बेटे तुम्हारे उदाहरण से यही सीख रहे हैं?

आप अपनी पत्नी को अपने प्यार में अधिक सुरक्षित महसूस कराने के लिए क्या कर सकते हैं? आप किन तरीकों से उसके प्रति अपना प्यार अधिक दिखा सकते हैं? आप उसे बहुत कड़ी मेहनत से, घर के बाहर या अंदर से मिलने वाली आलोचना से, अनादरपूर्ण बच्चों से, और उन लोगों से जो उसका फायदा उठाना चाहते हैं, कौन से बेहतर तरीके से, उसकी रक्षा करने के लिए, क्या कर सकते हैं? हम सभी को मरियम जैसी पत्नियां पाना अच्छा लगेगा। हम भी कर सकते हैं। पहला कदम यह है कि हम और अधिक यूसुफ की तरह बनें!

क . बलिदानी प्रेम क्या है ?

परमेशवर चाहता है कि सभी पति यूसुफ जैसे हों। उन्हें आज्ञा दी गई है कि वे अपनी पत्नियों को बलिदानी रूप से प्रेम करें, जैसे यीशु उनसे प्रेम करता हैं। "हे पतियो, अपनी अपनी पत्नी से प्रेम रखो, जैसा मसीह ने कलीसिया से प्रेम करके अपने आप को उसके लिये दे दिया" (इफिसियों 5:25)। "परन्तु तुम में से हर एक अपनी पत्नी से वैसा ही प्रेम रखे जैसा वह अपने आप से प्रेम रखता है, और पत्नी भी अपने पति का आदर करे" (इफिसियों 5:33)। यह एक आज्ञा है और यदि लोग ऐसा नहीं करते हैं तो वे परमेशवर की अवज्ञा कर रहे हैं।

बेशर्त प्रेम परिभाषित नए नियम में प्रेम के लिए दो शब्द हैं। एक, यूनानी में है फीलियो, किसी जन को इस के लिए पसंद करने की बात करता है, कि वह क्या करता हैं या क्या नहीं करता हैं। यह एक शर्त आधारित प्रेम है। हम उन्हें प्यार करते हैं इसके लिए जो वह क्या करते हैं। कई शादीशुदा लोगों का एक-दूसरे के लिए ऐसा प्यार होता है। जब वे दुखी होते हैं या त्यागे हुए महसूस करते हैं तो वे अपने साथी से प्यार नहीं करते। यह उस प्रकार का प्रेम नहीं है जैसा परमेशवर का हमारे लिए है। इस तरह के प्यार से शादी नहीं बढ़ेगी। लोगों का स्वभाव पापी होता है, वे असफल होंगे और एक दूसरे को चोट पहुँचाएँगे। इन बातों के बावजूद पतियों को अपनी पत्नियो से प्रेम करना चाहिए, जैसे परमेशवर उनसे प्यार करता है बावजूद इसके कि वे जो कुछ भी करते हैं।

प्यार के लिए दूसरा शब्द, यूनानी में है , अगापे, यह बेशर्त प्यार को संदर्भित करता है, बिना इस से कोई फर्क पड़े कि कोई व्यक्ति क्या करता है, उसके पाप और विफलता के बावजूद भी उसे प्यार कीया जाता है। यह प्रत्येक के लिए, परमेशवर के प्रेम के लिए प्रयुक्त शब्द है (1 यूहन्ना 4:8, 16)।

बेशर्त प्यार का दिखया जाना पुराने नियम में परमेशवर ने होशे नाम के एक भविष्यवक्ता को गोमर नाम की एक महिला से शादी करने के लिए कहा। उसके प्रति उसके विश्वासयोग्य प्रेम के बावजूद, वह उसके प्रति विश्वासघाती थी (होशे 1-2)। उसके बच्चे अन्य पुरुषों से हुए, और अंतः उसने अन्य पुरुषों के साथ रहने के लिए आपने पति को छोड़ दिया। कुछ समय बाद वह गुलाम बन गई। जब होशे को इस बात का पता चला, तो उसने जाकर उसे मोल लिया/आज़ाद करवा लिया, कि वह उसे घर ले आए, और उसे अपनी पत्नी के रूप में बहाल कर दे। परमेशवर ने होशे को अपने लोगों के लिए अपने स्वयं के बेशर्त प्यार को चित्रित करने के लिए ऐसा कीया था, जिन्होंने पाप कीया है और उसे छोड़ दिया है, फिर भी परमेशवर अपने लोगों को प्यार करता है और बहाल करता है, भले ही वे इसके लायक नहीं हैं। यह बेशर्त प्यार है! इस प्रकार वह अपने लोगों से प्रेम करता है। यह वो उदाहरण है जो वह पतिओ और पत्नियों को एक दूसरे से प्रेम करने के लिए देता है।

अपनी पत्नी को बेशर्त प्यार करने का मतलब है कि आप उसकी तुलना अन्य पत्नियों से नहीं करते हैं और न ही अपनी माँ से करते हैं। आप नहीं चाहेंगे कि वह आपकी तुलना अन्य पुरुषों से करे! आपको उसके रूप की तुलना अन्य महिलाओं से नहीं करनी है, ना ही उसके खाना पकाने या घर सभांलने के लिए । आपको उसे वैसे ही प्यार करना है जसी वह है, बेशर्त, वैसे ही जैसे यीशु आपसे प्यार करता है। वह आपकी तुलना अन्य मसीहीयो से नहीं करता है, और इससे तय नहीं करता है कि वह आपसे अधिक या कम प्यार करे ! उसे बेशर्त प्यार करने का मतलब है कि आप उससे यह उम्मीद नहीं करते कि वह आपकी तरह सोचे और काम करे। महिलाएं पुरुषों से बहुत अलग हैं (1 पतरस 3:7 में "कमजोर साथी")। उनकी ज़रूरतें, खासकर भावनात्मक रूप से, बहुत अलग हैं। पत्नियों को यह जानने की जरूरत है कि उनके पति अपने परिवार को परमेशवर की अगुवाई से निर्देशित कर रहे हैं। उन्हें आश्वासन चाहिए कि उन्हें प्यार कीया जाता है और वह महत्वपूर्ण हैं। उन्हें यह जानने की जरूरत है कि उनका पति उनकी रक्षा करेगा और उनकी देखभाल करेगा। उन्हें यह जानने की जरूरत है कि आप उन्हें बेहतर तरीके से जानना चाहते हैं और जब वे बात करेंगी तो आप सुनेंगे। उसकी ज़रूरतें आपकी ज़रूरतों से बहुत अलग हैं। उसे वैसे ही जानें जैसी वह वास्तव में है।

बेशर्त प्रेम वर्णित परमेशवर स्वयं 1 कुरिन्थियों 13:4-7 में इस प्रकार के प्रेम का वर्णन करता है: "प्रेम धैर्यवान है, प्रेम दयालु है। यह ईर्ष्या नहीं करता है, यह घमंड नहीं करता है, यह अभिमान नहीं करता है। यह असभ्य नहीं है, यह स्वार्थी नहीं है, यह आसानी से क्रोधित नहीं होता है, यह गलतियों का कोई रिकॉर्ड नहीं रखता है। प्रेम बुराई से प्रसन्न नहीं होता, परन्तु सत्य से आनन्दित होता है। यह हमेशा सुरक्षा करता है, हमेशा भरोसा करता है, हमेशा उम्मीद करता है, हमेशा द्रढ़ करता है।" यह सब हमें बेशर्त प्यार के बारे में बताता है।

सबसे पहले, प्यार दूसरों के साथ धैर्य रखता है, यह उनके परिपूर्ण होने की मांग नहीं करता है, लेकिन धैर्यवान होता है जैसे परमेशवर आपके साथ हैं। यह दयालु है और दूसरों की मदद करने के लिए भले काम करता है, चाहे वे इसके लायक हैं या नहीं, जैसे यीशु ने नेक सामरी के दृष्टांत में सिखाया (लूका 10:30-37)। बेशर्त प्यार ईर्ष्या या जलन नहीं करता है, लेकिन शादी और जीवन में परमेशवर ने जो दिया है उससे संतुष्ट होता है । यह घमंड नहीं करता क्योंकि यह आत्मकेंद्रित नहीं है। जो लोग शादीशुदा हैं वे एक-दूसरे से डींग नहीं मारते कि वे कितने अच्छे पति या पत्नी हैं क्योंकि उन्हें इसके लिए गरूर/घमंड नहीं होता । वे औरो के ध्यान का केंद्र बनने की मांग नहीं करते हैं। यीशु की तरह, वे नम्र होते हैं (फिलिप्पियों 2:3-4)।

इसके अतिरिक्त, इस प्रकार का प्रेम बेलिहजा नहीं होता, इसके बजाय यह अच्छे आचरण वाला होता है, विचारशील होता है, और दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करने के सुनहरे नियम के अनुसार जीता है, जैसा हम चाहते हैं कि दूसरे हमारे साथ व्यवहार करें (लूका 6:31)। हमारे लिए परमेशवर की तरह बेशर्त प्यार आत्म-मांग करने वाला नहीं होता । यह स्वार्थी या आत्मकेंद्रित नहीं होता है। इसके बजाय, एक सेवक की तरह प्यार करता और यह सोचता है कि वह दूसरों के लिए क्या कर सकता है, न कि दूसरे उसके लिए क्या कर सकते हैं। यह विवाह में विशेष रूप से एक सच है, जहाँ दोनों साथियों को आपने दूसरे साथी को खुद के पहले रखना चाहिए। परमेशवर का "अगापे" आसानी से क्रोधित नहीं होता है और अपना रास्ता पाने के लिए दूसरों को चोट नहीं पहुंचाता है। कई बार लोग देखते हैं कि उनके माता-पिता जो चाहते हैं, वो पाने के लिए गुस्से का इस्तेमाल करते हैं, और उन्हें लगता है कि वे खुद ऐसा करना शुरू कर सकते हैं, लेकिन परमेशवर का प्यार हमारे साथ ऐसे व्यवहार नहीं करता है, और ना ही हमें एक-दूसरे के साथ ऐसा व्यवहार करना चाहिए। जब कुछ वैसा नहीं होता जैसा हम चाहते हैं, तो हमें उस व्यक्ति को क्षमा कर देना चाहिए और गलतियों का कोई रिकॉर्ड नहीं रखना चाहिए। परमेशवर के प्यार की तरह, वो प्यार जो बिना मांगे माफ कर देता है। वह हमारे पापों को याद नहीं रखता (यिर्मयाह 31:34; इब्रानियों 8:12; 10:17) और ना ही वह भविष्य में उनको सामने लाता है। अगर हमें यीशु की तरह बनना है, तो हम आपने साथी के पापों का उल्लेख तो कया उन्हें याद भी नहीं कर सकते। सच्चा प्रेम बुराई से प्रसन्न नहीं होता, परन्तु सत्य से आनन्दित होता है (वचन 6)। हमें खुश नहीं होना चाहिए जब किसी ऐसे के साथ कुछ बुरा होता है जिसने हमें नुकसान पहुंचाया हो । जब हमारा साथी गलत है या वे जो कर रहा हैं उसमे असफल हो जाता है तो हमें कोई खुशी नहीं मिलनी चाहिए। परमेशवर हमारे साथ ऐसा नहीं है। इसके बजाय परमेशवर के प्रेम जैसा प्रेम हमेशा दूसरे की रक्षा करता है जैसे यूसुफ ने मरियम के लिए क्या , और जैसे बोआज़ ने रूथ की रक्षा की जब वह उसके खेतों में काम कर रही थी (रूत 2:5-17)। ध्यान दें यह कहता है, कि हमेशा सुरक्षा करना है, न केवल कभी-कभी, न केवल जब यह आसान हो या हम चाहते हों, लेकिन बिना किसी शर्त के, चाहे कुछ भी हो।

एक और चीज जो यह प्यार करता है वह है हमेशा भरोसा करना । यह हमेशा दूसरे के बारे में अच्छा देखता है और उनकी हमेशा तारीफ और उनको प्रोत्साहित करता है। यह हमेशा आशा रखता है, यह बुराई नहीं अच्छाई ढूंढता है और हमेशा एक और मौका देने के लिए तैयार रहता है। यह हमेशा दृढ़ रहता है और कभी हार नहीं मानता या छोड़ता नहीं है, चाहे कठिनाइयों या समस्याओं का सामना करना पड़े। जब आपका साथी कठिन समय से गुजर रहा हो, तो वफादार रहें, पहले से भी अधिक उनके करीब रहें। ऐसा इसलिए है क्योंकि प्यार कभी असफल नहीं होता। यह उसको, जिसे आप प्यार करते हैं, निराश या नीचा नहीं करता हैं। इसके बजाय, यह दूसरे को पहल पर रखता है और मजबूत होता जाता है। इसका मतलब है कि अपने साथी से वैसे ही प्यार करें जैसे वे हैं, पाप और सब कुछ। प्यार के साथ, कोई भी शादी बढ़ सकती है क्योंकि प्यार किसी भी कौशल, प्रशिक्षण, स्कूली शिक्षा, प्रतिभा या क्षमता से अधिक महत्वपूर्ण है। प्रेम किसी भी चीज़ से बड़ा है (आयत 13)।

अपनी पत्नी से वैसे ही प्रेम रखो जैसे यीशु तुम्हें प्रेम करता है परमेशवर हमें आज्ञा देता है: "हे पतियो, अपनी अपनी पत्नी से प्रेम रखो, जैसा मसीह ने कलीसिया से प्रेम करके अपने आप को उसके लिये दे दिया" (इफिसियों 5:25)। यीशु ने न केवल कलीसिया से प्रेम क्या, बल्कि उसने "उसके लिए अपने आप को दे दिया" (इफिसियों 5:25)। उसने अपनी दुल्हन, कलीसिया के लिए अपना सब कुछ बलिदान कर दिया। पति कभी-कभी स्वार्थी और आत्मकेंद्रित हो जाते हैं। वे पहले अपने बारे में सोचते हैं और महसूस करते हैं कि उनकी पत्नियों को उनके लिए और अधिक करना चाहिए। वे शिकायत करते हैं जब ऐसा नहीं लगता कि वह उनकी जरूरतों को पूरा कर रही है। कुछ पुरुष कहते हैं कि वे अपनी पत्नियों से प्यार

करेंगे और एक बेहतर पति बनेंगे जब वह पहले वह एक बेहतर पत्नी बनेंगी। ऐसा नहीं है जो यीशु हमारे लिए करता है और ऐसा नहीं होना चाहिए कि पति अपनी पत्नियों के लिए ऐसे हो। यीशु ने हमारे लिए अपना सब कुछ बलिदान कर दिया क्योंकि वह हमसे प्यार करता था। यहां तक कि उन्होंने हमारे लिए अपनी जान भी दे दी। एक पति का अपनी पत्नी के लिए प्यार इस बात से दिखाया जाएगा कि वह उसके लिए कैसे बलिदान करता है। यीशु ने हमारे लिए सब कुछ त्याग दिया, और यही वह उदाहरण है जिसका अनुसरण पुरुषों को अपनी पत्नियों से प्रेम करने में करना चाहिए।

कभी-कभी पति सोचते हैं कि वे अपनी पत्नियों के लिए बलिदान करते हैं, लेकिन हमारी पत्नियों को जो चाहिए और यीशु ने हमारे लिए जो कीया, उसकी तुलना में यह वास्तव में बहुत अधिक नहीं है। परमेशवर की तरह हमारे लिए प्यार करने का मतलब है अपनी पत्नी को प्यार दिखाना जैसे वह आपको दिखाता है। यीशु ने "हमारे लिए अपने आप को दे दिया" (इफिसियों 5:25)। उसने पृथ्वी पर आने के लिए स्वर्ग में सब कुछ छोड़ दिया, यहाँ दुख उठाया, और फिर उस क्रूस पर चला गया जहाँ उसने वह भोगा जो हम अनंत काल तक नरक में भोगते। वही असली बलिदान है। उसने यह हमारे लिए कीया , ना कि अपने लिए या इस लिए कि उसे इसके बदले में जो मिलेगा। इससे पहले कि हम उससे प्यार करने के लिए कुछ भी करें, उसने हमारे लिए ऐसा क्या । पुरुषों को भी उसी तरह का प्यार दिखाना चाहिए और तब तक इंतजार नहीं करना चाहिए जब तक उन्हें नहीं लगता है कि उनकी पत्नियां इसके लायक हैं।

यीशु का क्रूस पर जाने का मन नहीं था, उसने इसके ठीक विपरीत महसूस कीया (मरकुस 14:36; लूका 22:42)। पति तब तक इंतजार नहीं कर सकते जब तक कि उनका अपनी पत्नियों को बेशर्त, बलिदानी प्यार दिखाने का मन नही करता। उन्हें हमेशा और हर हालात में यह करना चाहिए। क्या आपकी पत्नी यीशु के प्रेम को उसी रूप में देखती है जैसे आप उससे प्रेम करते हैं? क्या वह कह सकती है कि जिस तरह से आप उससे प्यार करते हैं, उसके कारण वह बेहतर ढंग से समझती है कि यीशु उससे प्यार करता है? परमेशवर पतियों से यही उम्मीद करता है। उस तरह का पति होना परमेशवर के लिए एक पादरी/पासबान होने से भी अधिक महत्वपूर्ण है। वास्तव में, यदि हम ऐसा नहीं कर सकते हैं या नहीं करना चाहते हैं, तो हमें पादरी नहीं होना चाहिए ((1 तीमुथियुस 3:2, 4-5; तीतुस 1:6; 2:6; इफिसियों 5:22-33; 1 पतरस 3:1-7; उत्पत्ति 2:23-24)।

नम्र प्रेम बलिदान नम्रता लेता है। यीशु ने हमारे लिए आपने आप का बलिदान करने के लिए खुद को दीन कीया। वह हमारा उदाहरण है। "तुम्हारा स्वभाव वैसा ही होना चाहिए जैसा मसीह यीशु का है: जिसने परमेशवर के स्वभाव में होने के कारण, परमेशवर के साथ समानता में बने रहना ना चाहा, बलकि अपने आप को शून्य बनाया, एक सेवक के स्वभाव को लेकर, मानव समानता में बन गया, और मनुष्य के रूप में प्रगट होकर अपने आप को दीन कीया , और मृत्यु तक आज्ञाकारी बना, हाँ क्रूस पर मृत्यु तक भी! (फिलिप्पियों 2:5-8)। उस सब जो यीशु ने आपके लिए त्याग दिया था उसके बारे सोचें । आपने अपनी पत्नी के लिए जो त्याग क्या है, उसकी तुलना कैसे की जाती है? आपकी पत्नी ने जीवन में कितना त्याग कीया है, क्योंकि उसने आपसे शादी की है? अक्सर हम उम्मीद करते हैं कि हमारी पत्नियाँ हमारे लिए जितना त्याग करती हैं, उससे कहीं अधिक हमारे लिए त्याग करें, फिर भी परमेशवर हमसे उम्मीद करता है कि हम उसके समान बनें और सब कुछ त्याग दें।

यीशु ने हमसे इतना प्यार कीया कि वह हमारे लिए मर गया । क्या आप अपनी पत्नी से इतना प्यार करते हैं कि उसके लिए मर जाए? क्या आप उससे इतना प्यार करते हैं कि हर दिन खुद के लिए थोड़ा सा मर जाए क्योंकि आप उसके लिए रोजाना बलिदान करते हैं? जब यीशु ने हमारे लिए अपना सब कुछ बलिदान कर दिया तो हमें इसके बारे में पता भी नहीं था। हमें अभी भी इस बात का अंदाजा नहीं है कि वास्तव में

उसकी कीमत कितनी थी। आपकी पत्नी को नहीं पता होगा कि आप उसके लिए कितना त्याग करते हैं, लेकिन यह ठीक है क्योंकि यीशु जानता है और यही मायने रखता है।

कुछ पुरुष सोचते हैं कि अपनी पत्नी की सेवा करना शर्म की बात है लेकिन अपनी पत्नी की सेवा करना सम्मान की बात है। परमेशवर ठीक इसके विपरीत कहता हैं। अपनी पत्नी की सेवा करना एक सम्मान की बात है जैसे यीशु हमारी सेवा करता है क्योंकि तब ही हम उसके जैसे बन रहे होते हैं। यह शर्म की बात है कि हमारी पत्नियों ने हमारी सेवा की है क्योंकि यीशु हमारे साथ ऐसा व्यवहार नहीं करता हैं। परमेशवर एक ऐसे व्यक्ति को सम्मान देता है जो अपनी पत्नी के लिए बेशर्त, बलिदानी प्रेम दिखाता है, जो अपने परिवार को परमेशवर की सेवा करने के लिए प्रेरित करता है, और जो अपनी पत्नी के साथ वैसा ही व्यवहार करता है जैसा यीशु उसके साथ करता है।

कई साल पहले अमेरिका में सेवकाई में एक प्रसिद्ध, बहुत सफल व्यक्ति था जिसकी पत्नी को अल्जाइमर (एक ऐसी बीमारी जिस में व्यक्ति की यादाश्त धीरे धीरे ख़तम होने लगती है और फिर शरीर के अंग दिमाग के निंत्रण से बहार हो जाते है) का रोग हो गया था और वह अपनी देखभाल नहीं कर सकती थी। वह नहीं जानती थी कि अब कोई कौन है, यहाँ तक कि आपने पति को भी नहीं पहचानती थी। उसने घर पर रहने और उसकी देखभाल करने के लिए अपने महत्वपूर्ण सेवकाई के पद से इस्तीफा दे दिया: उसे नहलाना, उसके कपड़े धोना, उसको कपड़े पहनाना और उसे खाना खिलाना। उसने उसके लिए सब कुछ छोड़ दिया, हालांकि वह नहीं जानती थी कि वह कौन है। जब उस से पूछा गया कि उसने ऐसा क्यों कीया तो उसने कहा कि ऐसा करना उनके लिए सौभाग्य और सम्मान की बात है। वह कहने लगा के वह यीशु के उदाहरण का अनुसरण कर रहा था। कियोंकि वह जानता था कि एक अच्छा पति बनना एक अच्छा पादरी बन्ने से अधिक महत्वपूर्ण था।

अपनी पत्नी से वैसे ही प्रेम करो जैसे तुम स्वयं से प्रेम करते हो पौलुस फिर कहता है, "तुम में से हर एक अपनी पत्नी से वैसा ही प्रेम रखे जैसा वह अपने आप से करता है" (इफिसियों 5:33)। हम खुद को बेशर्त प्यार करते हैं। अगर हम कोई गलती करते हैं या कुछ गलत करते हैं तो हमें बुरा लगता है, लेकिन हम इससे उबर आते हैं और आगे बढ़ते हैं। हम अभी भी खुद को स्वीकार करते हैं, चाहे हम कुछ भी करें। इसी लिए हमें अपनी पत्नियों से वैसा ही प्रेम करना चाहिए जैसा हम अपने आप से करते हैं (इफिसियों 5:33)।

इसका मतलब यह नहीं है कि हम ऐसा दिखावा करें कि अपनी पत्नियों की गलतीयों और कमजोरियों को नहीं जानते हैं, क्योंकि हम उनके बारे में बहुत जानते हैं। इसका मतलब है कि उनसे प्यार करना चाहे वे कुछ भी हों। परमेशवर हमें हमेशा अपनी पत्नियों को पसंद करने की आज्ञा नहीं देता हैं, कई बार जो वे करती हैं हम उसके लिए उन्हें पसंद नहीं करते। लेकिन परमेशवर हमेशा उन्हें प्यार करने के लिए कहता हैं। हम जो करते हैं उसे वह हमेशा पसंद नहीं करता है लेकिन वह हमेशा हमसे प्यार करता है। उसके (पत्नी के) साथ वैसा ही वर्ताव करें जैसा आप अपने साथ करते हैं और जैसा आप चाहते हैं कि दूसरे आपके साथ वर्ताव करें (लूका 6:31)।

एक महिला केवल प्रतिक्रिया करती है यदि उससे सम्मान से पेश आते है, तो वह उसी तरह जवाब देगी। यदि वह आपने आप में दुखी और महसूस करती है कि उसकी लापरवाही की जाती है, तो यह उसके कामों से दिखाई देगा, इसीकारणपरमेशवर पुरषों को उनकी पत्निओं के लिए जिमेदार ठहरता है। यदि एक पुरष अपनी पत्नी से प्यार और सम्मान भरा वर्ताव करता है तो वह उसी ढंग से प्रतिउतर करेगी। जैसा कि यीशु पहले हमें प्यार करने और हम तक पहुँचने के लिए पहल करता हैं ताकि हम उसके प्यार का प्रतिउत्तर दे सकें, हमें पतियों के रूप में अपनी पत्नियों को अपने बेशर्त, बलिदानी प्यार में प्रेमिका

और सुरक्षित महसूस कराने के लिए आगे बढ़कर पहल करना हैं। परमेशवर उम्मीद करता है कि पति पत्नियों के साथ वैसा ही व्यवहार करें जैसा वह उनके साथ करता है। तब पत्नियाँ प्रतिउत्तर देंगी जैसे मसीही गण उसके प्रति करते हैं। याद रखें, "जो पत्नी को पाता है, वह उत्तम पदार्थ पाता है, और उस पर यहोवा का अनुग्रह होता है" (नीतिवचन 18:22)। "जो स्त्री यहोवा का भय मानती है, उसकी स्तुति की जाती है" (नीतिवचन 31:29-31) "वह माणिकों से कहीं बढ़कर है" (नीतिवचन 31:10)। यह मत सोचो कि उसे तुम्हारे लिए कैसे बदलना चाहिए; इस बारे में सोचें कि आप उसके लिए कैसे बदल सकते हैं।

ख. बलिदानी प्रेम क्यों दिखाएं

कई कारण है जिनकी वजह से परमेशवर चाहता है कि पति अपनी पत्नियों के लिए बलिदानी प्रेम दिखाएं।

पति की खातिर एक पादरी अपनी भेड़ों की रक्षा करने , उनका मार्गदर्शन करने ,उनकी अगुवाई करने और उनको चारा खिलाने के लिए जिम्मेदार होता है। आपकी भेड़ें आपके चर्च के लोग हैं। लेकिन क्या आप जानते हैं कि आपकी सबसे महत्वपूर्ण भेड़ कौन है? क्या आप अपने चर्च में उस व्यक्ति के बारे में जानते हैं जो सबसे पहल स्थान पे आता है, सबसे पहल पर ? यह वह व्यक्ति नहीं है जो सबसे अधिक पैसा देता है या सबसे अधिक शिकायत करता है। यह तुम्हारी पत्नी है! वह आपकी सबसे पहली भेड़ है (1 तीमुथियुस 3:2, 4-5; तीतुस 1:6; 2:6; इफिसियों 5:22-33; 1 पतरस 3:1-7; उत्पत्ति 2:23-24)। यदि कोई पुरुष एक अच्छा पति नहीं हो सकता है, तो उसे पादरी नहीं होना चाहिए।

कलीसिया के अगुवों के लिए अपनी योग्यताओं की सूची में, पौलुस विस्तार से बताता है, जब वह कहता है कि एक पासबन को अपने परिवार का अच्छी तरह से प्रबंधन करना चाहिए ,यदि नहीं तो वह कलीसिया की देखभाल करने में सक्षम नहीं होगा (1 तीमुथियुस 3:4-5)। चर्च की तुलना में अपने परिवार की अगुवाई करना कठिन हो सकता है। परमेशवर आपके घरेलु संबंधों का उपयोग करता है, विशेष रूप से आपकी पत्नी के साथ, पतियों को यीशु की तरह बनने के लिए सिखाने और प्रशिक्षित करने के लिए। पुरुष शादी में प्यार, धैर्य और त्याग करना सीखते हैं।

इस कारण परमेशवर कहता है कि परिवार चर्च सेवकाई से अधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि हमारे जीवन में उसका मुख्य लक्ष्य हमें यीशु की तरह विकसित करना है। यह किसी भी चीज़ से अधिक महत्वपूर्ण है जो एक पादरी सेवकाई में परमेशवर के लिए कर सकता है। यहां तक कि दुनिया में सबसे अच्छा चर्च होने से कुछ भी नहीं होगा यदि हम हम आपने कहने और करने में अधिक मसीह जैसे नहीं बन रहे हैं। एक पादरी को उस समय आपना बेशर्त प्यार दिखाने के लिए खुद को बलिदान करना पड़ता है, जब उसे अपनी पत्नी को उसे दुखी करने पर उसे क्षमा करना पड़ता है, जब वह उसकी ज़रूरतों को पहल देता है तो वह यीशु की तरह बनना सीख रहा होता है। ये बातें हमारे विवाहों में सीखी जानी चाहिए ताकि हम इन्हें अपनी सेवकाई में लागू कर सकें। हम ये अपनी पत्नी के साथ आपने रिश्ते में सीखते हैं और इसलिए यीशु की तरह बन जाते हैं।

जिस तरह से आप अपने परिवार के साथ व्यवहार करते हैं, उसी तरह आप कलीसिया के साथ व्यवहार करेंगे। यदि आप घर पर बॉस या नियंत्रण कर रहे हैं, तो आप चर्च में वैसे ही होंगे। यदि जो आप जानते हैं कि सही है उसे करने के बजाय, डर के कारण दूसरों के सामने झुक जाते हैं, तो आप कलीसिया में भी ऐसा ही करेंगे। यदि आप उस समय क्रोधित हो जाते हैं जब काम आपकी इच्छानुसार नहीं होते हैं, तो आप कलीसिया में भी उसी तरह प्रतिक्रिया देंगे।

परमेशवर यह भी कहता है कि पत्नी एक पुरुष का इतना हिस्सा है कि जब वह अपनी पत्नी के साथ प्रेम से पेश आता है तो वह स्वयं के साथ ही प्रेम से पेश आता है (इफिसियों 5:28)। वह जितनी मजबूत,

अधिक परिपक्व मसीही होगी, पति के लिए उतना ही बेहतर होगा, इसलिए उसे बढ़ने में मदद करने से पति को बहुत लाभ होता है।

साथ ही, अपनी पत्नी से ऐसा प्रेम करना जैसे यीशु आप से प्रेम करता है, यह आपको मसीह के जैसा अधिक बनने में सहायता करता है (इफिसियों 5:26-27)। पति यीशु की तरह अधिक बढ़ता है क्योंकि वह अपनी पत्नी के साथ वैसा ही व्यवहार करता है जैसा परमेशवर चाहता है। पतरस कहता है कि यदि एक पति अपनी पत्नी के साथ वैसा व्यवहार नहीं कर रहा है जैसा उसे करना चाहिए, तो उसकी प्रार्थनाओं में रुकावट आएगी (1 पतरस 3:7)। अगर आपके और आपकी पत्नी के बीच सही माहौल नहीं हैं तो वे आपके और परमेशवर के साथ भी सही नहीं होगा। बहुत से पुरुष अब आध्यात्मिक रूप से नहीं बढ़ रहे हैं क्योंकि वे अपनी पत्नियों से प्रेम करने का प्रयास नहीं कर रहे हैं जैसे यीशु उनसे प्रेम करता हैं। उन वर्षों के दौरान जब अब्राहाम आपने आप को सारा से अधिक प्राथमिकता दे रहा था , वह परमेशवर की बरकतों या वादों का अनुभव नहीं कर रहा था, वह परमेशवर के लिए वेदीयों का निर्माण नहीं कर रहा था जैसा वह करता था,और वह आध्यात्मिक रूप से विकसित नहीं हो रहा था।

यदि आपकी पत्नी आध्यात्मिक रूप से विकसित नहीं हो रही है, तो आप यह नहीं कह सकते कि वह आपको रोक रही है, क्योंकि आप उसे आगे बढ़ने में मदद करने के लिए जिम्मेदार हैं। अगर वह नहीं बढ़ रही है, तो आपको खुद को देखना चाहिए और कि आप उसके साथ कैसा व्यवहार करते हैं। उसके साथ वैसा ही व्यवहार करें जैसा यीशु उसे फिर से बढ़ने में मदद करने के लिए करेगा।

परमेशवर ने मुझे एक अद्‌भुत पत्नी से आशिश्त कीया है नहीं तो मैं आज जहां हूं वहां नहीं होता। मैं जितना लम्बे समय से उससे विवाहित जीवन में हूँ, उतनी ही मैं उसकी एक अच्छे व्यक्ति के रूप से सराहना करता हूँ और उतना ही अधिक मैं इस तरह के विशेष उपहार के लिए परमेशवर का धन्यवाद करता हूँ। मेरे जीवन और सेवकाई में उसका पर्दे के पीछे का काम और विश्वास अमूल्य है। वह मेरी सबसे बड़ी प्रार्थना सहयोगी/ समर्थक हैं। उसके माध्यम से, मैंने अपने लिए परमेशवर के बेशर्त प्रेम के बारे में सीखा है; क्योंकि मैंने देखा है कि यह मेरे लिए उसके प्यार में दिखाई देता है। मैं समझता हूं कि परमेशवर क्षमा कर सकता हैं और करेगा , क्योंकि उसने इसका बार बार उदाहरण दिया है। मैं उसकी विश्वासयोग्यता पर बेहतर भरोसा कर सकता हूं क्योंकि मैं देख रहा हूं कि यह उसके जीवन में है। कभी-कभी हम सोचते हैं कि अगर हम अपने साथियों और परिवारों की ज़रूरतों के लिए सहयोग नहीं देते होते तो हम जीवन में और अधिक हासिल कर सकते थे। हम उनके द्वारा लिए गए समय पर नाराजगी कर सकते हैं। यह सच नहीं है। हमारी पत्नियाँ हमारी सबसे महत्वपूर्ण सेवकाई हैं। उसकी जरूरतों को पहले पूरा करना सीखना मुझे मेरी सेवकाई से दूर नहीं ले जाता, बल्कि मुझे परिपक्व करके इसे समृद्ध करता है। मैं जो कुछ भी उसे देता हूँ वो कई गुना बढ कर मेरे पास वापस आ जाता है । किसी को खुद के पहले रखने को सीखना आसान नहीं है, लेकिन विवाह और सेवकाई में यह अनिवार्य रहा है। मैंने जीवन में जो मुख्य सबक सीखा है और जो जीवन में मैंने सबसे बड़ी आध्यात्मिक और भावनात्मक वृद्धि का अनुभव कीया है, वह मेरी शादी के माध्यम से हुआ है। हालात हमेशा आसान या सही नहीं रहे हैं, और वे अभी भी नहीं हैं। परमेशवर हमारी अपूर्णताओं का उपयोग मुझे नम्रता, सेवा, क्षमाप्रार्थी होने, क्षमा करने और क्षमा स्वीकार करने के बारे में सिखाने के लिए करता है। ये बातें किसी किताब से नहीं, जीवन से ही सीखी जा सकती हैं।

जब भी आप दो विपरीत लोगों को साथ लेते हैं और उन्हें एक साथ रखते हैं तो संघर्ष होगा। नर और मादा विपरीत हैं। हमारे व्यक्तित्व भी अक्सर विपरीत होते हैं। हम में से प्रत्येक में एक पूरी तरह से सक्रिय पाप स्भाव जोड़ें, और यह आपके पास संघर्ष के लिए एक निश्चित नुस्खा होगा । जीवन, प्रेम और विकास के

प्रमुख सबक जो मैंने सीखे हैं, वे मेरी शादी और परिवार के माध्यम से आए हैं, न कि मेरी सेवकाई से। मेरे लिए एक अच्छे पति और पिता की तुलना में एक अच्छा पादरी बनना आसान है। अन्य लोगों को प्रभावित करना आसान होता है, उन्हें मुझसे उतनी आवश्यकता नहीं होती है, और मैं उन्हें सुरक्षित दूरी पर रख सकता हूं। मेरी पत्नी और बच्चों के बारे में इनमें से कोई भी लागु नहीं होता ।

मैं इस बात से हैरान हूं कि कैसे मैं और मेरी पत्नी रोजाना प्यार में और गहरे होते जा रहे हैं, कैसे हम एक-दूसरे का आनंद लेते हैं, और कैसे हम एक साथ बंधे हैं। हम कई खोजें और यादें साझा करते हैं। हमारा सबसे बड़ा दर्द है, कि हम एक दूसरे का कारण बनते हैं; लेकिन आज तक यही हमारी सबसे बड़ी खुशियाँ के लिए भी हैं। और आनंद की मात्र दुख की मात्र से कहीं अधिक है। मैं जितना बड़ा होता जाता हूं, जीवन और सेवकाई में उतना ही गहराई से आगे चला जाता हूं, उतना ही मुझे एहसास होता है कि एक अच्छी पत्नी का मूल्य माणिक से कहीं अधिक होता है। और एक पत्नी का अच्छा पति भी ऐसा ही होता है (सभोपदेशक 31:10-12, 30-31; 1 पतरस 3:7)।

पत्नी की खातिर परमेशवर चाहता है कि पुरुष अपनी खातिर ही नहीं एक प्यार करने वाला पति बनें; बल्कि अपनी पत्नियों के लिए भी। पतियों का बेशर्त प्यार एक सुरक्षित बुनियाद प्रदान करता है जिसपे महिलाओं को पत्नियों और मसीहीओं के रूप में विकसित करने की आवश्यकता होती है।

उन्हें अपने पति के प्रेम में सुरक्षित महसूस करने की आवश्यकता है जैसे वे यीशु के प्रेम में करती हैं। इसकी आवश्यकता है ताकि वे आपने आपको को और अपने पूरे भरोसे को आपने पति को दे सकें। परमेशवर पत्नियों को अपने पतियों से प्यार करने के लिए नहीं कहता हैं क्योंकि यह उनहे स्वाभाविक रूप से आता है। एक आदमी के लिए प्यार करना और उसे दिखाना बहुत मुश्किल है, इसलिए परमेशवर इसकी केवल पतियों की आज्ञा देते हैं।

पतरस कहता है कि हमें अपनी पत्नियों के साथ समझदारी से रहना है क्योंकि वे 'कमजोर' साथी हैं (1 पतरस 3:7)। इसका मतलब है कि हम उनकी रक्षा करने और उनका चरवाहा बनने के लिए जिम्मेदार हैं। हमें कठिन निर्णय लेने हैं लेकिन इन बातों पर उनसे बात करें और सबसे पहले उनकी सलाह और राय सुनें। क्या आप एक महिला बनना चाहेंगे ? क्या आप अपनी पत्नी के साथ, उनके साथ जगह साँझा करने में इच्छुक होंगे? शायद नहीं। हम जानते हैं कि जीवन में उनकी भूमिका आसान नहीं है, इसलिए हमें इसे आसान बनाने के लिए हर संभव प्रयास करना चाहिए। उसे प्रोत्साहित करें, उसे धन्यवाद दें, उसके लिए प्रार्थना करें और घर पर और दूसरों के सामने उसकी तारीफ करें।

पादरियों को आसानी से परमेशवर के कार्य में व्यस्त होने और अपने परिवारों की लापरवाही करने के लिए लुभाया जा सकता है। अन्य लोगों की मदद करते समय, उनकी प्रशंसा की जाती है और उनकी ओर ध्यान दिया जाता है। घर में हमेशा ऐसा नहीं होता। उनकी पत्नियाँ जानती हैं कि वे वास्तव में कैसे हैं क्योंकि वे हर समय उनके साथ रहती हैं, और कभी-कभी वे अपने परिवारों में यीशु के अच्छे उदाहरण नहीं होते हैं। एक पादरी की पत्नी को उसके चर्च के सदस्यों से भी ज्यादा उसकी जरूरत होती है। आपकी पत्नी के पास हमेशा यदि कोई पादरी होगा तो वो केवल आप है। वह जीवन भर आपके साथ रहेगी। अन्य लोग आपके चर्च में आ सकते हैं और जा सकते हैं लेकिन वह हमेशा आपके लिए रहेगी। यही एक कारण है कि परमेशवर कहता है कि यदि कोई पुरुष एक अच्छा पति और पिता नहीं हो सकता है तो वह एक अच्छा पादरी नहीं होगा (1 तीमुथियुस 3:4-5)।

एक पत्नी के लिए शिकायत करना बहुत कठिन हो सकता है जब उसका पति परमेशवर की सेवा करने और दूसरों की मदद करने में व्यस्त हो। यदि कोई पुरुष कई घंटे टीवी देखने या सोने में व्यस्त रहता हो,

तो वह आपने प्रति उसे उसकी जिम्मेदारी की याद दिला सकती है, लेकिन चूंकि वह परमेशवर की सेवा कर रहा है, इसलिए उसे नहीं लगता कि वह शिकायत कर सकती है। अक्सर कई पासबान इसका फायदा उठाते हैं और अपने परिवारों की तुलना में दूसरों की सेवा करने में अधिक समय व्यतीत करते हैं। परमेशवर पादरियों से यह उम्मीद नहीं करता है। परमेशवर उनसे यह उम्मीद करता है कि वे अपनी पत्नियों को अपनी पहली भेड़ बनायें और अपनी सेवकाई के लिए उसकी लापरवाही न करें।

पुराने नियम में, पति अपनी पत्नी की जरूरतों को पूरा करने के लिए जिम्मेदार था। वास्तव में, व्यवस्था ने कहा कि यदि उसने ऐसा नहीं कीया, तो वह उसे छोड़ने के लिए स्वतंत्र थी (निर्गमन 21:10-11)। एक पति अपनी पत्नी की ज़रूरतों को पूरा करे इसके बारे में परमेशवर बहुत गंभीर है। यदि वह कानून आपके निवास स्थान पर लागू होता, तो क्याआपकी पत्नी छोड़ना चाहेगी? क्या वह केवल इसलिए वहां है क्योंकि वह छोड़ नहीं सकती? एक महिला के लिए यह महसूस करना भयानक है कि वह अपने पति के साथ खुश होने के बजाय उसके साथ फंदे में फंसी महसूस करे। क्या आप चाहते हैं कि आपकी बेटी की शादी ऐसी हो?

दूसरों की खातिर परमेशवर चाहता है कि हम अपनी पत्नियों को अपने लिए, उनके लिए और दूसरों के लिए भी बलिदानी प्रेम दिखाएं। संसार को हमारे लिए आपने प्रेम को दिखने के लिए का परमेशवर का चुना हुआ तरीका, मसीह की दुल्हन के लिए, विवाह के माध्यम से है (इफिसियों 5:22-33; 1 पतरस 3:1-7)। एक धर्मी विवाह दुनिया के लिए आपका सबसे बड़ा गवाह है - एक पति जो यीशु की कलीसिया के लिए बेशर्त और बलिदानी प्यार को दर्शाता है और उसका प्यार विश्वास में उसके प्रति समर्पण को दर्शाता है। इसकी विशेष रूप से उन जगहों पर जरूरत है जहां महिलाओं को पुरुषों के बराबर नहीं माना जाता है। पादरियों के परिवारों को उस अंतर को प्रतिबिंबित करना चाहिए जो यीशु ने अपने आसपास की दुनिया में, अन्य मसीहीयों और उनके बच्चों के लिए कीया है। इस तरह से उनके बच्चे जानेंगे कि एक धर्मी विवाह कैसा होना चाहिए ताकि वे ऐसे पति और पत्नी बन सकें जिनकी परमेशवर उनसे उम्मीद करता है।

आपके लोगों के लिए यह जानना महत्वपूर्ण है कि आपकी पत्नी आपकी सबसे महत्वपूर्ण प्राथमिकता है, चर्च से भी ज्यादा। यह अन्य पतियों के लिए अपनी पत्नियों को पहल पर रखने के लिए उदाहरण स्थापित करता है। यह छोटे लड़कों को सिखाता है कि उनकी पत्नियों को पहल पर आना चाहिए, और इससे महिलाओं और लड़कियों को पता चलता है कि वे योग्य हैं और अपने पति के जीवन में प्रथम होने की उम्मीद कर सकती हैं। यह आपके अपने बच्चों के लिए भी एक बहुत ही महत्वपूर्ण उदाहरण है।

चर्च की स्थापना से बहुत पहले, पाप के प्रवेश करने से पहले ही परमेशवर ने विवाह की स्थापना कर दी थी। चर्च केवल आपके परिवारों जितना ही मजबूत हो सकता है। काश कि परमेशवर मजबूत परिवारों के माध्यम से पतियों को मजबूत चर्चों के लिए अगुवाई करने में मदद करें।

ग. बलिदानी प्रेम कैसे दिखाएं

बलिदानी प्रेम वह है जिसकी परमेशवर आज्ञा देता है, लेकिन हम यह कैसे करें? बहुत से पुरुषों ने अपने पिता को अपनी मां के प्रति इस तरह का प्यार दिखाते नहीं देखा है, जबकि हो सकता वह ऐसा करना चाहते हों परन्तु, यह नहीं जानते थे कि कैसे दिखाएँ । बलिदानी प्रेम दिखाने का क्या अर्थ है? यहां कुछ उदाहरण दिए गए हैं:

एक पत्नी को मदद करने की अनुमति देने द्वारा परमेशवर ने उत्पत्ति में कहा: फिर "परमेशवर यहोवाह ने कहा, 'आदमी के लिए अकेले रहना अच्छा नहीं है। मैं उसके लिए एक सहायक बनाऊँगा।'

... लेकिन आदम के लिए कोई उपयुक्त सहायक नहीं मिला" (उत्पत्ति 2:18, 20)। यह पहली बार है जब किसी चीज को 'अच्छा नहीं' कहा गया है। कोई पाप नहीं था, आदम परमेशवर के साथ चल सकता था और बात कर सकता था, लेकिन कुछ गायब था। मनुष्य को एक 'सहायक' की आवश्यकता थी। इस शब्द में एक 'पूर्ण' का विचार है, वो जो पुरुषों में कमी थी उसे पूरा कर सकता था, जो कोई "उसके खाली स्थान को भर सकता था।" वह सिर्फ भोजन परोसने, घर की सफाई करने और बच्चे पैदा करने वाली नहीं थी। जिस समय वह बनाई गई थी, उस समय उन चीजों को करने की आवश्यकता भी नहीं थी। उसे उसके लिए वही बनना था जो उसके खुद में कमी थी। ध्यान दें कि परमेशवर ने इस आवश्यकता को पूरा करने के लिए माता-पिता, बच्चों, एक चर्च, या एक पुरुष मित्र को नहीं बनाया है, केवल एक महिला (पत्नी) ही ऐसा कर सकती है। उसे एक दोस्त, साथी, सभी तरह से आदम के बराबर होना था। परमेशवर की दृष्टि में स्त्रियाँ अभी भी पुरुषों के बराबर हैं (गलातियों 3:28)।

कुछ लोग उत्पत्ति 2:18 और 20 में इस शब्द का अनुवाद 'उद्धारकर्ता' के रूप में भी करते हैं क्योंकि पत्नी पुरुष को अकेलेपन और खालीपन से बचाती है। आदम के पास परमेशवर था जो उसके साथ चल रहा था और उससे बात कर रहा था, लेकिन फिर भी कुछ कमी थी जो केवल एक महिला ही पूरी कर सकती थी। स्त्री को केवल पुरुष के लिए बनाया गया था (1 कुरिन्थियों 11:8-9) क्योंकि वह उसके बिना अधूरा है (नीतिवचन 31:11)। उसके पास वह है जो उसे चाहिए। वह भी उसके बिना अधूरी है। साथ में वे पूर्णता और तृप्ति पाते हैं।

बहुत से पुरुष आज वह सब नहीं हैं जो वे हो सकते हैं या पुरुष के रूप में बनना चाहते हैं क्योंकि वे अपनी पत्नियों को हीन मानते हैं और उन्हें अपने जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका नहीं निभाने देते हैं। ये लोग परमेशवर के दूसरे सबसे बड़े उपहार को ठुकरा रहे हैं। केवल यीशु ही पत्नी से बड़ा उपहार है। एक आदमी अपनी पत्नी को और खुद को प्यार दिखाता है, जब वह उसे अपने जीवन का हिस्सा बनने देता है। उसे सुझावों और मार्गदर्शन के लिए उसकी ओर मुड़ना चाहिए, उसके साथ अपने सपने और डर साझा करना चाहिए, उसके सबसे अच्छे दोस्त बनना चाहिए, और मिल कर जीवन के हर हालात का सामना करना चाहिए।

माता-पिता को छोड़कर और अपनी पत्नी के साथ जुड़ने के द्वारा परमेशवर तब उत्पत्ति 2:24 में कहता है, "इस कारण मनुष्य अपने माता-पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा, और वे एक तन हो जाएंगे।" यह इतना महत्वपूर्ण है कि यह बाइबल में चार बार लिखा हुआ है! यीशु ने इन्हीं शब्दों को उपयोग कीया (मत्ती 19:5-6) जैसा कि पौलुस ने दो बार कीया (इफिसियों 5:31 और 1 कुरिन्थियों 6:15-16)। यह पहली आज्ञा है जिसे परमेशवर बाइबल में विवाह के बारे देता है और इसे नज़रअंदाज़ नहीं कीया जा सकता है। जब तक इस आदेश का पालन नहीं कीया जाता है, तब तक विवाह के बारे में बाइबल जो कुछ कहती है, वह काम नहीं करेगा।

"पिता और माता को छोड़ दो" का अर्थ है त्यागना, छोड़ना, अपने माता-पिता पर निर्भर नहीं रहना। एक आदमी अभी भी अपने माता-पिता का सम्मान और मदद कर सकता है, लेकिन उसकी पहली जिम्मेदारी अपनी पत्नी के प्रति होनी चाहिए। सलाह, मार्गदर्शन, समर्थन, प्रोत्साहन और दोस्ती के लिए उसे अपने माता-पिता पर निर्भर नहीं होना चाहिए। अपने माता-पिता के लिए ये चीजें प्रदान करने से पहले उसकी समय की, जोड़ीदार की और मदद के लिए सब जरूरतों को पूरा करना चाहिए। यह इतना महत्वपूर्ण है कि परमेशवर ने शुरुआत में ही आदम और हव्वा को यह बताया था, इससे पहले कि वहां कोई बच्चा या माता-पिता थे।

इस आज्ञा का दूसरा भाग है <u>"अपनी पत्नी से जुड़ जाना।"</u> इस्तेमाल किए गए शब्द का अर्थ है "चिपके रहना, पास रखना" और जिस तरह से त्वचा हमारे शरीर से चिपकी रहती है, उसका उपयोग कीया जाता है। एक पति और पत्नी को एक साथ रहने का यही तरीका है - मृत्यु तक पूर्ण प्रतिबद्धता। एक आदमी ऐसा नहीं कर सकता है अगर उसके माता-पिता का उसके जीवन में शीर्ष स्थान है, तो परमेशवर कहता हैं कि पुरुषों को अपने माता-पिता को छोड़ देना चाहिए और उन्हें अपनी पत्नी के साथ तबदील करना चाहिए। उसे दोस्ती, मदद और समर्थन के लिए पूरी तरह से अपनी पत्नी पर निर्भर रहना चाहिए। इसका मतलब यह नहीं है कि उसके पास अन्य दोस्त नहीं हो सकते हैं, लेकिन वह इन चीजों के लिए सबसे पहला और मुख्य जन है।

जब एक आदमी अपने माता-पिता को छोड़ देता है और अपनी पत्नी से जुड़ जाता है, तो परिणाम यह होता है कि वे "एक तन" हो जाते हैं - वे दो अलग-अलग शरीरों में रहते हुए भी एक व्यक्ति होते हैं। वे दोनों एक दूसरे को पूर्ण करते हैं क्योंकि कोई भी एक जन दूसरे के बिना पूर्ण नहीं है। अलग-अलग होने पर वह असफल हो जाएंगे, लेकिन जब वे प्यार में एक होते हैं, तो एक ताकत होती है जो उन दोनों को पकड़ लेती है चाहे कुछ भी हो जाए।

संयुक्त राज्य अमेरिका के पश्चिमी भाग में, लाल लकड़ी के पेड़ हैं जो 100 मीटर तक बढ़ते हैं। इनका व्यास 8 मीटर जितना बड़ा हो सकता है। उनके बारे में असामान्य बात यह है कि उनके पास बहुत छोटी, उथली जड़ प्रणाली है। जड़ें अपने आप पेड़ को सहारा नहीं दे सकतीं। यह जल्दी से गिर जाएगा। जड़ों को क्या करना चाहिए, आस-पास के अन्य लाल पेड़ों की जड़ों के साथ मिलकर काम करना चाहिए। साथ में वे एक इकाई बनाते हैं, एक सुरक्षित जाल जहां प्रत्येक एक दूसरे को ऊपर रखता है। तेज हवाएं या तूफान आने पर भी वे मजबूत खड़े रहते हैं। वे 700 साल तक जीवित रहते हैं, कुछ तो 2,000 साल की उम्र तक भी पहुँच जाते हैं। इस तरह पति-पत्नी को एक-दूसरे की ज़रूरत होती है मज़बूत खड़े रहने के लिए, जीवन के तूफ़ानों की चाहत करें । यदि आपकी पत्नी के पास वह नहीं है, तो आप दोनों संघर्ष करेंगे। उसे विकसित करना उसके लिए बेशर्त, बलिदानी प्रेम दिखाने का एक तरीका है।

एक धर्मी अगुवा होने के द्वारा पुरुषों को अपने परिवारों का अगुवा होना चाहिए (उत्पत्ति 3:16; 1 तीमुथियुस 3:4-5; 1 कुरिन्थियों 11:3; इफिसियों 5:23) परन्तु अगुवाई प्रेम में की जानी चाहिए। इस तरह का अगुवाई तानाशाही नहीं है। यह आत्म-केंद्रित नहीं है जहां पति को हर काम उसके तरीके से होता है। प्रेमपूर्ण अगुवाई का अर्थ है, वो करना जो आपकी पत्नियों और बच्चों के लिए सही और सर्वोत्तम है, चाहे वह आपके लिए कितना ही कठिन क्यों न हो।

सिर्फ इसलिए कि पुरुष आगुवा है इसका मतलब यह नहीं है कि वह महिला से श्रेष्ठ है। दोनों ही परमेशवर की दृष्टि में समान हैं (गलातियों 3:28; 1 पतरस 3:7 में 'संयुक्त वारिस')। जब आप किसी नियोक्ता के लिए काम करते हैं तो वह आपका बॉस होता है। इसका मतलब यह नहीं है कि वह एक श्रेष्ठ इंसान है, इसका मतलब केवल यह है कि उसकी जिम्मेदारी आपसे अलग है। किसी को नेतृत्व करना चाहिए और दूसरों को अनुसरण करना है नहीं तो कुछ भी पूरा नहीं होगा। परमेशवर की दृष्टि में सभी समान मूल्य के हैं। हालाँकि, पतियों को यह याद रखना चाहिए। आपकी पत्नी आपके लिए एक समान व्यक्ति है। उसके पास, निभाने के लिए, एक अलग भूमिका है, लेकिन वह किसी भी तरह से परमेशवर की दृष्टि में या एक व्यक्ति के रूप में आपसे कम नहीं है (गलातियों 3:28)।

पौलुस कहता है कि एक पति को अपने परिवार का "प्रबंधन" करना होता है (1 तीमुथियुस 3:4-5)। एक प्रबंधक यह सुनिश्चित करने के लिए कार्यो की देखरेख करता है कि वे किए जाते हैं। वह सब कुछ नहीं करता है। वह प्रतिनिधि देता है और दूसरों को वह करने देता है जिसमें जो अच्छे हैं। एक स्कूल के

प्रधानाचार्य की तरह, वह लक्ष्य निर्धारित करता है, संसाधन प्रदान करता है, जहां आवश्यक हो मदद करता है, और यह सब देखता है। चर्च के लिए पादरी ऐसा ही होता है, और पति को अपनी पत्नी के साथ भी ऐसा ही होना चाहिए। पतियों को सब कुछ नहीं करना है, लेकिन अपनी पत्नियों को अपना काम करने देना है और अपने कौशल और आध्यात्मिक उपहारों का उपयोग करने देना चाहिए । फिर भी वह नेतृत्व, मुखियापन प्रदान करता है, इसलिए वे एक साथ सही दिशा में काम कर रहे हैं। जब पति नेतृत्व करते हैं, तो वो पूरा करना होता है जो परिवार के लिए सबसे अच्छा क्या है, न कि केवल जो उसके अपने लिए सबसे अच्छा क्या है। पादरी ना तो स्वयं की सेवा करने के लिए कलीसिया की अगुवाई करता है, ना ही स्कूल का प्रधानाध्यापक आपने लिए । अगुवा पति आपने पूरे परिवार के लिए जो सबसे अच्छा होता है उसे करते है, चाहे यह उनके लिए सबसे आसान हो या नहीं। पति अपने परिवार की अगुवाई यीशु की सेवा करने के लिए करता हैं, जैसे यहोशू ने अपने परिवार का नेतृत्व कीया (यहोशू 24:15)। इसे धर्मी तरीके से करने से आपका आपकी पत्नी के प्रति प्रेम का पता चलता है और वह सुरक्षित महसूस करती है।

अपनी पत्नी का सेवक होने के द्वारा पासबानो को सेवक होना चाहिए (लूका 22:25-26; मत्ती 20:26-28)। यदि आपकी पत्नी आपकी नंबर एक भेड़ है, तो वह पहली व्यक्ति है जिसकी आप को सेवा करनी हैं। आपको प्यार से सेवा करनी चाहिए, ना सिर्फ इसलिए कि आपको ऐसे करना पड़ रहा है । आपको सेवा अपने आप को सम्मान देने के लिए नहीं, बल्कि अपनी पत्नी के सम्मान के लिए करनी है। सेवा करने का अर्थ है वह करना जो उसके लिए सही और सर्वोत्तम है, चाहे दूसरे कुछ भी सोचें। यीशु ने क्रूस पर जाकर और आपके पापों का भुगतान करके अपना सम्मान त्याग दिया। पतियों को अपनी पत्नियों की सेवा करने के लिए सब कुछ त्यागने के लिए कहा जाता है। यीशु का अनुसरण करने वाले मसीही विश्वासियों को एक सेवक होना चाहिए क्योंकि वह एक सेवक था (लूका 22:25-26; मत्ती 20:26-28)। वास्तव में, यीशु ने दास से अधिक शक्तिशाली शब्द का प्रयोग क्या , उसने "दास" के लिए बंदक शब्द का प्रयोग क्या (मत्ती 20:27)। यह शब्द "बंधन में दास"(गुलाम) (उत्पत्ति 9:25; 24:9; निर्गमन 21:5; मत्ती 10:24; लूका 17:7) को संदर्भित करता है, जो किसी और के स्वामित्व में था और उसके पास स्वयं का कोई अधिकार नहीं था। वह केवल वही करने के लिए जीता था जो उसका स्वामी चाहता था। यीशु के बंधक दास के रूप में, पति उसकी आज्ञा का पालन करने के लिए जीवित रहते हैं, और एक मुख्य आज्ञा जो वह आपको देता है वह है अपनी पत्नियों की सेवा करना जैसे वह आपकी सेवा करता है। यह एक मानसिक व्यवहार है, न कि केवल आपके शरीरक रूप से की जाने वाली क्रियाएं। यह प्यार से, बिना शर्त प्यार से कीया जाना चाहिए, जैसा कि उसने आपके लिए कीया है। यह यूसुफ की तरह कीया जाना चाहिए जैसे उसने प्यार और बलिदान से मरियम की सेवा की। पुरुषों को अपनी पत्नियों के पैर धोने चाहिए, जैसे यीशु ने शिष्यों के पैर धोए और हमें भी ऐसा ही करने के लिए कहा (यूहन्ना 13:1-17)। अपनी पत्नी के पैर धोने का अर्थ है उसके पाप और अपरिपूर्णता में उसकी सेवा करना और उसे इससे मुक्त होने में मदद करना और वह जो कुछ भी सोचती और करती है, उसमें यीशु की तरह विकसित होने में ।

चेलों के पैर धोने के बाद यीशु ने चेलों से कहा कि जाओ और वैसा ही करो (यूहन्ना 13:14)। एक पति अपनी पत्नी के पैर धोता है जब वह उसकी सेवा करता है। आप सोच सकते हैं कि इसमें बहुत अधिक समय लगता है, लेकिन परमेशवर हमसे ऐसा करने की उम्मीद करता है। परमेशवर हम में से प्रत्येक को एक दिन में 24 घंटे देता है, और वह हमें 25 घंटे काम नहीं देता है। हमारे पास जितना समय है उससे अधिक वह हमें नहीं देता। समस्या यह है कि हम अक्सर दूसरे कामों में इतने व्यस्त रहते हैं कि हमारे पास वह करने का समय नहीं होता जिसकी परमेशवर हम से उम्मीद करता है। वह हमसे उम्मीद करता है कि हम अपनी पत्नियों की सेवा करके प्रेममय नेतृत्व दिखाएं।

अपनी पत्नी की ज़रूरतों को पूरा करने के द्वारा पति पत्नियों की ज़रूरतों को पूरा करके उनकी सेवा करते हैं (इफिसियों 5:25-28)। क्या आप जानते हैं कि आपकी पत्नी की क्या जरूरतें हैं? यदि आप नहीं जानते हैं, तो बेहतर होगा कि आप उससे पूछें, और ध्यान से सुनें। जो आप जानते नहीं उसको कैसे कर सकते हैं ? जिस काम में उन्हें मदद की जरूरत है परुष उस काम में उनकी मदद करके उनकी सेवा करते हैं। आपको उनसे बात करने और सुनने में समय व्यतीत करना है। आपको उन्हें इतनी अच्छी तरह से जानना है कि आप उनकी चिंताओं और बोझों, उनके डर और खुशियों को समझने लगे। आपको यह बताने में सक्षम होना चाहिए कि कब उन्हें कुछ परेशान कर रहा है, और प्यार में उन तक पहुंचें। आप उनके समय का ध्यान रखते हुए सेवा करते हैं ना कि इस उम्मीद से कि वे हमेशा आपके और आपकी सेवकाई के लिए कार्य करती रहेंगी । आप उन्हें अपना प्यार और सम्मान दिखा कर उनकी सेवा करते हैं। आप उन्हें रिश्तेदारों, चर्च के लोगों और यहां तक कि अपने बच्चों की आलोचना से बचाकर उनकी सेवा करते हैं। आप यह जानकर उनकी सेवा करते हैं कि उन्हें कैसे खुशी मिलती है और वे चीजें प्रदान करते हैं जब आप से हो सकता हैं । आप उनके साथ मौज-मस्ती करने और उनकी पसंद की खास बातें करने के लिए समय निकालकर उनकी सेवा करते हैं। दूसरे शब्दों में, आप उनकी सेवा वैसे ही करते हैं जैसे यीशु आपकी सेवा करता है।

आपको पारिवारिक आराधना और प्रार्थना में अगुवाई करके, उनसे आध्यात्मिक बातों के बारे में बात करके, बाइबल पढ़कर, और आपने बच्चों को परमेशवर का अनुसरण करने के लिए अगुवाई करके उनकी आध्यात्मिक आवश्यकताओं को पूरा करना चाहिए। आप उनकी भावनात्मक ज़रूरतों को तब पूरा करते हैं जब आप बेशर्त, बलिदानी प्यार दिखाते हैं, जब आप उनके साथ बात करते हैं और उनकी बात सुनते हैं, जब आप उन चीजों की सराहना करते हैं जो उनसे संबंधित होती हैं, जब आप उन्हें अपने प्यार और उनके लिए सराहना के बारे में बताते हैं, और जब आप उन्हें बेहतर समझने की कोशिश करते हैं। आप उनकी बौद्धिक आवश्यकता को तब पूरा करते हैं जब हम उन चीजों/मामलो पर उनकी राय पूछते हैं, उनसे सीखते हैं, जो चीजें आप सीख रहे हैं उन्हें उनके साथ साझा करते हैं और उन्हें नई चीजें सीखने की अनुमति देते हैं जिनमे उनकी रुचि हैं। आप परिवार को खिलाने और कपड़े पहनाने में सक्षम होने के लिए पर्याप्त आय प्रदान करके और शारीरिक रूप से प्यार दिखाते हुए कि आप उनके साथ कैसा व्यवहार करते हैं, उनकी शारीरिक जरूरतों को पूरा करते हैं।

अपनी पत्नीयों की यौन रुपी ज़रूरतों को अपनी जरूरतों से पहले पूरा करने के द्वारा पौलूस यह भी स्पष्ट रूप से कहता है कि पति अपनी की पत्नियों यौन रूपी ज़रूरतों को पूरा करके उनकी सेवा करते हैं (1 कुरिन्थियों 7:2-5)। कुछ पुरुषों को नहीं लगता कि उनकी पत्नियों की यौन रुपी ज़रूरतें हैं; या नहीं जानते हैं कि वे क्या हैं। लेकिन परमेशवर की आज्ञा है कि हम अपनी यौन रुपी जरूरतों को पूरा करने से पहले उनकी जरूरतों को पूरा करने पर ध्यान दे । क्या आप ऐसा कर रहे हैं?

अपनी पत्नीयों की रक्षा करने के द्वारा पतरस कहता है कि आपकी पत्नी "कमजोर साथी है: (1 पतरस 3:7)। इसलिए आपको उनकी रक्षा करनी चाहिए और कठिन शारीरिक श्रम में उनकी मदद करनी चाहिए। आपको ऐसे अगुवा होने चाहिए जिन पर वे अच्छे निर्णय लेने के लिए भरोसा कर सकें (जैसे यूसुफ, अब्राहाम की तरह नहीं); परिवार की आध्यात्मिक रूप से अगुवाई करने के लिए, उन्हें आलोचना से बचाने के लिए या उन लोगों से जो उन्हें शब्दों या कार्यों से दुखी करेंगे। आपको जरूरत पड़ने पर अपने बच्चों को अनुशासित करके और इसे सुनिश्चित करके अपने बच्चों से उनकी रक्षा करनी चाहिए कि वे अपनी माताओं से कैसे बात करते और उनके साथ कैसा व्यवहार करते हैं। बेटे कभी-कभी अपने पिता के उदाहरण से सीखते हैं कि उन्हें महिलाओं के साथ सम्मानित व्यवहार करना जरूरी नहीं है ।

यीशु हमेशा, जब भी उनका किसी महिला के साथ कोई वास्ता पड़ा तो उनके प्रति बहुत सम्मानित था। हमें उसके जैसा होना चाहिए।

अपने बच्चों की रक्षा करके और उनकी मदद करके जब आप अपने बच्चों की रक्षा करते हैं तो आप अपनी पत्नी को भी प्यार दिखा रहे होते हैं क्योंकि यदि आवश्यक हो, तो अपने जीवन की कीमत पर भी अपने बच्चों की रक्षा करना उसमें भरा हुया है । चूंकि वह हमेशा उनकी रक्षा करने में सक्षम नहीं होती है, इसलिए वह चाहती है कि आप उसके लिए ऐसा करें। अपने बच्चों के लिए एक अच्छा पिता बनना अपनी पत्नी को यह दिखाने का एक शानदार तरीका है कि आप उससे प्यार करते हैं।

विचारशील होने के द्वारा पतरस पतियों को आज्ञा देता है कि वे अपनी पत्नियों का ध्यान रखें (1 पतरस 3:7)। क्या आपकी पत्नी कहेगी कि आप उसका ख्याल रखते हैं? जब आपने उसे शादी की थी, तब से अब क्या आप उसके प्रति कम या अधिक विचारशील हैं? वह क्या कहेगी कि आपको अधिक विचारशील होने के लिए कुछ करने की आवश्यकता है?

विचारशील होने का मतलब है कि आप जीवन को उसके दृष्टिकोण से देखते है, न कि केवल अपने दृष्टिकोण से। इसका मतलब है कि आप उसकी जरूरतों के प्रति उतना ही संवेदनशील होना सीखते हैं जितना कि आप अपनी जरूरतों के प्रति। इसका अर्थ है हर दिन उसके लिए प्रार्थना करना; और प्रार्थना करते हुए आप उसे बेहतर प्यार करेंगे और समझेंगे। विचारशील होने का अर्थ है जब वह चाहती है तो उसे बात करने दें और बिना रुकावट के ध्यान दें। इसका मतलब है आप उसके साथ जो व्यवहार करते हैं और जो आप उससे कहते हैं, इसमें नम्र होना। अगर आपको कुछ ठीक करना है जो वह कर रही है, तो उसे प्यार से करें; "प्रेम से सच बोलो" (इफिसियों 4:15)। उससे ऐसे स्वर में बात करें, जिसका , यदि आप चाहते हैं, कि दूसरे लोग उपयोग करें अगर वे आपको दरुस्त कर रहे हैं तो । विचारशील होने का मतलब है कि आप जीवन में अपनी निराशाओं और समस्याओं को उस पर नहीं लायेगें । आप उस पर गुस्सा ना करें। जो वह करने में सक्षम है आप उससे अधिक की उम्मीद नहीं करते, और आप उसे उन चीजों के लिए दोष नहीं देते जो उसके नियंत्रण में नहीं हैं। विचारशील होने का मतलब है कि जो वह आपके लिए करती है उसके लिए आप उसकी प्रशंसा करते हैं, और उसका धन्यवाद करते हैं, उसे बताएं कि आप उससे प्यार करते हैं, उसे प्रोत्साहित करते हैं, दूसरों के लिए उसके बारे में डींग मारते हैं और हर दिन उसकी तारीफ करते हैं। ये काम करें और जैसे-जैसे आपका प्यार और गहरा होता जाएगा आपकी शादी खूबसूरत होगी।

आदर दिखाने के द्वारा पतरस यह भी कहता है कि पतियों को अपनी पत्नियों के साथ आदर का व्यवहार करना चाहिए (1 पतरस 3:7)। यह विचार करने के समान ही है लेकिन उसके बारे में अत्यधिक सोचने के विचार को जोड़ता है। उसका जीवन अब आप पर केंद्रित है, उस पर नहीं। क्या वह एक अच्छी पत्नी बनने की कोशिश करती है? क्या वह आपसे प्यार करती है और आपके जीवन को बेहतर बनाना चाहती है? क्या वह आपके बच्चों के लिए एक अच्छी, प्यार करने वाली माँ है? क्या वह आपकी सेवकाई में आपका समर्थन करती है? क्या वह आपके लिए और आपके साथ प्रार्थना करती है?

अगर परमेशवर अचानक उसे अपने घर स्वर्ग ले गए उसके बिना आपका जीवन कैसे भिन होगा ? इन सवालों के जवाब देने से आपको उसकी सराहना करने में मदद मिलेगी कि वह कौन है और वह क्या करती है। क्या आप उसे जीवन में सर्वश्रेष्ठ करने की कोशिश करने के लिए उसका सम्मान करते हैं? यदि हां, तो क्या आप उसे बताते हैं और दिखाते हैं कि आप उसका सम्मान करते हैं कि वह कैसे रहती है और आपकी और दूसरों की सेवा करती है? यह उसको सम्मान दिखाने का मध्यम होगा।

क्या आप उसके समय और उसकी भावनाओं का सम्मान करते हैं? क्या आप संवेदनशील हैं जब वह संघर्ष कर रही होती है और दुःख से हो कर गुजर रही होती है? क्या आप मामलों में उसकी राय लेते हैं और उसके सुझावों को ध्यान से सुनते हैं। कोई भी पति जो अपनी पत्नी की राय पर विचार नहीं करता है, वह मूर्ख है, क्योंकि महिलाओं के पास एक ज्ञान और अंतर्दृष्टि है जिसकी पुरुषों में अक्सर कमी होती है। क्या आपको उस पर भरोसा है और उस पर यकीन करते है? ये सभी सम्मानजनक होने के तरीके हैं।

उसे क्षमा करने द्वारा एक अच्छे पति को शीघ्र क्षमा करने वाला होना चाहिए। विवाह में क्षमा करना कठिन हो सकता है क्योंकि कभी-कभी हम अपने साथी द्वारा बुरी तरह से आहत हो सकते हैं। एक दूसरे को दोष देना आसान है, जैसे आदम ने हव्वा को दोष दिया, और फिर हव्वा ने सर्प को दोष दिया (उत्पत्ति 3:12-13)। बहुत सी बातो को क्षमा करके भूल जाने के बिना विवाहत जीवन विकास नहीं करेगा । परमेशवर सभी मसीहीयों को क्षमा करने की आज्ञा देता है (इफिसियों 4:26-27, 31-32; 1 कुरिन्थियों 13:5)। यूसुफ की तरह, पुरुषों को अपनी पत्नियों द्वारा आहत होते ही क्षमा करना चाहिए, इससे पहले कि पत्नी माफी मांगे, यहां तक कि दिन में 490 से अधिक बार (मत्ती 18:21-35)। अपनी पत्नी को क्षमा करने का मतलब यह नहीं है कि उसने जो कीया वह ठीक था, या कि उससे दुख नहीं पंहुचा, या उसने यह जानबूज कर नहीं कीया था, या कि वह ऐसा फिर से नहीं करेगी, या कि आप इसे भूल रहे हैं। उन चीजों में से कोई भी क्षमा का हिस्सा नहीं है। क्षमा का अर्थ है कि उसने आपको जो दर्द दिया है, उसके लिए उसे पीड़ित करने के किसी भी अधिकार को त्याग देना। आप दुख को बर्दाश्त करेंगे और उसे चोट नहीं पहुंचाएंगे या किसी अन्य तरीके से उस बदले में दुखी होने की प्रतीक्षा नहीं करेंगे। इस प्रकार यीशु हमें क्षमा करता है। उसने क्रूस पर हमारे दुख देने को बर्दाश्त कीया और सब कुछ आपने ऊपर ले लिया। उसने हमें हमारे पापों के लिए पीड़ित होते देखने का अधिकार छोड़ दिया (रोमियों 8:1)। इससे पहले कि हम कभी माफी मांगें या अपने पाप को स्वीकार करें, उसने यह सब हमेशा के लिए ले लिया। वह हमारे लिए क्षमा का उदाहरण है। क्या आप अपनी पत्नी को वैसे ही क्षमा करते हैं जैसे यीशु ने आपको क्षमा कीया है?

अक्सर, जब लोग शादी करते हैं, तो पहले पहले उन्हें लगता है कि उनका साथी अद्भुत है, लगभग पूर्ण है। वे एक-दूसरे को खुश करने की पूरी कोशिश करते हैं और वही करते हैं जो एक-दूसरे को प्रभावित करता है। वे अपनी कमजोरियों और पापों को एक दूसरे से छिपाते हैं। वे अपना सारा समय और ऊर्जा एक अच्छी शादी बनाने में लगाते हैं। लेकिन जैसे-जैसे समय बीतता है, वे एक-दूसरे को गलती से या जान-बूझकर चोट पहुँचाते हैं। वे सेवकाई, काम और बच्चों में व्यस्त हो जाते हैं, और वे एक-दूसरे के प्रति उतना अच्छा बनने की कोशिश नहीं करते जितना पहले करते थे। वे अलग हो जाते हैं और दो अलग-अलग वयस्क बन जाते है जो एक ही घर में रहते हैं, एक साथ काम करते हैं, लेकिन उनके पास वह दोस्ती या प्यार नहीं है जिसकी वह उम्मीद करते थे। दूसरे को अद्भुत समझने के बजाय, वे केवल एक-दूसरे के दोषों के बारे में सोचते हैं और हर समय उन पर ध्यान केंद्रित करते हैं। वे उन अच्छी चीजों को भूल जाते हैं जिनकी उन्होंने सबसे पहले सराहना की होती है । बहुत बातो को क्षमा करने के बिना, एक विवाह अंत तक इस रट में रहेगा। आप ऐसे कई जोड़ों को जानते हैं जो इस तरह से हैं। वे झगड़ते हैं, वे एक-दूसरे को चुनते हैं, वे आलोचना करने के लिए चीजों की तलाश करते हैं, और वे प्यार नहीं दिखाते हैं। नीतिवचन की पुस्तक इस बारे में बात करती है कि यह दोनों लोगों के लिए कितना संघर्ष भरा है (18:21:25:24; आदि)। बेशर्त, मुफ्त, पूर्ण क्षमा ही इस दुख से बाहर निकलने का एकमात्र तरीका है।

निःसंदेह, यदि आपने बिना किसी अर्थ के गलती से भी अपनी पत्नी को ठेस पहुंचाई है, तो आपको प्रार्थना करने या आराधना करने या किसी भी तरह से सेवा करने से पहले उससे माफी मांगनी चाहिए (मत्ती 5:23-24)।

अपनी पत्नी और परिवार के लिए प्रार्थना करने द्वारा अपनी पत्नी को बेशर्त, बलिदानी प्रेम दिखाने का एक और तरीका है, उसके लिए और अपने बच्चों के लिए प्रार्थना करना। शैतान आपको और आपकी कलीसिया को नष्ट करने के लिए आपके परिवार पर हमला करेगा (1 पतरस 5:7), इसलिए प्रतिदिन उनके चारों ओर परमेशवर की सुरक्षा के लिए प्रार्थना करें। अय्यूब एक धर्मी पति और पिता था (अय्यूब 1:8)। हर दिन वह अपने बच्चों के बड़े होने और आपने जीवन में से अलग हो जाने के बाद भी परमेशवर से अपने परिवार की रक्षा के लिए प्रार्थना करता था (अय्यूब 1:4-5, 10)। उसने सचमुच परमेशवर से अपने परिवार के चारों ओर एक दीवार, एक मजबूत बाड़ा लगाने के लिए कहा, जो शैतान और उसके राक्षसों को बाहर रखे। धर्मी पतियों का परमेशवर के साथ घनिष्ठ व्यक्तिगत संबंध होना चाहिए, उसके वचन को पढ़ना और प्रतिदिन प्रार्थना करना चाहिए । उन्हें आध्यात्मिक रूप से विकसित होना चाहिए। इसके एक हिस्से में आपकी पत्नी और बच्चों के वर्तमान और उनके भविष्य के लिए प्रार्थना करना शामिल है। यह समय का सही उपयोग और बलिदानी प्रेम को दर्शाता है।

अपनी पत्नी और परिवार के साथ प्रार्थना करने द्वारा एक व्यक्ति को अपने परिवार को आध्यात्मिक रूप से आगे बढ़ाना चाहिए, और इस के लिए एक तरीका है उनके साथ प्रार्थना करना। यह पुरुषों को स्वयं को विनम्र करने और अपने साथियों के लिए अपना दिल खोलने के लिए मजबूर करता है, इस प्रकार यह सुनिश्चित करता है कि उनके बीच कोई बड़ी या छोटी समस्या नहीं है (1 पतरस 3:7)। "दो या तीन" की प्रार्थनाएँ अतिरिक्त महत्वपूर्ण हैं (मत्ती 18:20)। एक विशेष विश्वास और निकटता, एक आध्यात्मिक बंधन, एक पति और पत्नी के बीच तब होता है जब वे एक साथ प्रार्थना करते हैं। यह पति को नम्र करता है और पत्नी को आपने पति की अगुवाई में सुरक्षित महसूस कराता है। यह परमेशवर के साथ और एक दूसरे के साथ दिन की शुरुआत करने का सबसे अच्छा तरीका है। सुनिश्चित करें कि आप ऐसा करने के लिए प्रत्येक दिन की शुरुआत में कुछ समय निकालें, चाहे आप कितने भी व्यस्त हो या कोई भी समस्या हो। ऐसा रोजाना करना यह सुनिश्चित करता है कि आपका प्यार और शादी विकास कर रही है ।

सबसे अच्छे दोस्त बन्ने द्वारा सबसे अच्छी शादियाँ वे होती हैं जिनमें पति और पत्नी एक दूसरे के सबसे अच्छे दोस्त होते हैं। इसलिए परमेशवर ने हव्वा को आदम को दिया था । परमेशवर ने पति और पत्नियों को सबसे अच्छे दोस्त बनने के लिए, एक दूसरे के खाली स्थानों को भरने के लिए बनाया (उत्पत्ति 2:18, 20)। सुलैमान और शूलामी (महिला) के बीच यह विवाह से पहले था (श्रेष्ठगीत 8:1; 4:9-12; 5:1)। दूसरी ओर, सम्सून और दलीला के बीच यौन संबंध के अलावा कोई संबंध नहीं था और यही उसे विनाश की ओर ले गया (न्यायियों 13-16)। एक अच्छी दोस्ती विकसित करने का मतलब है एक साथ बहुत समय बिताना। दोस्ती में बिताया यह समय शादी में आई कई समस्याओं से बचाता है और आहत भरे लम्हों को दूर कर देता है। शूलामी महिला के पास दुनिया के सबसे धनी और बुद्धिमान व्यक्ति, राजा सुलैमान होने के कारण वह कुछ भी ले सकती थी, लेकिन वह जो सबसे अधिक चाहती थी वह था उसका समय ,ताकि वे आपसी नजदीकी में बढ़ सकें और छोटी समस्याओं से बच सकें जो कल बड़ी समस्याओं में बदल सकती थी (श्रेष्ठगीत 2:15- 17)। परमेशवर ने अपनी व्यवस्था में लिखा है कि जब एक आदमी शादी करता है, तो वह एक साल के लिए घर से दूर नहीं जा सकता यहाँ तक की युद्ध में भी नहीं, ताकि वह उस समय का उपयोग, अपनी पत्नी के साथ शादी की एक अच्छी नींव विकसित करने के लिए, कर सके (व्यवस्थाविवरण 24:5)।

ये कुछ ऐसे तरीके हैं जिनसे एक आदमी अपनी पत्नी को बेशर्त, बलिदानी प्यार दिखा सकता है। शायद अन्य भी हैं। जब आप अपनी पत्नी के साथ ऐसा करने का प्रयास करेंगे तो परमेशवर आपकी अगुवाई करेगा।

घ. बलिदानी प्रेम कैसे पाएं

एक और महत्वपूर्ण विषय पर विचार करने की जरूरत है, जब हम पतियों के बारे में बात करते हैं कि उनके लिए परमेशवर का प्यार है – वह इसे कैसे प्राप्त कर सकते हैं? क्या हम सिर्फ इसे पाए होने का दिखावा करते हैं? यह कहाँ से आता है और हम इसे वास्तव में आपने अंदर कैसे रख सकते हैं ताकि हम इसे दिखा सकें? यहां बताया गया है कि हम जिस प्यार के बारे में बात कर रहे हैं उसे कैसे प्राप्त करें।

परमेशवर के साथ घनिष्ठ व्यक्तिगत संबंध बनाने द्वारा सुनिश्चित करें कि आपके जीवन में कोई पाप नहीं है, कि आप आध्यात्मिक रूप से बढ़ रहे हैं और आप जो कुछ भी कहते और करते हैं, उसमें आप परमेशवर की आज्ञाकारिता में जी रहे हैं। तब ही हमारे जीवन में उसकी शक्ति और मार्गदर्शन होगा।

आत्मा के फलों से भरे होने के द्वारा गलातियों 5:22-24 कहता है कि आत्मा का पहला फल प्रेम, "अगापे" प्रेम, परमेशवर का बेशर्त प्रेम । यह कुछ ऐसा है जिसे परमेशवर हम में उत्पन्न करता है जब हम उसकी आत्मा को आपने अन्दर कार्य करने देते हैं। यह ऐसा कुछ नहीं है जिसका हम अपने दम पर दिखावा कर सकते हैं। जब हमारे जीवन में पाप नहीं होते हैं और हम परमेशवर की आज्ञाकारिता में जी रहे होते हैं, जब हम हर दिन उसके साथ समय बिताते हैं और अपने सभी कार्यों से उसे प्रसन्न करने का प्रयास करते हैं, तो उसका पवित्र आत्मा हमें भर देता है और हमारे अन्दरआत्मा का फल उत्पन्न करता है आत्मा, प्रेम जो पहला और प्राथमिक फल है। हर दिन, परमेशवर से अपनी पत्नी के लिए वो बलिदानी प्यार देने के लिए कहें। उसे उस अंदाज़ में देखने के लिए मदद मांगे जैसे वह उसे देखता है और उससे प्यार करे जैसे वह उससे प्यार करता है – बेशर्त और बलिदानी प्यार । इस प्रकार का प्रेम केवल परमेशवर की ओर से आता है (1 यूहन्ना 4:7)। यह हमारे प्रति उनके प्रेम का प्रतिबिंब है। हमारी पत्नी के लिए यह प्रेम प्रत्येक दिन और अधिक बढ़ता जाता है जब हम परमेशवर को हमें इससे भरने देते हैं (1 थिस्सलुनीकियों 3:12; 4:9-10)।

यीशु के उदाहरण का अनुसरण करने द्वारा जब परमेशवर हमारी पत्नियों के लिए यह अलौकिक प्रेम हमारे हृदय में रखता है, तो हम इसका उपयोग कैसे करें? हम प्रेम दिखाने में यीशु के उदाहरण का अनुसरण करते हैं (मत्ती 10:24-25; यूहन्ना 13:1-17)। यह बहुत अच्छा है जब हम प्यार से पराजित महसूस करते हैं, और इसे दिखाना चाहते हैं, लेकिन कभी-कभी यह कठिन होता है या हमारा प्यार दिखाने का मन नहीं होता है तो भी हमें ऐसा करना चाहिए, क्योंकि यीशु ने हमारे लिए प्यार दिखाया, भले ही यह कठिन था, और उसका ऐसा करने का मन नहीं था, जब वह क्रूस पर चढ़ा (मरकुस 14:36; लूका 22:42)।

हम यीशु के उदाहरण को बहुत स्पष्ट रूप से देखते हैं कि उसने कुएँ पर महिला के साथ कैसा व्यवहार क्या (यूहन्ना 4)। यहाँ पर धर्मी पतियों के लिए यीशु की तरफ से कुछ सबक दिए गए हैं।

1) मसीह-समान पति इसे शुरू करते हैं (यूहन्ना 4:5-6)। यीशु उसके पास गया; उसने बात शुरू किये जाने की प्रतीक्षा नहीं की। पतियों को भी ऐसा ही करना चाहिए। जब कोई समस्या हो तो मेल-मिलाप करने के लिए पहुंचें, पहले माफी मांगें, हर स्थिति के लिए प्रार्थना का सुझाव दें, उसे प्रोत्साहित करें और उसे धन्यवाद दें। स्त्रियाँ उस पुरुष को प्रतिउत्तर देती हैं जो उन्हें सबसे पहल पर रखता है, जैसा मरियम ने यूसुफ के साथ क्या था। धर्मी स्त्रियाँ इससे सीख सकती हैं कि अपने पतियों को यीशु की तरह प्रतिउत्तर देने का महत्व क्या है।

2) मसीह -समान पत्नियाँ सेवा करती हैं (यूहन्ना 4:7-8)। स्त्री ने यीशु के लिए पानी लाने की पेशकश की; उसके पास एक नौकर जैसा दिल था, भले ही वह अभी तक मसीही नहीं थी। यीशु ने उसे अपनी सेवा

करने दी । महिलाएं यह महसूस करना चाहती हैं कि वह किसी की जरूरत है, केवल एक इस्तेमाल की जाने वाली चीज नहीं । अपने पति की सेवा करना यीशु की सेवा करने के समान है। जब वह अपने पति की सेवा करती है, तो वह यीशु की सेवा करती है।

3) मसीह - समान पति अपनी पत्नियों को वैसे ही स्वीकार करते हैं जैसी वे हैं (यूहन्ना 4:9-10)। उन दिनों में यहूदी शिक्षक कभी भी सामरिया नहीं जाते थे, कभी किसी स्त्री से बात नहीं करते थे, यहाँ तक कि एक यहूदी को भी नहीं देखते थे। इसके अलावा, अगर वह यहूदी नहीं होती, तो वे उसके घड़े का पानी कभी नहीं छूते या पानी नहीं पीते, और कभी भी किसी अनैतिक महिला से उनका कोई लेना-देना नहीं होता। फिर भी यीशु ने उसे वैसे ही स्वीकार कीया जैसे वह थी, उसके सारे पाप और लज्जा के साथ, और वैसे भी अपने बेशर्त प्यार से उसे प्यार कीया । उसने उसकी तुलना दूसरों से नहीं की या उसे बदलने की उम्मीद नहीं की ताकि वह उससे प्यार कर सके। उसने उसके दिल की तरफ देखा, ना कि उसने जो कीया था उसकी तरफ । पतियों को अपनी पत्नियों के प्रति कैसा होना चाहिए, इसके लिए यह क्या ही बढ़िया उदाहरण है।

4) मसीह-समान पत्नियाँ मसीह -समान पुरुषों पर भरोसा करती हैं (यूहन्ना 4:11-15)। उसे अन्य पुरुषों ने चोट पहुंचाई थी और उसे यह जानने की जरूरत थी कि क्या वह भरोसा कर सकती है कि यीशु उसे चोट नहीं पहुंचाएगा। पत्नियों को यह जानने की जरूरत है कि वह अपने पतियों पर भरोसा कर सकती हैं कि उनके पति वो करते है जो उन के लिए सबसे अच्छा है,वे यूसुफ की तरह। पतियों को अपनी पत्नियों को यह दिखाने के लिए हर संभव प्रयास करना चाहिए कि वे उन पर भरोसा कर सकती हैं। उन्हें उनकी राय सुननी चाहिए। असफल होने पर उन्हें माफी मांगनी चाहिए। उन्हें अगली बार बेहतर करना सीखना चाहिए।

5) मसीह -समान पति कोमल होते हैं (यूहन्ना 4:16-18)। यीशु ने उस स्त्री से उसके पति के बारे में पूछा, यह जानते हुए कि उसके पाँच थे और अब वह किसी ऐसे व्यक्ति के साथ रह रही है जिससे उसकी शादी नहीं हुई थी। उसने उसे उलझन में नहीं डाला, उसे शर्मिंदा नहीं कीया , उसकी आलोचना नहीं की, या उसे डांटा नहीं । वह जानती थी कि वह गलत थी और उसने इसके लिए आपने आप में दोषी महसूस कीया वह उसके साथ बहुत कोमल था, उसके साथ एक "निर्बल पात्र" की तरह व्यवहार करता था (1 पतरस 3:7)। पत्नी के प्रति संवेदनशील रहें। उसकी मदद करो, उसके साथ अच्छा व्यवहार करो, उसका सम्मान करो, चाहे उसने कुछ भी कीया हो। यही यीशु ने इस महिला के लिए और हमारे लिए भी कीया।

6) मसीह-समान पत्नियाँ अपने मन से चलती हैं, अपनी भावनाओं से नहीं (यूहन्ना 4:19-25)। महिला ने अपने अपराध बोध को बातचीत का अंत नहीं होने दिया। उसने अपनी भावनाओं को हालातो पर नहीं जाने दिया, बल्कि अपने दिमाग में विचारों के अनुसार बातचीत में आगे बड़ी और मसीहा के बारे में बात करने लगी । पतियों को इस बात की जानकारी होनी चाहिए कि महिलाएं भावुक हो सकती हैं और अपनी भावनाओं से आगे बढ़ सकती हैं। उन्हें उन भावनाओं का सम्मान करना चाहिए, लेकिन पुरुषों और महिलाओं दोनों को यह महसूस करना चाहिए कि सिर्फ इसलिए कि एक महिला को कुछ लगता है इसका मतलब यह नहीं है कि यह सच है। आदम को फल देने में हव्वा ने बहुत सही महसूस क्या (1 तीमुथियुस 2:13-15)। पतियों को, यीशु की तरह, उनकी भावनाओं का सम्मान करना चाहिए लेकिन उनसे डरना नहीं चाहिए। वह पत्नियों के क्रोध या भय को वह करने से नहीं रोकने दे सकते जो परमेशवर ने उन्हें पुरष और अगुवों के रूप में करने को रखता है । उन्हें धैर्य रखना चाहिए और फिर भी वही करना चाहिए जो सभी के लिए सबसे अच्छा हो।

7) मसीह-समान पति और पत्नी एक दूसरे की और दूसरों की सेवा करते हैं (यूहन्ना 4:26-29)। यीशु ने उसे बताया कि वह कौन है, और उसने अपने गाँव के अन्य लोगों को बताया। तब यीशु कुछ देर रुककर उन्हें उपदेश देता रहा। धर्मी पति और पत्नियाँ आध्यात्मिक रूप से एक दूसरे की मदद करते हैं और एक साथ मिलकर दूसरों की मदद करते हैं।

आप यीशु को एक धर्मी व्यक्ति के रूप में कैसे मापते हैं? यदि कोई ऐसा क्षेत्र है जिस पर आपको उसके उदाहरण का अनुसरण करने के लिए कार्य करने की आवश्यकता है, तो कृपया ऐसा करें!

निष्कर्ष

अब आप जानते हैं कि परमेशवर पुरषों से क्या और कैसे करने की उम्मीद करता है। यीशु के उदाहरण का अनुसरण करते हुए और आत्मा के फल के साथ, पुरुषों को अपनी पत्नियों के लिए बलिदानी , बेशर्त प्रेम दिखाना होगा जैसे यीशु सभी के लिए करता हैं। अब आइए देखें कि परमेशवर पत्नियों से क्या उम्मीद करता है। पतियों, आपके लिए अगला अध्याय पढ़ना बहुत जरूरी है। यह सिर्फ आपकी पत्नियों के लिए नहीं है।

मेरी पत्नी की तरफ से:

यीशु ने उत्तर दिया, "'अपने परमेशवर यहोवा से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी शक्ति और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रखो' [क]; और, 'अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख'' (लूका 10:27)।

यीशु इसे सरल बनाता है। आपका पहला और नजदीकी पड़ोसी आपका परिवार है और विशेष रूप से आपकी पत्नी

मरकुस 8:36 कहता है, "मनुष्य को सारे जगत को प्राप्त करने और अपने प्राण को खो देने से क्या लाभ?"

मुझे यह भी कहना अच्छा लगता है, "एक आदमी को क्या फ़ायदा है कि वह सभी लोगों की मदद और सेवा करे और अपने परिवार की सेवा और मदद ना करे?" जब आपकी पत्नी और बच्चों को अपने पति और पिता की आवश्यकता हो तो दूसरों को आशीर्वाद देने का कोई फ़ायदा नहीं है।

इसे सरल रखें। इसे सही रखें।

नैन्सी श्मोयर

II. पत्नियां - विनम्र भरोसा

मुख्य विचार: परमेशवर चाहता है कि पत्नियाँ अपने पतियों के लिए उसी तरह आज्ञाकारी विश्वास रखें जैसे वे यीशु के लिए रखते हैं।

हमने देखा है कि परमेशवर पुरुषों से उम्मीद करता है कि वे अपनी पत्नियों के लिए बलिदानी प्रेम रखें जैसा यीशु उनके लिए रखता है । अब हम देखेंगे कि परमेशवर पत्नियों से क्या उम्मीद करता है। उन्हें अपने पतियों के लिए आज्ञाकारी भरोसा रखना है, ठीक वैसे ही जैसे वे यीशु के लिए करते हैं। पत्नियों, यदि आप इसे पढ़ रही हैं, लेकिन पतियों के लिए पहला अध्याय नहीं पढ़ा है, तो कृपया इसे पहले पढ़ें ताकि आप इसे बेहतर ढंग से समझ सकें।

क. विनम्र भरोसा क्या है?

विनम्र भरोसा परिभाषित पौलूस और पतरस दोनों पत्नियों को अपने पतियों के अधीन रहने का आदेश देते हैं। "हे पत्नियों, अपने पतियों के आधीन रहो, मानो प्रभु के अधीन हो। पति पत्नी का सिर है जैसे मसीह कलीसिया का सिर है, उसकी देह , जिसका वह उद्धारकर्ता है। अब जैसे कलीसिया मसीह के अधीन होती है, वैसे ही पत्नियाँ भी हर बात में अपने अपने आपने पति के आधीन रहें" (इफिसियों 5:22-24)। "हे पत्नियों, इसी प्रकार अपने अपने पति के आधीन रहो, कि यदि उन में से कोई वचन की प्रतीति ना करता हो , तो अपनी पत्नियों के चालचलन के द्वारा बिना बोले ही जीत लिया जाए" (1 पतरस 3:1)।

अधीन करने के लिए यूनानी शब्द एक ऐसे शब्द से निकला है जिसका अर्थ है अधिकार का जवाब देना। महिला एक उत्तरदय है। अगर उसके साथ प्यार और नम्रता का व्यवहार क्या जाता है, तो वह उसी तरह से जवाब देगी। यदि उसके साथ कठोर व्यवहार क्या जाता है, तो वह बंद हो जाएगी और कठोर हो जाएगी। पौलूस कहता है कि पत्नियों को अपने पतियों के प्रति उसी प्रकार से अधीन होना (जवाब देना) है जैसे वे यीशु के प्रति करती हैं (इफिसियों 5:22)। पुरष को अगुवाई करने और प्रदान करने की आवश्यकता के साथ बनाया गया है, और परमेशवर उसे यही करने की भी आज्ञा देता है। ऐसा करने के लिए, बेशक महिला को उसे अगुवाई करने की अनुमति देनी होगी। इसलिए उसे अधीन होने का आदेश दिया गया है। महिलाओं को बेशर्त प्यार और सुरक्षा की जरूरत है। इसलिए पुरुषों को आज्ञा दी जाती है कि वे अपनी पत्नियों से बलिदानी प्रेम करें।

संयुक्त राज्य में महिलाओं को "अधीन " शब्द पसंद नहीं है क्योंकि इसका उपयोग पुरुषों द्वारा महिलाओं को नियंत्रित करने और अपने लिए उपयोग करने के लिए कीया गया है। ऐसा लगता है कि एक महिला के पास कोई अधिकार नहीं है और पति तानाशाह है, और एक महिला वही करने को पाबंद/मजबूर है जो वह (पति) चाहता है। मामला यह नहीं है, क्योंकि पहले पति को अपनी पत्नी के लिए बेशर्त, बलिदानी प्रेम दिखाने की आवश्यकता होती है, जैसा कि यूसुफ ने मरियम को दिखाया था। इसके जवाब में, पत्नी ने आपने आप को विश्वास में उसके अधीन करना है, जैसा कि मरियम ने यूसुफ के प्रति कीया था। पति को स्त्री के लिए यीशु के समान होना है, उसे (पत्नी को) उसके(पति के) अधीन होना है जैसे मसीही यीशु के प्रति समर्पण करते है। जब पति उसे अपने प्यार में सुरक्षित महसूस कराता है, तो उसके लिए भरोसा करना और उसके अधीन होना बहुत आसान होता है, अब्राहाम और सारा के साथ ऐसा नहीं था ।

अपने पति को प्रतिउतर दे पति के प्रति एक पत्नी की विनम्र प्रतिक्रिया मिट्टी में एक बीज की तरह है। बीज को बढ़ने के लिए पानी और पोषण की आवश्यकता होती है। जितना बेहतर प्रदान क्या जाएगा, उतना ही बेहतर बीज बढ़ेगा। एन दोनों में से किसी के बिना, पौधे के लिए स्वस्थ और मजबूत बनना बहुत

कठिन है जैसा उसे होना चाहिए। शादी में ऐसा ही होता है। पति द्वारा किए गए बेशर्त, बलिदानी प्रेम से स्त्री के विनम्र विश्वास का बीज विकसित हो सकता है। जितना अधिक वह इसे दिखाता है, उतना ही बेहतर वह उस पर भरोसा कर सकती है और उस पर प्रतिक्रिया दे सकती है। ऐसा करना उसकी जिम्मेदारी है, लेकिन पति उसके लिए इसे करना अधिक कठिन या अधिक आसान बना देता है। पतियों, यदि आपकी पत्नीयों को आपके प्रति समर्पण और आप पर भरोसा करने में कठिनाई हो रही है, तो हो सकता है ऐसा इसलिए हो रहा है क्योंकि आपने उसे साबित नहीं कीया है कि आप उसे और उसकी जरूरतों को, आपने आप से और अपनी जरूरतों की तुलना में, पहल देते है ? क्या आपने खुद को उसके भरोसे के लायक साबित कीया है, या आप बस उससे इसकी मांग कर रहे हैं? क्या आप बिना पानी या पोषण के उसके बढ़ने की उम्मीद कर रहे हैं?

क्या होगा अगर एक महिला अपने पति पर भरोसा नहीं कर सकती है? जबकि मरियम के लिए यूसुफ पर भरोसा करना आसान था, सारा के लिए अब्राहाम पर भरोसा करना आसान नहीं था। उसने उसके प्रति समर्पण नहीं कीया, और वह पाप था। परमेशवर उम्मीद करता है कि एक महिला अपने पति के लिए विनम्र भरोसा रखे, भले ही वह उसकी जरूरतों को पहल ना देता हो क्योंकि जब वह अपने पति पर भरोसा करती है, तो वह वास्तव में यीशु पर भरोसा करती है। यह वास्तव में परमेशवर है जिसके प्रति एक पत्नी समर्पण करती है, क्योंकि वह सभी कार्यों का प्रभारी है जो उसका पति करता है । परमेशवर एक महिला की देखभाल करने का वादा करता है जब उसके पास ऐसा करने वाला पति नहीं होता है, या यदि वह विवाहित है, लेकिन उसका पति उसके साथ यीशु जैसा व्यवहार नहीं करता है। वह एक आत्मिक विधवा है, और परमेशवर उसकी रक्षा करेगा (यिर्मयाह 49:11)। अपने पति की बात मानकर, एक स्त्री परमेशवर की आज्ञा मान रही है, उस पर भरोसा करके, वह परमेशवर पर भरोसा करती है, और वह वादा करता है कि वह उसके साथ रहेगा और उसकी देखभाल करेगा, भले ही उसका पति ना करे। इसलिए जब आप अपने पति के प्रति समर्पण करती हैं तो जानो कि आप वास्तव में परमेशवर के प्रति समर्पण कर रही हैं। उस पर भरोसा करें, भले ही जब आप अपने पति पर भरोसा ना कर सकें। समर्पण करना और भरोसा करना कठिन हो सकता है, लेकिन परमेशवर इसका उपयोग आपके पति के हृदय को बदलने के लिए करेगा। सारा ने तब तक इंतजार नहीं क्या कि अब्राहाम उसे प्राथमिकता देना शुरू करे जो उसे भरोसा करने को विविश करे, उसने आखिरकार वैसे भी उसके प्रति समर्पण करना सीख लिया, और परमेशवर ने अब्राहाम को बदलने के लिए इसका इस्तेमाल क्या (1 पतरस 3:1-6)।

अपने पति के अधीन रहो, सभी पुरुषो के नहीं बाइबल कहती है कि एक पत्नी को अपने पति के अधीन होना है। यह नहीं कहता है कि सभी महिलाओं को सभी पुरुषों के अधीन होना चाहिए, यह सच नहीं है। यह एक प्रेमपूर्ण विवाह संबंध का हिस्सा है जहां पुरुष अगुवाई करता है और महिला प्रतिक्रिया करती है। महिलाओं को सभी पुरुषों के अधीन नहीं होना है, लेकिन उन्हें अपने आपने पति के अधीन होना है। एक पुरुष एक अविवाहित महिला या किसी अन्य पुरुष की पत्नी को उसके अधीन होने और उसकी सेवा करने की उम्मीद नहीं कर सकता। परमेशवर की दृष्टि में, उन्हें समान रूप से एक दूसरे की सेवा करनी है (इफिसियों 5:21; गलातियों 3:28)। एक महिला हर पुरुष को समर्पण नहीं करती या प्रतिउतर नहीं देती है। वह केवल पति के लिए है, पति पत्नी के रिश्ते में।

समर्प्रपण " जैसे प्रभु को" "हे पत्नियों, अपने अपने पति के आधीन रहो, मानो जैसे प्रभु के आधीन हो " (इफिसियों 5:22)। वह छोटा सा वाक्यांश, "जैसा कि प्रभु के," इसके अर्थ भाव से बहुत बड़ा फर्क पड़ता है। जबकि अमेरिका में पत्नियों को समर्पण करने का विचार पसंद नहीं है, भारत जैसे अन्य देशों में, महिलाओं को छोटी लड़किआं होने की उम्र से सिखाया जाता है कि जीवन में उनकी भूमिका अपने

पति की बात मानने और जो कुछ भी वह कहते हैं वह करना है। कुछ लोग सोचते हैं कि उनका पति उनसे बेहतर है, और वे जो कहते हैं उसे करने से ही उन्हें जीवन में सम्मान मिलता है। वे अक्सर ना मानने से डरती हैं और बहुत जल्दी वही करती हैं जो उन्हें करना चाहिए लेकिन अपने दिल में प्यार से नहीं और ना ही भरोसे से। परमेशवर कहता हैं कि वह यह नहीं चाहता कि महिलाएं केवल बाहरी रूप से आज्ञा मानें, लेकिन अपने हृदय से जैसे वे यीशु की आज्ञा का पालन करती हैं। एक मसीही डर के कारण यीशु को प्रतिउतर नहीं देता बल्कि प्यार और विश्वास से प्रतिउतर देता है। इस आज्ञा का पालन करने के लिए, मसीही पत्नियों को अपने पतियों को उसी तरह से प्रतिउतर देना चाहिए: स्वेच्छा से, प्यार से, स्वतंत्र रूप से और भरपूर विश्वास में । यह वह अंदरूनी सुंदरता है जिसके बारे में पतरस ने 1 पतरस 3:1-6 में बात की थी और यह बाहरी सुंदरता की तुलना में परमेशवर की दृष्टि में कहीं अधिक महत्वपूर्ण है।

क्या होगा अगर एक पति चाहता है कि उसकी पत्नी पाप करे? इफिसियों 5:24 कहता है कि पत्नियों को "हर बात में अपने पति के अधीन रहना चाहिए ।" लेकिन तब क्या होगा यदि एक पति चाहता है कि उसकी पत्नी कुछ ऐसा करे जो पाप है, तब उसे आपने पति की आज्ञा माननी चाहिए या परमेशवर की? इफिसियों 5:24 कहता है कि "सब कुछ" का अर्थ है "जैसा कि कलीसिया हर बात में मसीह के अधीन है"। यीशु कभी भी मसीहीओं से नहीं चाहेगा की वह पाप करे । वह केवल यह चाहता है कि हम वही करें जो हमारे लिए अच्छा है। अपनी पत्नी पर एक पति का अगुवाई -अधिकार सीहीओं पर मसीह के अगुवाई-अधिकार के समान होना चाहिए। वास्तव में, परमेशवर चाहता है कि पतिगण अपनी पत्नियों के साथ वैसा ही व्यवहार करें जैसा वह चाहता है। केवल यही एक चीज है जिसमे पतिगण अपनी पत्नियों से समर्पण करने की उम्मीद कर सकते हैं - वे अपने परिवार की अगुवाई करते यीशु का प्रतिनिधित्व करते हैं।

परमेशवर ने व्यक्ति को प्रत्यायुक्त अधिकार दिया, उसे अपनी पत्नी के जीवन में उसका प्रतिनिधित्व करने का अधिकार दिया। जब वह अब परमेशवर का प्रतिनिधित्व नहीं करता, बल्कि परमेशवर का विरोध करता है, तो उसके पास उसके ऊपर परमेशवर का अधिकार नहीं रह जाता है। परमेशवर पुरुष को यह अधिकार नहीं देता कि वह किसी स्त्री को अवज्ञा की अनुमति दे। सेना में एक सैनिक को अपने कमांडिंग ऑफिसर के आदेशों का पालन करना चाहिए क्योंकि उस व्यक्ति ने सरकार से प्रत्ययुक्त अधिकार अधिकार प्राप्त क्या है। लेकिन अगर कमांडर सैनिक को सरकार के खिलाफ कुछ करने का आदेश देता है, तो सैनिक अब आज्ञा मानने के लिए बाध्य नहीं है क्योंकि कमांडर ने अपने अधिकार से बाहर कदम रखा है। यही बात उन पतियों के बारे में भी सच है जो परमेशवर के विरुद्ध अपने अधिकार का प्रयोग करते हैं।

माता-पिता का बच्चों पर अधिकार होता है, और बच्चों को अपने माता-पिता की आज्ञा माननी होती है क्योंकि माता-पिता को अपने जीवन में परमेशवर का प्रतिनिधित्व करना होता है। जब माता-पिता अब परमेशवर का प्रतिनिधित्व नहीं करते हैं, तो बच्चे को इसके बजाय परमेशवर की आज्ञा का पालन करना चुनना चाहिए। एक सरकार के बारे में भी यही सच है, जिसे परमेशवर के लिए शासन करना है, उसके विरुद्ध नहीं। परमेशवर सरकारों को उसका विरोध करने का अधिकार नहीं देता है। हमें उन सरकारों का पालन नहीं करना है जो हमसे पाप करना चाहती हैं। जब सरकार ने प्रचार ना करने की आज्ञा दी, तो पतरस ने कहा, "मनुष्यों की आज्ञा से बढ़कर परमेशवर की आज्ञा का पालन करना ही आवश्यक है" (प्रेरितों के काम 5:29)।

ऐसे समय आते हैं जब एक पत्नी को अपने पति के अधीन नहीं होना लाज़मी नहीं होता है, और यह वो समय है जब वह जो चाहता है वह पाप करे। मलिका वशती ने नैतिक कारणों से अपने पति की अवज्ञा की (एस्तेर 1)। वह उससे कुछ ऐसा करने के लिए कह रहा था जिसके लिए उसके पास उससे अनुरोध करने का कोई अधिकार नहीं था। सारा ने अब्राहाम के विचार के साथ समजौता कीया जब उसने उससे कहा कि वह उसकी बहन है, और उसे इसका परिणाम भी भुगतना पड़ा। सफीरा ने भी अपने पति के सामने समर्पण क्या और चर्च को दिए गए धन के बारे में झूठ बोला (प्रेरितों के काम 5:1-10)। वह भी पाप के लिए मर गई। उसे छूट नहीं थी क्योंकि उसका पति चाहता था कि वह ऐसा करे। हालाँकि, अबीगेल ने अपने पति का समर्थन नहीं कीया जब वह पाप में था, और परमेशवर ने उस कार्य का उपयोग कई लोगों की जान बचाने के लिए क्या (1 शमूएल 25)। जब कोई चाहता है कि हम पाप करें, तो मसीही होने के नाते हमें मनुष्यों की बजाये परमेशवर की आज्ञा का पालन करना चाहिए (प्रेरितों के काम 5:29)।

समर्पण का मतलब यह नहीं है कि आपको चुप रहना है अगर आपका पति कुछ ऐसा कर रहा है जो आपको लगता है कि गलत है, तो आपको एक मसीही साथी के रूप में उससे प्यार से बात करने का पूरा अधिकार है (इफिसियों 4:15)। भले ही यह पाप ना हो, लेकिन केवल विचारों का अंतर हो, जब तक आप इसे प्रेमपूर्ण, सम्मानजनक तरीके से करते हैं, तब तक आपको उसे अपनी राय से अवगत कराना चाहिए। बस एक बार कहो, घबरायों मत (नीतिवचन 25:24)। परमेशवर से प्रार्थना करे कि वह आपके पति को सद्‌बुद्धि दे। हो सकता है कि आपको जो सही लगे, शायद वह सही ना हो। जहां आवश्यक हो, परमेशवर को उसे दोषी ठहराने दे। आप अपनी भावनाओं और जरूरतों को बता सकती हैं और अवश्य ही बता सकती हैं नहीं तो आपके पति को उनके बारे में पता नहीं चलेगा, लेकिन आपको इसे धीरे से और प्यार से करना चाहिए (इफिसियों 4:15; गलातियों 3:3-4)।

क्या होगा अगर एक पति अपनी पत्नी को पीटता है? परमेशवर तलाक से घृणा करता है (मलाकी 2:16), लेकिन यीशु ने स्वयं कहा कि उसने इसके लिए प्रावधान दिया क्योंकि विवाह में पाप के प्रभाव पड़ सकते हैं (मत्ती 19:3-9; मरकुस 10:4-9)। यह उस पत्नी की सुरक्षा के लिए प्रदान कीया गया था जिसे पूरी तरह से तग्गी हुई समजने को विवश कीया जाता था, अनचाही , या शारीरिक रूप से प्रताड़ित की जा चुकी। वह एक अधर्मी पति के क्रूर व्यवहार से मुक्त हो सकती है। पौलूस ने विवाह के बारे में शब्दों को इस सिद्धांत को बताते हुए जोड़ा कि "परमेशवर चाहता है कि हम एक विवाह में शांति से रहें" (1 कुरिन्थियों 7:5)। वह यह नहीं कहता कि तलाक ठीक है, लेकिन वह एक पत्नी को ऐसे पति से अलग होने की अनुमति देता है जो उसे या बच्चों को नुकसान पहुंचा रहा है। परमेशवर को एक पत्नी की आवश्यकता नहीं है कि वह एक ऐसे व्यक्ति के अधीन हो जो इतना स्पष्ट रूप से उसका प्रतिनिधित्व नहीं कर रहा है कि वह अपनी पत्नी के साथ कैसा व्यवहार करता है। अलग होने से वह और बच्चे सुरक्षित हो सकते है, और उम्मीद है कि उन्हें खोने से पति अपने पाप पर काबू पाने के उपाय करेगा। तलाक के संबंध में, यीशु ने कम से कम दो बार कहा कि यदि एक व्यक्ति यौन रूप से विश्वासघाती है तो विवाह को तोड़ा जा सकता है (मत्ती 5:31-32; 19:3-9; मरकुस 10:4-9)।

ख . विनम्र भरोसा क्यों रखे ?

यह समझना कि विनम्र भरोसे का क्या अर्थ है, महत्वपूर्ण है, लेकिन यह जानना भी महत्वपूर्ण है कि परमेशवर क्यों चाहता है कि महिलाये ऐसे करे। "समर्पण करो " एक आदेश है, यह कुछ ऐसा है जो लगातार कीया जाना है, ना कि केवल एक बार किये जाने वाली क्रिया। जिस तरह से यह बाइबल में लिखा गया है, उससे पता चलता है कि जो स्त्री समर्पण करती है, वह आपने आप को अधीन करने से

लाभ कमाती है। यह उसकी सर्वोत्तम भलाई के लिए है कि वह ऐसा करती है, ना कि केवल अपने पति के लिए। इनमें से कुछ लाभकारी क्या हैं?

पत्नी की खातिर जब एक पत्नी अपने पति को अगुवाई करने देने के द्वारा प्रतिउतर देती है तो वह अतीत में धर्मी महिलाओं के उदाहरण का अनुसरण कर रही होती है (1 पतरस 3:5) जिन्होंने परमेशवर की आज्ञा का पालन कीया । वह परमेशवर की आज्ञाकारिता और उसके लिए उसकी इच्छा के अनुसार जीवन व्यतीत रही है।

परमेशवर ने पुरुषों और महिलाओं को बहुत अलग बनाया। अधिकांश पुरुष तार्किक विचारधारी होते हैं जो जीवन में कार्यों को पूरा करने में रुचि रखते हैं। ज्यादातर महिलाएं अधिक भावनात्मिक महसूस करती हैं जो रिश्तों को प्राथमिकता पर रखती हैं। पुरुष कार्यों को पूरा करना चाहते हैं; महिलाओं को दूसरे लोगों के साथ समय बिताना अच्छा लगता है। महिलाएं पुरुषों की तुलना में ज्यादा बात करती हैं क्योंकि इसी के मध्यम से वे दूसरों से जुड़ती हैं। वे खुलें ख्यालों वाली हो सकती हैं, अपनी भावनाओं को साझा कर सकती हैं। पुरुष ऐसा कभी-कभार ही करते हैं। पुरुष अधिक संयमी होते हैं और अपनी भावनाए नहीं दिखाते हैं। पुरुषों को अगुवा और प्रदाता की अपनी भूमिका निभाने के लिए बनाया गया है। वे इन चीजों में अच्छे हैं। वे दूसरों की जरूरतों और भावनाओं के प्रति उतने संवेदनशील नहीं हैं; यह वही गुण है जिसमें महिलाएं अधिक अच्छी होती हैं। महिलाएं प्राकृतिक मां होती हैं। परमेशवर की दृष्टि में स्त्री और पुरुष दोनों समान मनुष्य हैं, भले ही परमेशवर ने उन्हें अलग-अलग भूमिकाएँ दी हैं । पुरुष परकी अगुवाई करने के लिए निर्णय लेने के लिए तार्किक रूप से देखता है, लेकिन महिला भावनात्मक रूप से अपने आसपास के लोगों की मदद करने के लिए उनकी जरूरतों को महसूस करती है। पुरुषों के समूह में महिलाओं की कोमलता और कोमल प्रेम गायब होता है। महिलाओं के समूह में आमतौर पर अगुवाई और नियंत्रण की आवश्यकता नहीं होती है। परमेशवर ने प्रत्येक को अपनी भूमिका के लिए बनाया है। इसलिए जब परमेशवर कहता है कि स्त्री को पुरुष के खाली स्थान को भरना है (उत्पत्ति 2:18, 20), तो वह प्रेम, भावना, संवेदनशीलता, नम्रता और ममता कौशल के बारे में बात कर रहा होता है जो वह उसके जीवन में लाती है (तीतुस 2:3-5)) वह उन खाली जगहों को भरती है। ऐसा करने से उसके आपने खाली स्थान भी भर जाते हैं। लेकिन उसे अगुवा नहीं बनना है, जो रक्षा और मार्गदर्शन करता है, उसके लिए उसकी (उसके पति की) जिम्मेदारी है। यहीं पर उसके खाली स्थान हैं और उसे भरना है। परमेशवर उसे आज्ञा देता है कि वह समर्पण करे ताकि वह अगुवाई करने के द्वारा उसके(पत्नी के) खाली स्थानो को भर सके (उत्पत्ति 3:16; इफिसियों 5:23)। महिला को लाभ प्राप्त होता है, क्योंकि परमेशवर पति के माध्यम से परिवार का मार्गदर्शन करेगा, और वह उसे अगुवा होने के अपने कर्तव्य को पूरा करने की अनुमति दे रही है। उसे इसका भी लाभ होता है क्योंकि वह इस तथ्य में सुरक्षित महसूस करेगी कि परमेशवर उसके पति के माध्यम से परिवार की अगुवाई कर रहा है, जैसा कि मरियम ने यूसुफ के साथ महसूस क्या था।

जब पत्नी की यह विचारधारा होगी तो वह प्रतिदिन अपने पति के लिए प्रार्थना करेगी। ऐसा लग सकता है कि उसका अगुवा होना इसके अगुवा होने से बेहतर है , लेकिन एक ऐसे व्यक्ति के लिए जो परमेशवर का अनुसरण करना चाहता है, यह एक बहुत भारी जिम्मेदारी है। उसके लिए यह बहुत महत्वपूर्ण है कि वह परमेशवर का अनुसरण करे और अपने परिवार की अगुवाई उस तरह से करे, ना कि अपनी मर्जी से जैसे वह चाहता है । धर्मी पुरुष इस महान जिम्मेदारी को समझते हैं। परमेशवर से प्रार्थना करें कि वह उन्हें ज्ञान और मार्गदर्शन प्रदान करें। एक धर्मी व्यक्ति होना आसान नहीं है। अधिकांश पुरुष अपने जीवन में एक धर्मी व्यक्ति के अच्छे उदाहरण के साथ बड़े नहीं हुए और यह उनके लिए कठिन हो जाता

है। प्रार्थना करें कि परमेशवर आपके पति को वह पुरुष बनने में मदद करें जैसा परमेशवर चाहता हैं, क्योंकि यह आप दोनों के लिए फायदेमंद है।

एक पति के प्रति प्यार और भरोसे के लिए समर्पित करने और उसकी सेवा करने से एक पत्नी को परमेशवर और उसके पति से बहुत सम्मान मिलता है। सिप्पोरा ने आपने आप को मूसा के अधीन नहीं कीया (निर्गमन 4:18-26), यज़ेबेल ने आपने आप को अहाब (1 राजा 21) के अधीन नहीं कीया, और गोमर ने आपने आप को होशे (होशे 1-3) के अधीन नहीं कीया, और उनमें से प्रत्येक ने इसके लिए बहुत कष्ट उठाया।

पति की खातिर अपने पति को अगुवाई करने की अनुमति देकर, धर्मी पत्नी आपने पति को परमेशवर द्वारा दी गयी भूमिका और अगुवाई करने की इच्छा को पूरा होने के लिए रास्ता बना रही होती है (उत्पत्ति 3:16)। एक महिला को प्यार किये जाने की जरूरत है और एक पुरुष को यह महसूस करने की जरूरत है की उसकी किसी को जरूरत है । पुरुषों का सम्मान कीया जाना चाहिए कि वह कौन है और वह क्या करते है। वह परिवार के लिए कितनी मेहनत करता है, इसके लिए उसे आपके धन्यवादी सुभाव की जरूरत है। वह चाहता है कि आप उसकी दोस्त बनें और वो करें जो उसे पसंद है। उसे यह जानने की जरूरत नहीं है कि जब वह घर आता है तो आप उसे देखकर खुश होती हैं। उसे आपका समर्थन करने और उसे प्रोत्साहित करने की आवश्यकता होती है जब जीवन कठिन हो जाता है। उसकी अगुवाई में समर्पण करके एक महिला अपने पति को दिखा रही होती है कि उसे उसकी जरूरत है, जो एक पुरुष के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।

स्त्री अपने पति के लिए एक धर्मी उदाहरण स्थापित करने के द्वारा उसकी आध्यात्मिक रूप से बढ़ने में मदद करती है (1 पतरस 3:1)। उस पर भरोसा करके वह उसे प्यार और प्रोत्साहन दिखाती है। वह अपनी पत्नी और परिवार पर गर्व महसूस कर सकता है और अपने धर्मी परिवार के कारण दूसरों से सम्मान और ईज़त प्राप्त कर सकता है।

दूसरों की खातिर   जैसा कि पतियों के बारे में बात करते समय कहा गया था, एक धर्मी परिवार दुनिया को परमेशवर का प्रेम दिखाता है, साथ ही साथ जैसे मसीही उसके प्रेम के प्रति प्रतिक्रिया दिखाते हैं। यह परिवार के बच्चों और कलीसिया के अन्य लोगों के लिए भी एक महत्वपूर्ण उदाहरण है। एक पत्नी जो विश्वास में समर्पण करती है, वह अपने बच्चों और कलीसिया के समुदाय की अन्य महिलाओं के लिए एक सुंदर उदाहरण है।

ग. विनम्र भरोसा कैसे दिखाएं?

हम जानते हैं कि पत्नियों के लिए अपने पतियों के प्रति विनम्र भरोसा दिखाना बहुत महत्वपूर्ण है। वे कौनसे तरीके है जिन के द्वारा वे अपने विवाहत जीवन में इसे दिखा सकती हैं?

उसकी अगुवाई में भरोसा करने द्वारा   जैसा कि पहले कहा गया है, एक पति के प्रति विश्वास में समर्पण करने से उसे परमेशवर द्वारा, अपने परिवार की अगुवाई करने की दी गयी आज्ञा और अंदरूनी इच्छा पूरी करने की अनुमति मिलती है।

एक शुद्ध जीवन जीने द्वारा पत्नियों को पापरहित पवित्र जीवन जीना चाहिए (1 पतरस 3:2)। आप जो भी सोचते हैं, महसूस करते हैं, कहते हैं और करते हैं, उसमें आपको यीशु की तरह बनने का प्रयास करना है। आत्मा का फल आपके जीवन में प्रकट होना चाहिए (गलातियों 5:22-24)। यदि आप यीशु की आज्ञाकारिता का जीवन जी रही हैं तो यह आपके पति के लिए उस तरह जीना बहुत आसान बना देगा

जैसा यीशु चाहता हैं कि वह जीवन जिए । कोई फर्क नहीं पड़ता कि पति परमेशवर का अनुसरण कर रहा है या नहीं, पत्नी को अपनी बाइबल पढ़नी चाहिए और हर दिन प्रार्थना करनी चाहिए, यीशु की आज्ञाकारिता में रहना चाहिए, और उसका अनुसरण करने के लिए हर संभव प्रयास करना चाहिए।

आदर और सन्मान द्वारा पतरस कहता है कि पत्नियों को आदर का जीवन जीना है (1 पतरस 3:2) और पौलुस कहता है कि पत्नियों को अपने पतियों का सम्मान करना चाहिए (इफिसियों 5:33)। इनका मतलब लगभग एक ही है। हर आदमी को अपनी पत्नी से सम्मान की जरूरत होती है। जिस तरह महिलाओं को प्यार की जरूरत होती है उसी तरह पुरुषों को भी सम्मान की जरूरत होती है। पत्नियों, इस बारे में सोचें कि जब आपको लगता है कि आपका पति आपके साथ प्रेमपूर्ण व्यवहार नहीं करता है तो आप कैसा महसूस करती हैं। जब आप उसके प्रति अनादर करती हैं तो वह भी ऐसा ही महसूस करता है। पुरुष अपनी चोट को छिपाना सीखते हैं, हालांकि कुछ गुस्से में प्रतिक्रिया करते हैं और दूसरों को चोट पहुँचाते हैं। पुरुषों को सम्मान चाहिए। उन्हें यह जानने की जरूरत होती है कि वे अपने परिवार की अगुवाई और पालन-पोषण करने में अच्छा काम कर रहे हैं। अपने पति से पूछें कि क्या कोई ऐसी बात है जिससे उसे लगता है कि आप उसका अनादर करती हैं ?, और वह जो कहता है उसे सुनें।

ध्यान दें कि बाइबल किसी स्त्री को अपने पति से प्रेम करने की आज्ञा नहीं देती है; यह स्वाभाविक रूप से होता है और इसका आदेश देने की आवश्यकता नहीं होती है। लेकिन पति का सम्मान करना अक्सर महिलाओं के लिए कठिन होता है और केवल परमेशवर की मदद से ही क्या जा सकता है। उसकी सराहना करके और उसकी आलोचना न करके उसका सम्मान करें। दूसरों के लिए उसके बारे में डींग मारें। सराहना करें कि वह कैसे एक अच्छा पति बनने की कोशिश करता है और उसे भी यह बताएं। सुनो जब वह बात करता है। यह समझने की कोशिश करें कि वह कैसा महसूस करता है। अगर आप समझ नहीं पा रही हैं कि वह क्या कह रहा है तो उससे सवाल पूछें। अपनी जरूरतों से पहले उसकी जरूरतों के बारे में सोचें। उसकी तुलना दूसरों से मत करो; आप नहीं चाहती कि वह आपकी तुलना अन्य महिलाओं से करे! उसे प्रोत्साहित करने के लिए हर संभव प्रयास करें। हर दिन उससे कुछ न कुछ मेहरबानी कहने के रूप में कहे । उसे बताएं कि आप उस पर विश्वास करती हैं और उस पर भरोसा करती हैं। यह मत समझो कि वह सब जानता है कि आप या बच्चे कैसा महसूस करते और क्या सोचते है ।

आपको उसे सम्मानजनक और प्यार भरे शब्दों में बताने की जरूरत है। जब आप किसी बात से असहमत हों, तो भी उसे सम्मानजनक बताऐ, अबीगेल ने दाऊद को दरुस्त कीया जब वह उसके परिवार को मारने के लिए आ रहा था, परन्तु उसने इसे सावधानी और कोमलता से कीया (1 शमूएल 25)। इस पर बहुत सावधान रहें किअपनी आवाज़ का लहजा क्या है या आप कितनी ऊँची आवाज़ में बोलती हैं, (नीतिवचन 18:21)। आपने गौर नहीं कीया होगा, लेकिन पुरुष छिपे हुए गुस्से को आसानी से उठा सकते हैं। सुनिश्चित करें कि जब आप बोलती है उस समय कोई गुस्सा ना हो। उसके बारे में प्रार्थना करें और बोलने से पहले प्रभु के साथ उसका समाधान करें। याद रखें कि जब आप बहस करते हैं, तो हर कोई हारता है; केवल वही जीतता है जो शैतान है।

आप अपने पति से प्यार में सच बोल सकती हैं, जैसे अबीगैल ने दाऊद से कीया था (1 शमूएल 25), लेकिन आलोचनात्मक ना हों या उसे डांटें नहीं (नीतिवचन 25:24; 18:21)। पतियों को प्रोत्साहित करने वाली और उनका समर्थन करने वाली एक पत्नी की आवश्यकता होती है। अधिकांश पुरुष अपनी असफलताओं से अच्छी तरह वाकिफ हैं और उन्हें आपसे ज्यादा नापसंद करते हैं। उन्हें इन चीजों को दूर करने में आपकी मदद करने की जरूरत है, ना कि उन्हें उनकी कमजोरी के बारे में बताते रहने की।

उसके साथ सब्र रखो, जैसे तुम चाहती हो कि परमेशवर तुम्हारे साथ सब्र रखे (मत्ती 7:5)। यह मत समझिए कि वह जानता है कि आप क्या महसूस कर रही हैं या क्या सोच रही हैं - वह नहीं जानता। जब आप उसे बताती हैं, तब भी वह समझ नहीं पाता है या वह भूल सकता है और बार बार भी बताना पड़ता है। जब वह बात करता है तो धैर्यपूर्वक सुनें, भले ही उसने यह पहले भी कहा हो। इससे पता चलता है कि आप उसकी परवाह करती हैं, और वह आपके लिए महत्वपूर्ण है।

उसकी दोस्त बनने द्वारा कुछ महिलाएं महिला मित्रों को पसंद करती हैं क्योंकि वे उन्हें आसानी से समझ सकती हैं और यह कि वे कैसा महसूस करती हैं। लेकिन परमेशवर चाहता है कि पति और पत्नी सबसे अच्छे दोस्त हों, इसलिए उसने पाप के दुनिया में आने से पहले ही आदम के लिए हव्वा को बनाया।

एक सज्जन और शांत आत्मा द्वारा कोई भी ऐसी महिला को पसंद नहीं करता है जो ऊँची -ऊँची से बोलने वाली और गुस्सैल हो। हर कोई जानता है कि वह एसा यीशु की इच्छा में नहीं कर है। परमेशवर कहता हैं कि एक स्त्री में कोमल और शांत आत्मा होनी चाहिए (1 पतरस 3:4)। अपने पति के साथ सही सथिति में या असहमत होने पर भी हमेशा दयालु और सौम्य रहें। उसकी कमजोरी पर ध्यान ना दें। घर पर उसके साथ वैसा ही व्यवहार करें जैसा आप घर से बाहर होते समय करती हैं। उस भलाई के बारे में सोचें जो वह करता है, ना कि उसकी गलतियों और असफलताओं के बारे में (फिलिप्पियों 4:8)।

यौन क्रिया ना रोकने द्वारा कुछ महिलाएं अपने पतियों को नियंत्रित करने के लिए या उन्हें दंडित करने के लिए सेक्स का उपयोग करती हैं यदि उन्हें ऐसा कुछ पसंद नहीं है जो उन्होंने कीया है (या नहीं कीया है)। अपने पति को नियंत्रित करने या उनका शोषण करने के लिए इसका इस्तेमाल ना करें, जैसा दलीला ने सम्सून के साथ कीया और तामार ने यहूदा के साथ कीया । परमेशवर कहता है कि तुम्हारा शरीर तुम्हारे पति का है, तुम्हारा नहीं, और परमेशवर कहता है कि तुम्हें उसके शरीर का आनंद लेना चाहिए और साथ ही साथ वह भी तुम्हारा आनंद ले (1 कुरिन्थियों 7:2-5)। यौन कोई ऐसी क्रिया नहीं है जिसे एक महिला को सहन करना पड़ता है; उसे इसमें एक इच्छुक भागीदार बनना है, उसका उतना ही आनंद लेना है जितना कि उसके पति को लेना है । परमेशवर ने यौन क्रिया बनाई और एक पति और पत्नी को उनकी खुशी के लिए दिया। यह जोड़ों के लिए परमेशवर की ओर से विवाह उपहार है और जब हम इसका आनंद लेते हैं तो वह बहुत प्रसन्न होता हैं।

निडर रहने द्वारा डर, पत्नियों के विरुद्ध, शैतान के सबसे बड़े हथियारों में से एक है (1 पतरस 3:6)। सही बात कहने या करने से ना डरें। असफल होने या शर्मिंदा होने से मत डरो। जब तक आप जानते हैं कि आप वही कर रही हैं जो यीशु चाहता हैं और उसका अनुसरण कर रही हैं, तब तक दूसरे क्या सोचते हैं, उससे मत डरो। यदि वह परमेशवर का सही ढंग से अनुसरण नहीं करता है, तो इस बात से मत डरो कि तुम्हारा क्या होगा। अभी भी आपके जीवन और परिवार पर परमेशवर का नियंत्रण है, और सब कुछ उसके भले के लिए उपयोग कीया जाएगा (रोमियों 8:28)। अगर आपका पति आपकी ज़रूरतों को पूरा नहीं करता है तो आप इस बात से ना डरें कि आपका क्या होगा। इसके बजाय उन्हें यीशु के पास ले जाएं। कोई भी पुरुष कभी भी अपनी पत्नी की सभी जरूरतों को पूरा नहीं कर सकता है। परमेशवर यह सुनिश्चित करता है! वह चाहता है कि पत्नियों को अभी भी उसकी आवश्यकता हो, और वह उन चीजों के लिए उसके (परमेशवर के) पास आए जो एक पति प्रदान नहीं कर सकता। प्रार्थना कीजिए, अपनी बाइबल पढ़िए और आध्यात्मिक रूप से बढ़ते रहिए। धर्मी जीवन जीऐ चाहे कुछ भी हो। दूसरे के पापों को अपने पाप का रास्ता ना बनने दें। अपनी अधूरी जरूरतों को यीशु के पास ले जाएं और उनकी आपूर्ति के लिए प्रार्थना करें।

अपने पति को क्षमा करने के द्वारा एक पत्नी के लिए यह बहुत महत्वपूर्ण है कि वह अपने पति को जल्द से जल्द माफ कर दे, जैसे ही वह कुछ ऐसा करता है जो उसे दुख पहुँचाता है या निराश करता है, ठीक उसी तरह जैसे एक पति को अपनी पत्नी के साथ करना चाहिए (इफिसियों 4:26-27, 31-32) । एक धर्मी पत्नी को एक अच्छी क्षमाशील होना चाहिए, चाहे वह दिन में 490 बार ही क्यों ना हो (मत्ती 18:21-35)। पत्नियों को यीशु की तरह होना चाहिए और इसलिए उन्हें क्षमा करना चाहिए जैसे वह क्षमा करता है।

घ. विनम्र भरोसा कैसे पाएं

परमेशवर चाहता है कि एक पत्नी अपने पति के लिए विनम्र भरोसा रखे। ज्यादातर महिलाओं के लिए किसी पुरुष पर भरोसा करना और उस पर निर्भर होना स्वाभाविक नहीं है। उसके दिल में यह भरोसा और प्यार कैसे हो सकता है जिससे वह उन हालातों में से हो कर गुजरने की बजाये आपने आप को यीशु के अधीन कर सके ?

परमेशवर के साथ घनिष्ठ व्यक्तिगत संबंध रखने द्वारा केवल यीशु की शक्ति में ही ऐसा कीया जा सकता है, इसलिए सुनिश्चित करें कि आपके जीवन में कोई पाप नहीं है और आप उसके साथ बाइबल पढ़ने और प्रतिदिन प्रार्थना करने में समय बिता रहे हैं। जब आप अन्य काम कर रहे हों तो पूरे दिन प्रार्थना करें। अपने जीवन में परमेशवर की करुणा और दया पर निर्भर होकर रहो। हो सकता कि आपका पति आपको जरूरते पूरी नहीं कर रहा हो , तो उस से उनके बारे में बात करने की कोशिश करें, लेकिन परमेशवर से भी बात करें। उसे उन जरूरतों को पूरा करने के लिए कहें, फिर भरोसा करें कि वह करेगा। जैसा कि पहले कहा गया है, जब पुरुष ऐसा नहीं कर रहा है तो वह(परमेशवर) महिलाओं की देखभाल करने का वादा करता है (यिर्मयाह 49:11)।

पवित्र आत्मा के फलों से भरने द्वारा जब आप यीशु के लिए जीते हैं और उसे अपने सभी विचारों और कार्यों में प्रथम स्थान देते हैं, तो वह आपको अपनी पवित्र आत्मा से भर देगा और उसका फल आप में उत्पन्न होगा: "प्रेम, आनंद, शांति, धैर्य, दया, भलाई, विश्वास, नम्रता और आत्म-संयम। ऐसी बातों के विरुद्ध कोई व्यवस्था नहीं" (गलातियों 5:22-24)। अपने दिल से भरोसा और प्यार कोई ऐसी चीज नहीं है जिसका आप दिखावा कर सकते हैं या इसे बना सकते हैं। परमेशवर से प्रतिदिन प्रार्थना करें कि आप में ये गुण पैदा करें।

यीशु के उदाहरण का अनुसरण करने द्वारा यीशु का अपने स्वर्गीय पिता के प्रति पूर्ण समर्पण और भरोसा एक उदाहरण है जिसका महिलाओं को अपने जीवन में अनुसरण करना चाहिए (मत्ती 20:26-28; 10:24-25; यूहन्ना 13:1-17)। यूसुफ और मरियम की उदारण का अनुसरण करे। शायद आप आस-पास की किसी पत्नी को जानती हों जो इसमें यीशु की एक अच्छी उदाहरण हो । उसे आपकी मदद करने के लिए कहें और आपके साथ प्रार्थना करने को कहे । आप दोनों एक दूसरे के लिए एक प्रोत्साहन हो सकती हैं।

निष्कर्ष

अपने पति के लिए परमेशवर का शुक्र करो। उसके लिए प्रार्थना करें। अपने लिए प्रार्थना करो। और याद रखना, यह मत सोचो कि तुम्हारा पति तुम्हारे लिए क्या कर सकता है, इस बारे में सोचो कि तुम अपने पति के लिए क्या कर सकती हो! अगर आप उसकी ज़रूरतों को पहल देती हैं और वह आपकी ज़रूरतों को पहल देता है, तो आपकी शादी वैसी ही होगी जैसी परमेशवर चाहता हैं। आपके पास एक ऐसा

रिश्ता होगा जो यह दर्शाता है कि यीशु के साथ कैसा रिश्ता होना चाहिए। इसलिए वह खुद को दूल्हा और हमें अपनी दुल्हन कहता हैं।

अब आप जानते हैं कि परमेशवर पत्नियों से क्या और कैसे करने की उम्मीद करता है । यीशु के उदाहरण का अनुसरण करें और आत्मा के फलों पर निर्भर रहें ताकि आप अपने पतियों के प्रति विनम्र भरोसा दिखा सकें। अब आइए देखें कि सेवकाई में शामिल लोगों के विवाहों के लिए परमेशवर किस प्रकार की उम्मीद करता है।

मेरी पत्नी से

"किसी बात की चिन्ता न करना, परन्तु हर बात में प्रार्थना और मिन्नतों के द्वारा धन्यवाद के साथ अपनी बिनतियाँ से परमेशवर को अवगत करना। आयत 7 -और परमेशवर की शान्ति, जो समझ से परे है, तुम्हारे हृदयों और तुम्हारे विचारों को मसीह यीशु में सुरक्षित रखेगी" (फिलिप्पियों 4:6-7)।

परमेशवर हमें भयभीत होने को रोकने की आज्ञा देता हैं। हमें, महिलाओं के रूप में, निडर रहने को चुनने की जरूरत है। पौलूस हमें बताता है कि यह कैसे करना है: अपने मन में परमेशवर पर भरोसा करने का और निडर रहने का फैसला करें, परमेशवर से विशेष रूप से अपनी समस्या या डर के बारे में पूछें, खुशी मनाएं और आपने जीवन में परमेशवर को उसकी सभी अच्छाइयों के लिए धन्यवाद दें कि कैसे उसने हमेशा आपको दया और प्यार दिखाया है, और फिर वह शांति जो केवल परमेशवर की ओर से आती है, आपको हृदय और आत्मा को आनंद से भर देती है। यीशु को शांति का राजकुमार कहा जाता है।

III. शादी और सेवकाई

मुख्य विचार: परमेशवर चाहता है कि पादरीगण और उनकी पत्नियाँ एक टीम के रूप में एक साथ काम करें, अपनी शादी को अपनी सेवकाई से पहले रखें, और अपने बच्चों की लापरवाही ना करें।

(यह अध्याय पादरियों और पादरियों की पत्नियों के लिए है। यह एल्डर (प्राचीनो) और उन सभी पर लागू होता है जो किसी भी तरह से चर्च में काम करते हैं। यदि आप नहीं भी करते हैं, तब भी इसे पढ़ना अच्छा है और सभी मसीहीओं के लिए उपयोगी है , यह बहुत उपयोगी जानकारी प्रदान करेगा मसीही शादियो के लिए।

परमेशवर की इच्छा के अनुसार शादी की सूरत में रहना कठिन कार्य है; लेकिन, एक वास्तविक आशिष साबित हो सकता है। पासबानी भी कठिन काम है, लेकिन यह भी एक महान आशीष ला सकता है। शादी और पासबानी को एक साथ बनाये रखना बहुत कठिन हो सकता है लेकिन बहुत ही लाभदायक हो सकता है। शैतान पतियों और पिताओं, मसीही परिवारों और पादरियों पर हमला करता है। जब आप ये सभी भूमिकाऐ निभाते हैं, तो आप जानते हैं कि आप पर हमला कीया जाएगा। अक्सर हम एक धर्मी पादरी के परिवार के उदाहरण नहीं देखते हैं, इसलिए हम नहीं जानते कि यह कैसा होना चाहिए। बाइबल में एक ऐसा परिवार है जिसे हम एक उदाहरण के रूप में उपयोग करेंगे: अक्किला और प्रिस्किल्ला।

अक्किला और प्रिस्किल्ला अक्किला और प्रिस्किल्ला यहूदी थे जो रोम में रह रहे थे लेकिन जब उत्पीड़न शुरू हुआ तो उन्हें छोड़ना पड़ा। वे कुरिन्थ चले गए और तम्बू बनाने का काम करने लगे (प्रेरितों के काम 18:1-2)। जब पौलुस कुरिन्थ में सेवा करने के लिए आया तो उसने तम्बू बनाने का काम कीया और उनके साथ जान पहचान में आया (प्रेरितों के काम 18:3)। उन्होंने उसे अपने साथ रहने और तंबू बनाने का काम करने के लिए आमंत्रित कीया । प्रत्येक सब्त के दिन, पौलुस ने आराधनालय में यहूदियों और यूनानियों को बताया कि मसीह आ गया है (प्रेरितों के काम 18:4)। जब वह पौलुस के साथ तंबू बनाने और आराधनालय में सभा करते समय बिताते। उसने यीशु को मसीहा होने के बारे में समझाया, और वह यीशु में अपना विश्वास ले आए ।

वे डेढ़ साल से हर दिन पौलूस के साथ बात करते रहते थे , जल्द ही वे उसकी सेवकाई में उसकी मदद करने लगे। पौलूस ने उन्हें हर दिन सिखाया और प्रशिक्षित कीया, और उन्होंने पाया कि परमेशवर ने उन्हें सेवकाई के लिए बुलाया था और उन्हें सेवा करने के लिए उपहार दिया था।

डेढ़ साल बाद पौलुस ने महसूस कीया कि परमेशवर उसे किसी दूसरे शहर में सेवा करने के लिए बुला रहा है, इसलिए वह इफिसुस के लिए रवाना हुआ (प्रेरितों के काम 18:18-19)। अक्किला और प्रिस्किल्ला उसके साथ गए। जल्द ही पौलुस सीरिया की ओर चला गया, लेकिन अक्किला और प्रिस्किल्ला उस काम को जारी रखने के लिए रुके रहे जिसे पौलुस ने इफिसुस में शुरू कीया था। पौलुस के बिना यह उनकी पहली सेवकाई थी, परन्तु उसने उन्हें अच्छी तरह प्रशिक्षित कीया था। इफिसुस एशिया माइनर का सबसे प्रभावशाली शहर था, जिसे बाद में प्रारंभिक कलीसिया का केंद्र होना था । अक्किला और प्रिस्किल्ला ने कलीसिया के शुरू होने और बढ़ने के साथ-साथ उसकी अगुवाई भी की। यह उनके घर में होता था (1 कुरिन्थियों 16:19)।

जब वे वहां थे तो एक महत्वपूर्ण घटना के रूप में एक महान बाइबिल विद्वान अपुल्लोस नाम का प्रतिभाशाली वक्ता, इफिसुस आया और यीशु के बारे में प्रचार करने लगा था, लेकिन वह उसकी मृत्यु और पुनरुत्थान से अवगत नहीं था। उसने केवल यूहन्ना के बपतिस्मे की शिक्षा दी (प्रेरितों के काम 18:24-26)। अक्किला और प्रिस्किल्ला ने उसे अपने घर बुलाया और उसे यीशु के बारे में सिखाया (प्रेरितों के काम 18:26)। उन्होंने सच्चाई में उसका मार्गदर्शन कीया, और वह कई वर्षों तक एक शक्तिशाली कलीसिया रोपण करने वाला बना (प्रेरितों के काम 18:25)।

बाद में, वे सेवा करने के लिए रोम वापस चले गए (रोमियों 16:3), शायद उन यहूदियों से बात कर रहे थे जिन्हें वे वर्षों पहले भाग जाने से पहले जानते थे। वे साहसी थे और उन्होंने पौलुस और अन्यों के लिए अपनी जान जोखिम में डाल दी (रोमियों 16:3)। कई वर्षों के बाद, वे वापस इफिसुस चले गए (2 तीमुथियुस 4:19)। उनकी एक साथ लंबी और फलदायी सेवकाई थी। जब हम उनके विवाह और सेवकाई को देखते हैं तो हमें कुछ ऐसे सिद्धांत मिलते हैं जो आज पादरियों और उनकी पत्नियों की मदद कर सकते हैं।

क. वह एक टोली के रूप में एक साथ काम करते थे

उन्होंने एक साथ यात्रा की और काम कीया जब यीशु के चेले अपनी पत्नियों को अपने साथ ले गए (मत्ती 27:55; मरकुस 15:41; लूका 23:55) और उसके बाद, जब उन्होंने विभिन्न शहरों में नई कलिसियाए शुरू की (1 कुरिन्थियों) 9:5)। पतरस ने भी ऐसा ही कीया (1 कुरिन्थियों 9:5)। ये महिलाएं सेवकाई का एक जरूरी हिस्सा थीं और उन्होंने काम में बहुत योगदान दिया। अक्किला और प्रिसिला पति-पत्नी की एक और टीम थी, जो एक शहर से दूसरे शहर जाती, हमेशा यात्रा करती, और एक साथ काम करती थी।

परमेशवर चाहता है कि आज पादरी अपनी पत्नियों को सेवकाई के कार्य में शामिल करें। जैसा कि हमने इस पुस्तक में देखा, पूर्ण होने के लिए पतियों को अपनी पत्नियों की आवश्यकता होती है (उत्पत्ति 2:18, 20)। उन्हें दो शरीरों में एक व्यक्ति होना है (उत्पत्ति 2:24)। उन्हें शारीरिक रूप से तब तक अलग नहीं होना चाहिए जब तक कि अति आवश्यक ना हो (1 कुरिन्थियों 7:5), और फिर, केवल बहुत ही कम समय के लिए। पादरियों को एक सबसे अच्छे दोस्त, एक प्रार्थना साथी की आवश्यकता होती है, किसी के साथ विचार साझा करने के लिए और उनसे अंतर्दृष्टि और सलाह प्राप्त करने के लिए। उन्हें प्रोत्साहन की जरूरत है। उन्हें अपनी पत्नियों के आध्यात्मिक उपहारों की आवश्यकता है क्योंकि वे स्वयं के प्रशंशक हैं। पादरियों को अपनी पत्नियों के साथ अपनी निजी ताकत के साथ-साथ अपनी सेवकाई के लिए काम करने की आवश्यकता है।

वह एक-दूसरे को प्रशंशा से उपहारित करते थे छह बार अक्विला और प्रिस्किल्ला का उल्लेख प्रेरितों के काम की पुस्तक में कीया गया है। अक्विला पादरी है, और प्रिस्किल्ला पत्नी है। दो बार अक्विला का नाम पहले और चार बार प्रिस्किल्ला का नाम पहले उल्लेख कीया गया है। ऐसा लगता है कि उस समय उसके नाम का सबसे पहले उल्लेख कीय गया था, वह अपने परमेशवर द्वारा प्रादान किये गए आध्यात्मिक उपहारों का उपयोग करके सेवकाई में अगवाई करती थी। ऐसा लगता है कि उसके पास शिक्षण का उपहार था और वह एक प्रतिभाशाली शिक्षिका थी। कुछ लोग यह भी सोचते हैं कि उसने इब्रानियों की पुस्तक लिखी होगी, क्योंकि यह बहुत कुछ पौलुस की तरह लगती है, जिसने उसे सिखाया था, लेकिन इसमें कई अंतर हैं जो दिखाते हैं कि यह किसी और के द्वारा लिखी गई थी। पुस्तक में लेखक का नाम नहीं है, क्योंकि अगर किसी महिला ने इसे लिखा है, तो कुछ लोग आपत्ति कर सकते हैं। शायद उसने इसे लिखा था, लेकिन वह लोगों के लिए समस्या पैदा नहीं करना चाहती थी जो यह नहीं सोचते थे कि परमेशवर इसे लिखने के लिए एक महिला को चुनेंगे। उस समय भी कुछ ऐसे थे, जैसे अब, जो गलत विश्वाश करते थे कि एक महिला पुरुषों के साथ सेवा नहीं कर सकती है। पौलूस कहता हैं कि उन्हें पुरुषों पर अधिकार नहीं हो सकता है और उन्हें पुरुष अधिकार के अधीन होना चाहिए, लेकिन फिर भी, उन्हें अपने उपहारों का उपयोग सेवकाई के लिए करना है (1 तीमुथियुस 2:11-15)। स्पष्ट रूप से प्रिस्किल्ला अपने पति के अधिकार में थी जब वे यात्रा और सेवा करते थे। डीबोरा ने यहूदियों का नेतृत्व कीया लेकिन यह बाराक के अधिकार में थी (न्यायियों 4-5)। यही बात हर पादरी की पत्नी के बारे में सच है जो आज अपने पति के साथ सेवकाई करती है।

अक्विला ने पहचाना कि प्रिस्किल्ला के पास उपहार थे जो उसके पास नहीं थे और उसे उनका उपयोग करने दिया। वह ईर्ष्यालु नहीं था और उसने अपने गर्व को सेवकाई के रास्ते में नहीं आने दिया। परमेशवर ने उसे उसको संतुलित करने के लिए दिया था, उसे एक व्यक्ति और एक पासबान के रूप में पूरा करने के लिए दिया, और स्पष्ट रूप से, उसने ऐसा करने से अच्छा काम कीया । आज के पादरियों का भी यही सच है। उन्हें अपनी पत्नियों को अपने उपहारों का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए और उन्हें अपने अधिकार के तहत उनके साथ सेवा करने का अवसर देना चाहिए। पुरुष उस तरह से दोगुने प्रभावी हो सकते हैं, और टोली कार्य दूसरों के लिए एक अच्छा उदाहरण होगा कि शादी को कैसे काम करना चाहिए।

पत्नी मददगार है, ना कि सहायक पादरी अक्सर जब पादरी अपनी पत्नियों को सेवकाई में मदद लेते हैं, तो इसका मतलब यह है कि उन्हें वह कठिन काम करना है जो कोई नहीं करना चाहता। परमेशवर ने पासबानो की पत्नियों को कुछ ऐसा करने के लिए उपहार में नहीं दिया है। पादरीओं की पत्नियों को सेवकाई में उतनी ही स्पष्ट रूप से बुलाया जाता है जितना कि पासबानो को। उन्हें ऐसे काम नहीं करने चाहिए जिन्हें करने के लिए दूसरों को दिया जा सकता है नहीं तो उनके पास वह करने का समय नहीं हो

सकता है जिसे करने के लिए परमेशवर ने उन्हें बुलाया और उपहार में दिया है। पासबानो को दूसरे लोगों को सेवा करने के लिए प्रशिक्षित करना है (इफिसियों 4:12)। अक्किला के पास प्रिस्किल्ला इस लिए नहीं थी वह उन कामो करे जो दूसरे कर सकते थे या वह काम नहीं कर रहा था जो वह नहीं करना चाहता था। उसने उसे अधिक काम से और दूसरों से उसके समय का फायदा उठाने से बचाया ताकि वह और अधिक महत्वपूर्ण काम कर सके जो वह बहुत अच्छी तरह कर सकती थी। क्या आप जानते हैं कि आपकी पत्नी के आध्यात्मिक उपहार क्या हैं? आप उनका उपयोग करने में उसकी मदद करने के लिए क्या कर रहे हैं?

भक्ति और विचार-विमर्श साथ में अक्किला और प्रिस्किल्ला की हर दिन बाइबल अध्ययन और प्रार्थना के समय एक साथ रहे होंगे। एक पति को इसमें पहलऔरअगुवाई करना है, लेकिन एक पत्नी भी विचारों का योगदान कर सकती है और जो परमेशवर उसे सिखा रहा है उसे साझा कर सकती है। यीशु में पति और पत्नी आत्मिक रूप एक समान हैं (गलातियों 3:28)।

उसकी बुद्धि, अंतर्दृष्टि पर भरोसा रखें एक पति को अपनी पत्नी की अंतर्दृष्टि, सुझावों और टिप्पणियों को सुन कर अच्छा करता है। वह उन चीजों को देख सकती है जिन पर वह ध्यान नहीं देता है और उसके पास बहुत ज्ञान हो सकता है। मेरी पत्नी मुझे मेरे उपदेशों के लिए अद्भुत अंतर्दृष्टि और उन्हें सुधारने के तरीके के बारे में उपयोगी सुझाव देती है। सुसमाचार प्रचार और प्रार्थना के उसके उपहार वास्तव में मेरे शिक्षण और परामर्श के उपहारों में मदद करते हैं। हम एक साथ प्रार्थना करते हैं और एक टीम के रूप में एक साथ अच्छा काम करते हैं। मुझे वास्तव में उसकी जरूरत है और उसकी मदद के बिना मैं वह व्यक्ति या पादरी नहीं हो सकता था जो मैं हूँ। नीतिवचन 31:10-31 में जिस स्त्री की इतनी प्रशंसा की गई, वह भी ऐसी ही थी। उसके पति ने उसे उसके उपहारों का उपयोग करने के कई अवसर दिए, और वह उसके लिए एक वास्तविक आशिष थी। यदि महिलाओं को उस के तरह बनना है, तो उन्हें उसके पति जैसे पति चाहिए जो उन्हें उनकी प्रतिभा और उपहारों का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करे और जो उन्हें ऐसा करने के कई अवसर प्रदान करे।

पत्नियों को निश्चित होना चाहिए कि वे परमेशवर के करीब हैं ताकि वे अपने पति को दिए गए मार्गदर्शन में गुमराह ना हों, जैसे हव्वा (1तीमुथियुस 2:11-15), अय्यूब की पत्नी (अय्यूब 2:9), ईज़ेबेल (1 राजा 21: 7-16) या सिप्पोरा (निर्गमन 4:25-26)। पति भी अपनी पत्नियों को खराब मार्गदर्शन दे सकते हैं जैसे अब्राहाम ने सारा को दिया (उत्पत्ति 12:13-19 और 20:5-12) या हनन्याह से सफीरा को दिया (प्रेरितों के काम 5:2)। वे अपनी पत्नियों की अच्छी सलाह को भी नज़रअंदाज़ कर सकते हैं, जैसे पिलातूस ने अपनी पत्नी की सलाह को नजरअंदाजक्या था (मत्ती 27:19)।

ख . उनकी शादी प्रथम स्थान पर थी

पहली प्राथमिकता एक पासबान की पहली प्राथमिकता बाइबल पढ़ने और प्रतिदिन प्रार्थना करने के द्वारा आध्यात्मिक रूप से विकसित होना है। साथ ही उसे अपने शारीरिक स्वास्थ्य का भी ध्यान रखना चाहिए। जीवन में किसी और चीज से पहले उसकी अगली प्राथमिकता उसकी पत्नी है। उसके पीछे उसके बच्चे आते हैं, और फिर उसकी कलीसिया और उसके माता-पिता। परमेशवर यह बहुत स्पष्ट करता है कि विवाह सेवकाई से पहले आता है!

एक पासबान की पत्नी की पहली प्राथमिकता उसका अपना आध्यात्मिक, भावनात्मक और शारीरिक स्वास्थ्य है; उसके बाद उसके पति की ज़रूरतों को पूरा करना आता है, फिर उसके बच्चों की ज़रूरतों को, और अंत में, उसके बाद, कलीसिया की ज़रूरतों को पूरा करना। उसे अपनी सेवकाई में इतना कुछ

करने के लिए मत कहो कि वह अपनी ज़रूरतों, आपकी ज़रूरतों या बच्चों की ज़रूरतों की लापरवाही करनी पड़े। एक अच्छा संतुलन खोजें जो सभी के लिए काम करे।

अक्विला और प्रिस्किल्ला की सेवकाई एक साथ लंबी और फलदायक थी। यह तभी होता है जब एक पति और पत्नी के बीच उस तरह का शादी सम्बंद होता है जिसकी परमेशवर उनसे उम्मीद करता है। इसका अर्थ है उनकी शादी को उनकी सेवकाई से पहले रखना। परमेशवर पादरियों से यह उम्मीद नहीं करता है कि वे सेवकाई के लिए अपननी शादी या अपने बच्चों का बलिदान करें। वह कहता है कि यदि वे ऐसा करते हैं, तो उन्हें पासबान नहीं होना चाहिए (2 तीमुथियुस 3:4-5)। यह सुनिश्चित करना पति पर निर्भर करता है कि ऐसा ना हो। वह अगुवा है, और परमेशवर उसे जिम्मेदार ठहराएगा। जब एक पासबान मर जाता है और परमेशवर के सामने खड़ा होता है, तो परमेशवर यह नहीं देखेगा कि वह कितना अच्छा पादरी था बल्कि वह कितना अच्छा पति और पिता था। अगर उसने वहां अच्छा काम कीया, तो उसे एक अच्छा पादरी होने का इनाम भी मिलेगा।

सबसे पहले दोस्ती का रिश्ता अक्विला और प्रिस्किल्ला के लिए टेंट बनाने के काम में, घर पर, और सेवकाई में एक साथ थे ऐसा होने का मतलब है कि आपसी रिश्ते में अच्छी तरह से मिल चुके होंगे। वे एक दुसरे के लिए सबसे अच्छे दोस्त रहे होंगे। परमेशवर एक पादरी और पत्नी से एक दुसरे के लिए सबसे अच्छे मित्र होने की उम्मीद करता है। उसने पतियों को पूरा करने के लिए पत्नियों को बनाया (उत्पत्ति 2:18, 20), ताकि उसके खाली स्थानों को भरा जा सके (उत्पत्ति 2:24)। पति भी पत्नी के लिए ऐसा करता है। मित्र एक दुसरे से अपनी भावनाओं और विचारों को साझा करते हैं; वे एक-दूसरे को प्रोत्साहित करते हैं और एक दुसरे का समर्थन करते हैं, वे हंसते हैं और साथ में मस्ती करते हैं, वे हमेशा एक-दूसरे की मदद के लिए उपलब्ध रहते हैं, आवश्यकता चाहे जो भी हो। जब आप मरियम और युसफ की कहानी को देखते हैं, जिसमें वह उसके साथ बेथलहम जाना चाहती थी, भले ही वह नौ महीने की गर्भवती थी और कानून ने कहा कि उसे जाने की जरूरत नहीं है, यह स्पष्ट है कि उन्होंने दोस्तों के रूप में और पति-पत्नी के रूप में एक साथ रहने का आनंद महसूस कीया। अगर आपकी पत्नी आपकी सबसे अच्छी दोस्त नहीं है तो आप कुछ ऐसे है जो बहुत महत्वपूर्ण नहीं हैं।

अपने शादीशुदा जीवन को समय दें जब हम पैसा कमाते हैं, तो हमें इसे भोजन, आवास और बिलों के लिए बहुत खर्च करना होता है। लेकिन हम कोशिश करते हैं कि यह सब खर्च ना करें। हम इसमें से कुछ को भविष्य के लिए बैंक में निवेश करने का प्रयास करते हैं, इसलिए यह बढ़ेगा, और हम इसे बाद में प्राप्त कर सकते हैं। परमेशवर हमें सीमित मात्रा में ही धन देता है, और हमें इसका बुद्धिमानी से उपयोग करना चाहिए। वह हमें सीमित समय भी देता है, और उसका भी बुद्धिमानी से उपयोग कीया जाना चाहिए। इसका अधिकांश भाग हम जीवन और सेवकाई की गतिविधियों पर खर्च करते हैं, लेकिन हमें अपने विवाहत जीवनों में निवेश करने के लिए कुछ को अलग रखना चाहिए। पत्नी के साथ समय बिताना भविष्य के लिए बैंक में पैसा निवेश करने जैसा है। हालाँकि, आप अपनी पत्नी के साथ समय का आनंद ले सकते हैं और साथ ही भविष्य के लिए निवेश भी कर सकते हैं। अपनी पत्नी के साथ समय बिताना ही शादी और दोस्ती बढ़ाने का एकमात्र तरीका है। आपके पास बात करने और सुनने के लिए समय होना चाहिए, प्रार्थना करने का समय, हंसने का समय, भविष्य के बारे में सपने देखने का समय, चुपचाप बैठकर एक-दूसरे का आनंद लेने का समय होना चाहिए। परमेशवर के साथ हमारा रिश्ता तब तक नहीं बढ़ता जब तक हम उसके साथ अच्छा समय नहीं बिताते, और यही बात हमारे जीवन साथी के साथ हमारे रिश्ते की सचाई है।

सप्ताह में एक दिन छुट्टी लें अपनी पत्नी और परिवार के लिए समय निकालने का एक तरीका यह सुनिश्चित करना है कि आप सप्ताह में एक दिन छुट्टी लेते है । हम कानून के अधीन नहीं हैं, लेकिन 6 दिन काम करने और एक को आराम करने का सिद्धांत कानून से बहुत पहले शुरू हो गया था। इसकी शुरुआत सृष्टि के साथ ही हुई (निर्गमन 10:8-11)। आरंभिक कलीसिया ने दिन को शनिवार से रविवार में बदल दिया क्योंकि यीशु सप्ताह के पहले दिन पुनर्जीवित हुआ था (मरकुस 16:9; प्रेरितों के काम 20:7)। फिर भी, सिद्धांत वही है। परमेशवर चाहता है कि हम सप्ताह में एक दिन काम से आराम करें। पादरियों के लिए रविवार आराम का दिन नहीं है। यह सप्ताह का हमारा सबसे व्यस्त दिन है। यह ठीक है, जब तक हम आराम करने और अपने परिवार के साथ बिताने के लिए एक और दिन की छुट्टी लेते हैं।

यहूदियों को हर सात दिन में एक दिन और हर सात साल में एक साल की छुट्टी लेनी होती थी ताकि वे और जमीन आराम कर सकें। 70 वर्षों तक बंदी बनाए जाने का एक कारण यह था कि उन्होंने 490 वर्षों तक इस आदेश का उल्लंघन कीया। इसलिए परमेशवर ने उन्हें वहां रखा जहां वे खेती नहीं कर सकते थे या अपनी जमीन पर 70 साल तक काम नहीं कर सकते थे। इस आज्ञा के पालन को लेकर परमेशवर कितना गंभीर है। सप्ताह का एक दिन चुनें और अपने लोगों को बताएं कि आप प्रत्येक सप्ताह उस दिन उपलब्ध नहीं होंगे, चाहे कुछ भी हो। उन्हें सिखाएं कि क्यों उन्हें इस सिद्धांत को समझना हैं और इसे अपने जीवन में लागू करना हैं। आप घर में एक साथ खाना बना सकते हैं और काम कर सकते हैं, लेकिन सेवकाई या कार्य परियोजनाओं से बचें। परमेशवर कहता हैं कि हमारे मन और शरीर को सात में एक दिन आराम करना चाहिए।

यहूदियों ने वर्ष के दौरान कई दावतें भी कीं जब वे कई दिनों की छुट्टी लेते थे। अपनी पत्नी या अपने पूरे परिवार के साथ जाने के लिए हर साल कुछ दिनों की छुट्टी लेना एक अद्‌भुत विचार और एक सिद्धांत है जिस पर परमेशवर निश्चित रूप से आशीश देगा । यह केवल कुछ ऐसा नहीं है जिसका परमेशवर सुझाव देता है या जिसकी अनुमति देता है। यह कुछ ऐसा है जिसकी उसे हमारे लिए और हमारी शादियों/ विवाहत जीवनों के लिए आवश्यकता है।

सेल फोन बंद रखें मान लें कि कोई आपके पास आया और आपका बटुआ लिया और कुछ पैसे निकाले, फिर किसी और ने ऐसा ही कीया , और बहुत पहले किसी अन्य व्यक्ति ने कीया - आप क्या करेंगे? क्या आप उन्हें अपना पैसा लेने की अनुमति देंगे? नहीं, क्योंकि अगर आपने ऐसा कीया तो आपके पास अपने लिए पर्याप्त रहेगा ही नहीं । परमेशवर हमें केवल एक निश्चित राशि देता है, और हमें इसका उपयोग उन चीजों के लिए करना चाहिए जिनके लिए वह चाहता है कि हम इसका उपयोग करें। हमारे समय का भी यही हाल है। परमेशवर हमें सीमित समय देता है, और अगर हम दूसरों को इसे में से लेने देते है तो हमारे पास महत्वपूर्ण चीजों के लिए समय नहीं होगा।

जब आप प्रार्थना कर रहे हों या अपनी बाइबल पढ़ रहे हों, जब आप अपनी पत्नी या परिवार के साथ बातचीत या भक्ति कर रहे हों, जब आपका छुट्टी का दिन हो; या उस तरह का कोई विशेष समय, अपने सेल फोन का जवाब ना दें! किसी को अपने जीवन में प्रवेश ना करने दें और परमेशवर, अपनी पत्नी या अपने परिवार के साथ अपने रिश्ते को बाधित ना करें। अन्य प्रतीक्षा कर सकते हैं; परमेशवर, पत्नी और परिवार के साथ आपका ऐसा रिश्ता नहीं हो सकता जो प्रतीक्षा करे । आप उन्हें बाद में वापस बुला सकते हैं, या यदि यह महत्वपूर्ण है तो वे आपको किसी और समय फिर से कॉल करेंगे। पादरियों को अपने पैसे का अच्छा भण्डारी होना चाहिए, दूसरों को आ कर और इसे ले जाने नहीं देना चाहिए। उन्हें अपने समय का भी अच्छा भण्डारी होना चाहिए और दूसरों को आने और उसका समय लेजाने नहीं देना चाहिए। सेल

फोन से पहले पादरी बहुत अच्छी तरह से काम करने में सक्षम थे, और वे अभी भी उनके बिना हर समय काम कर सकते हैं!

एक दूसरे की रक्षा करें चर्च या समुदाय में ऐसे लोग हैं जो पादरी या उसकी पत्नी का फायदा उठाते हैं। कुछ सलाह चाहते हैं, दूसरों को मदद चाहिए, कुछ को पैसा या उनका ध्यान भी चाहिए। एक पास्टर को उन लोगो को नहीं कह कर,अपनी पत्नी की उन लोगों से रक्षा करनी चाहिए जो उसका और उसके समय का फायदा उठाना चाहते हैं। वह उसे चेतावनी देकर या उनसे बात करके उसकी रक्षा कर सकती है और उन्हें बता सकती है कि इस समय पादरी साहिब उनकी मदद नहीं कर सकता। पादरी और पत्नियाँ यह सुनिश्चित करके कि उनका आपना भावनात्मक और यौन संबंध घनिष्ठ और मजबूत है और वह यौन प्रलोभन (जस्मानी अज्मैश्यों) से एक-दूसरे की रक्षा करते हैं ।

अपनी कलीसिया से पर्याप्त वेतन प्राप्त करें सभी कलीसियाएं एक पादरी को अच्छा वेतन देने में सक्षम नहीं हैं, लेकिन यदि वे कर सकते हैं, तो उन्हें ऐसा करना आवश्यक है (1 कुरिन्थियों 9:3-12; 1 तीमुथियुस 5:17-18)। कुछ लोग सोचते हैं कि पादरी को चर्च के लोगों की तुलना में कम पैसे में रहना चाहिए। यह सच नहीं है और पुराने नियम के याजक या नए नियम के पादरियों के जीने का तरीका ऐसा नहीं है। एक पादरी को चाहिए कि वह अपने लोगों को देना सिखाए (2 कुरिन्थियों 9:7)। पादरियों को चाहिए की वह अपने लोगों को परमेशवर को देना सिखाए ; यदि नहीं, तो वे परमेशवर को लूटने के द्वारा उन्हें पाप करने की अनुमति देते हैं, जो उसका है (मलाकी 3:8)। एक पास्टर का वेतन उसके चर्च के औसत सदस्य के बराबर होना चाहिए। पास्टरों को अपने लोगों को कलीसिया के माध्यम से प्रभु को धन देने, और उससे वेतन प्राप्त करने के महत्व को सिखाना चाहिए (1 कुरिन्थियों 9:3-12; 1 तीमुथियुस 5:17-18)। एक पास्टर के परिवार और पत्नी के लिए भोजन और अन्य चीजों के लिए पर्याप्त धन के बिना जीने की तुलना में जीवन काफी कठिन होगा । जब आपको वेतन मिले, तो पहले अपनी पत्नी को उतना ही दें, जितना उसे चाहिए। इसे अपने लिए या चर्च के लिए उपयोग ना करें कि फिर उसके पास परिवार के लिए उपयोग करने के लिए पर्याप्त धन ना बचे।

विवाह का बगीचा विवाह के बारे में समझने का एक अच्छा तरीका बगीचे के बारे में सोचने से है। नीतिवचन 24:30-34 में हमें जीवन और विवाह के बारे में कुछ सबक सिखाने के लिए एक बगीचे का उपयोग कीया जाता है। "मैं आलसी के खेत से होकर उस मनुष्य की दाख की बारी के आगे हुआ, जिस में न्याय नहीं होता; सब जगह काँटे निकल आए थे, ज़मीन जंगली पौधों से ढँकी हुई थी, और पत्थर की दीवार उजड़ गई थी। मैंने जो देखा उस पर मैंने अपना दिल लगाया और जो मैंने देखा उससे एक सबक सीखा: थोड़ी सी नींद, थोड़ी ऊंग,आराम करने के लिए हाथ थोड़ा मोड़ना-- और गरीबी आप पर एक डाकू की तरह आ जाएगी और घटी एक सशस्त्रधारी आदमी की तरह ।"

यह एक ऐसे बगीचे की तस्वीर है जिसकी देखभाल नहीं की गई थी जो एक समय आनंद देता था अब और आनंद नहीं देता है। किसी ने इसे नुकसान पहुंचाने के लिए कुछ नहीं कीया ; वे अन्य कामों में बहुत व्यस्त थे और इसकी लापरवाही की । मालिक आलसी था और उसने उसमें काम करना बंद कर दिया। हमारी अधिकांश शादी समस्याएं किसी बड़े पाप या बड़ी समस्या के कारण नहीं होती हैं; वे आते हैं क्योंकि हम अपनी शादी को समय देने और उसकी देखभाल करने के बजाये अन्य काम करने में बहुत व्यस्त होते हैं। इस बगीचे की तरह, अगर हम इसे काफी देर तक छोड़ दें तो सब कुछ नष्ट हो जाता है। यह सब एक बार में नहीं बल्कि धीरे-धीरे होता है। धीरे-धीरे समय के साथ दर्द होता है और लापरवाही इसके लिए एक हथियार का रूप लेती है और पति-पत्नी अब एक-दूसरे के करीब नहीं होते हैं। कभी-

कभी वे मुश्किल से साथ मिलते हैं। कहावत का सबक यह है कि जिस चीज की देखभाल करने की जरूरत है उसकी लापरवाही करने से वह टूट जाती है।

इन सब से बचाया जा सकता था यदि मालिक ने अपने बगीचे पर नजर रखी होती और उसको आपना जरूरी समय और ध्यान दिया होता। तब उसके पास कुछ ऐसा होता जो अभी भी उसे ख़ुशी और आनंद देता। विवाह में साथिओं को एक अच्छा साथी बनने, एक-दूसरे को क्षमा करने, एक-दूसरे से प्यार करने और सेवा करने, एक साथ समय बिताने और यह सुनिश्चित करने पर काम करने की ज़रूरत है कि उनकी दोस्ती बढ़ती जाए। अपनी शादी में परेशानी या समस्याओं के शुरुआती संकेतों को देखें और उन्हें ठीक करने के लिए जो आवश्यक हो वह करें। अपनी शादी को इतना खराब ना होने दें कि, इस बगीचे की तरह, इसे बहाल ही ना कीया जा सके।

एक बगीचे को विकसित करने के लिए पौधों को पानी देना और खिलाना आवश्यक है। आपके शादीशुदा जीवन को भी पानी पिलाया और खिलाया जाना चाहिए। पति-पत्नी दोनों एक-दूसरे को धन्यवाद देकर, एक-दूसरे को ठेस पहुँचते ही माफी माँगकर, एक-दूसरे की तारीफ और हौसला बढ़ाते हुए, बिना माँगे एक-दूसरे की मदद करने के लिए तरह-तरह के काम करके, साथ-साथ समय बिताकर, प्यार का इजहार करके ऐसा कर सकते हैं जो उनके साथी के लिए सबसे ज्यादा मायने रखता हैं और एक दूसरे के लिए और एक दूसरे के साथ प्रार्थना करते हुए यह कर सकते है ।

नीतिवचन 24 में चित्रित कीया गया बगीचा जंगली पौधों से भर गया था। जंगली पौदे उगाने में कोई मेहनत नहीं लगती; इसके लिए केवल लापरवाही की आवश्यकता होती है: उन्हें बड़ने देना और उने नहीं निकलना। वे जमीन के नीचे, अनदेखी शुरूआत करते हैं, फिर विस्तार करते हैं और कब्जा कर लेते हैं। अपने या अपने साथी के अंदर छिपी अनदेखी वेदनाओं पर ध्यान दें। अगर उन्हें माफ नहीं कीया गया और हटाया नहीं गया तो वे मजबूत कड़वाहट में बढ़ जाएंगे और शादीशुदा जीवन में जो कुछ भी अच्छा है उसको नष्ट कर देंगे। जब इन जंगली पौदो को बढ़ने दिया जाता है तो इनकी जड़ें गहरी, मजबूत होती हैं और इनसे छुटकारा पाना बहुत मुश्किल होता है। वे आपके विवाह बगीचे से सारे प्यार का गला घोट देंगे

इस बाग की दीवारों को बचाने के बजाय टूटने दिया गया था । किसी भी पौधे के बीज या कोई भी जानवर अंदर आ सकते हैं। इसे बचाने के लिए आपको अपनी शादीशुदा जीवन के चारों ओर मजबूत दीवारों की आवश्यकता होती है, और आपको उन्हें अच्छी मरम्मत सथिति में रखना चाहिए। दीवारें वे मानक/सिधांत हैं जिन्हें आपने प्रलोभन से दूर रखने के लिए, दूसरों को आपका समय लेने से रोकने के लिए, यह सुनिश्चित करने के लिए कि आपके पास अपने और अपने बच्चों के लिए गोपनीयता है, यह सुनिश्चित करने के लिए कि आप समय निकालते है और सप्ताह में सातों दिन काम नहीं करते और एक दूसरे की जरूरतों को पूरा करने पर ध्यान केंद्रित करने के लिए सक्षम है ।

यदि आपके पास मजबूत दीवारें हैं, जंगली पौदो को दूर रखें, और अपने विवाह को पानी और पोषण दें और इसकी लापरवाही ना करें, तो आपके पास बहुत सारे फल होंगे जो जीवन भर बहुत खुशी और आनंद लाएंगे। क्या आपकी शादी एक बगीचे की तरह है जो आपके लिए एक आशीश है, या यह बर्बाद होने के लिए छोड़ दी गई है? यदि इस्की लापरवाही की गयी है, तो आपको इसे जो होना चाहिए, इसे इसकी उचित स्थिति में लाने के लिए आपको अतिरिक्त मेहनत करने की आवश्यकता है। यह आसान नहीं होगा लेकिन यह कीया जा सकता है। बगीचे को उस तरह से शुरू ना होने देना बेहतर होगा ।

ग . उन्होंने अपने बच्चों की लापरवाही नहीं

हम नहीं जानते कि क्या अक्विला और प्रिस्किल्ला के बच्चे थे। यदि थे भी, तो माता-पिता के रूप में बाइबल उनके बारे में कुछ नहीं कहती है। लेकिन हम मान सकते हैं कि उनके भी बच्चे होंगे क्योंकि उन दिनों ज्यादातर लोगों के बच्चे थे। चूँकि वे जानते थे कि उनकी सेवकाई के सभी वर्षों में एक अच्छी शादी क्या होती है और परमेशवर ने इसे आशिषत कीया, हम मान सकते हैं कि वे अच्छे माता-पिता भी थे। हम अगले अध्याय में बच्चों की परवरिश के बारे में और बात करेंगे, लेकिन इस अध्याय में हम पादरी के घर में बच्चों की परवरिश के कुछ सिद्धांतों का उल्लेख कर सकते हैं।

कई बार पासबानो के बच्चों की बदनामी होती है। वे बड़े होकर विद्रोही बन जाते हैं और परमेशवर का अनुसरण नहीं करते हैं। जब उनसे पूछा जाता है कि वे ऐसे क्यों है, वे आमतौर पर कहते है कि उनके पिता ने कलीसिया के साथ इतना समय बिताया कि उनके पास उनके लिए पर्याप्त समय नहीं था। वे परमेशवर और कलीसिया से जलन रखते है और अपने पिता को उनसे दूर ले जाने के कारण उनसे घृणा करते है । दूसरे लोग कभी-कभी कहते हैं कि उनके पिता चर्च में लोगों के साथ दयालु और धैर्यवान है , लेकिन जब वे घर पर होता है तो वे अक्सर क्रोधित और अधैर्यवान होता है । यदि उसके विश्वास ने उसे पाखंडी बना दिया, तो वे इससे कुछ लेना-देना नहीं रखना चाहते थे। यह पादरियों के लिए एक बहुत ही दुखद प्रतिष्ठा है!

बच्चे कलीसिया की तुलना पहले स्थान पर है केवल एक व्यक्ति का साथी बच्चों की तुलना में पहले होना चाहिए, यहां तक कि कलीसिया या आपके अपने माता-पिता को भी नहीं। पादरियों के घरों में बच्चों को अतिरिक्त प्यार और समर्थन की आवश्यकता होती है, क्योंकि पादरी और उनकी पत्नियाँ अक्सर कलीसिया के काम में व्यस्त रहते हैं। आप कलीसिया में किसी को सिखाने से ज्यादा उन्हें सिखाएंगे, इसलिए एक अच्छा उदाहरण पेश करें कि परमेशवर उनके लिए कैसा है। यदि आप ऐसा करते हैं, तो वे आपसे और परमेशवर से अपने शेष जीवन प्रेम करेंगे और आज्ञापालन करेंगे!

अपने बच्चों की रक्षा करें कभी-कभी कलीसिया के लोग पादरी के परिवार या बच्चों के प्रति क्रूर हो सकते हैं। वे ऐसी बातें कह या कर सकते हैं जिससे उन्हें ठेस पहुंचे। आपको इससे उनकी रक्षा करनी चाहिए। सुनिश्चित करें कि आपको उनसे बहुत अधिक उम्मीदें नहीं हैं। कुछ पादरी चाहते हैं कि उनके बच्चे परिपूर्ण हों ताकि कलीसिया के लोग माता-पिता के रूप में उनसे प्रभावित हों। अपने बच्चों को बच्चे ही रहने दें । दूसरों को प्रभावित करने के लिए उनसे अन्य बच्चों की तुलना में अलग तरह से कार्य करने की उम्मीद ना करें। अपने बच्चों के लिए कलीसिया के अन्य बच्चों से भिन्न मानक ना रखें। उन्हें गोपनीयता दें ताकि लोगों को उनके बारे में सब कुछ पता ना चले। उन्हें आपकी तरह गोपनीयता की आवश्यकता है और वे योग्य हैं। लोगों को वह सब कुछ जानने की ज़रूरत नहीं है जो वे करते हैं और ना ही लोगों को आपके द्वारा की जाने वाली हर चीज़ को जानने की ज़रूरत है।

उन्हें सेवा करने के लिए प्रोत्साहित करें एक पादरी के परिवार में एक बच्चा होने के नाते एक बहुत ही विशेष आशीर्वाद है कि बच्चा परमेशवर के बारे में सीख सकता है और एक बहुत ही खास तरीके से उसकी सेवा कर सकता है। उन्हें अपनी रुचि पर आधारित और आध्यात्मिक उपहारों का उपयोग करने के लिए काम करने का अवसर दें ताकि वे सेवा कर सकें। सुनिश्चित करें कि वे इसे प्यार से करते हैं, सिर्फ इसलिए नहीं कि उन्हें यह करना पड़ रहा है। उन्हें चुनने दें कि वे क्या करना चाहते हैं और वे करें जो उन्हें पसंद हैं। उन्हें केवल वह काम ना सौंपें जो दूसरे नहीं करना चाहते। उन्हें अपने उदाहरण से सेवा करना सिखाएं।

अपने बच्चों के लिए प्रार्थना करें पादरियों और उनकी पत्नियों को अपने बच्चों के लिए प्रतिदिन प्रार्थना करनी चाहिए। शैतान उन्हें विश्वास से दूर करने के लिए हर संभव प्रयास करेगा। वह उनका उपयोग पादरी और उसकी पत्नी को हतोत्साहित करने और विचलित करने के लिए भी करेगा। उनके भविष्य के लिए, जिस व्यक्ति से वे शादी करेंगे, और उनके जीवन के सभी क्षेत्रों में परमेशवर की इच्छा पूरी होने के लिए प्रार्थना करें। प्रार्थना बहुत शक्तिशाली है, इसलिए इसे अपने परिवार का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बनाएं (याकूब 5:16)।

हम अक्विला और प्रिस्किल्ला के उदाहरण से देख सकते हैं कि परमेशवर चाहता है कि पादरीगण और उनकी पत्नियाँ एक टीम के रूप में एक साथ काम करें, अपनी शादी को अपनी सेवकाई से पहले रखें, और अपने बच्चों की लापरवाही ना करें। हम अगले अध्याय में बच्चों की परवरिश के बारे में और बात करेंगे।

मेरी पत्नी की तरफ से

यीशु ने उत्तर दिया, "तू अपने परमेशवर यहोवा से अपने सारे मन, और अपने सारे प्राण, और अपनी सारी शक्ति और अपनी सारी बुद्धि से प्रेम रखना; और अपने पड़ोसी को अपने समान" (लूका 10:27)।

यीशु चाहता है कि हम उसे पूरी तरह से प्यार करें और उसकी सेवा करें। वह आगे कहता है कि हमें अपने पड़ोसियों को अपने समान प्रेम करना चाहिए। हमें अपने आप से प्यार करना और अपनी देखभाल करना है। पत्नियां और मां अक्सर सभी की सेवा करती हैं और खुद की देखभाल करने की लापरवाही करती हैं। यहाँ यीशु ने माना कि आप अपने शरीर, मन और आत्मा की उचित देखभाल करेंगे। जब हम ऐसा करते हैं, तो हमारे पास अपने परिवारों और दूसरों की मदद करने के लिए शारीरिक शक्ति और भावनात्मक साहस और आध्यात्मिक ज्ञान होता है। प्रार्थना करें और अपनी बाइबल पढ़ें। यह आपकी आत्मा को पोषण देता है।

पादरीओं की पत्नियों को विशेष रूप से परमेशवर से पूछने में सावधानी बरतनी चाहिए कि वह आपको किसकी मदद करने की चाहत रखता है और अपने चर्च में किसकी सेवा करने की चाहत रखता है। कुछ लोगों की कई ज़रूरतें होती हैं और उन्हें हमेशा आपकी मदद की ज़रूरत होगी और आपके पास दूसरों पर ध्यान देने के लिए समय नहीं बचेगा। इसे संतुलित करने का प्रयास करें। अन्य महिलाओं को सिखाएं कि सबसे अधिक जरूरतमंद लोगों की मदद कैसे करें जिन्हें अधिक समय और ध्यान देने की आवश्यकता होती है।

IV. बच्चे

मुख्य विचार: परमेशवर माता-पिता से उम्मीद करता है कि वे अपने बच्चों के लिए धार्मिक प्रशिक्षण प्रदान करें।

एक पति को चाहिए कि वह अपनी पत्नी को आपने जीवन में परमेशवर को छोड़ हर चीज़ से पहले स्थान पे रखे, और पत्नी को अपने पति के साथ भी ऐसा ही करना चाहिए। इसके बाद उनके बच्चों का महत्व आता है। परमेशवर उन लोगों से उम्मीद करता है जो माता-पिता हैं की वह अपने बच्चों को धार्मिक प्रशिक्षण प्रदान करें। माता-पिताओं को अपनी सेवकाई के लिए, या किसी और चीज़ के कारण अपने बच्चों की लापरवाही नहीं करनी चाहिए। परमेशवर कहता हैं कि एक पासबान को एक धर्मी पति और पिता होना चाहिए, नहीं तो उसे एक पादरी नहीं होना चाहिए (1 तीमुथियुस 3:4-5; तीतुस 1:6)। आप अपने बच्चों के जीवन को सब से अधिक प्रभावित करते है । वे आपके सबसे अच्छे शिष्य हैं। आप जो प्रशिक्षण देते हैं, वह उन्हें उनके पूरे जीवन के लिए तैयार करेगा। एक पिता के प्यार और ध्यान की उनकी जरूरतों को उनके पिता को पूरा करना चाहिए। जिस तरह से उनके सांसारिक पिता उनके साथ व्यवहार करते हैं, उसी तरह वे अपने स्वर्गीय पिता, परमेशवर को देखते हैं। बच्चे नर्म मिट्टी की तरह होते हैं जिसे आप बना रहे हैं और जो भी छवि आप चुनते हैं उसमें ढाल रहे हैं। क्या आप चाहते हैं कि वे सोचें कि वे महत्वपूर्ण नहीं हैं, कि आपके पास अन्य चीजें हैं जो अधिक महत्वपूर्ण हैं? कि वे आपके लिए बस एक मुसीबत हैं? अगर उन्हें आपसे यह संदेश मिलता है, तो वे परमेशवर के बारे में भी ऐसा ही महसूस करेंगे। आप उनके साथ आपने व्यवहार के द्वारा उनके जीवन में एक तरह से परमेशवर की एक तस्वीर बना रहे हैं। परमेशवर आपसे उम्मीद करता है कि आप अपनी पत्नी के ठीक बाद अपने बच्चों की ज़रूरतों को पूरा करें, चाहे आप पर कितनी ही अन्य ज़िम्मेदारियाँ क्यों ना हों।

पृथ्वी पर रहते हुए यीशु की सर्वोच्च प्राथमिकता उनके शिष्यों का 'परिवार' था, ना कि भीड़ और ना ही नए कार्यक्रम और परियोजनाएँ। उसने अपने करीबी अनुयायियों और उनकी जरूरतों को सबसे पहले रखा, अक्सर भीड़ से अलग हो कर या दूसरों को अपने शिष्यों के साथ समय बिताने के लिए भेज कर (मरकुस 6:31; मत्ती 14:13)। हमें आज भी इसी नमूने का पालन करना है।

मेरा परिवार सेवकाई में मेरी पहली प्राथमिकता है: जब मैं अपने जीवन को पीछे मुड़कर देखता हूं तो मेरे पास एक ऐसा दृष्टिकोण होता है जो आप में से बहुत से युवा लोगों के पास नहीं होता है। मेरे छह बच्चे जो बड़े हो गए हैं, उनमें से चार की शादी हो चुकी है और उनके अपने परिवार है। उनके जीवन पर मेरा प्रभाव पड़ा है। मैं परमेशवर का धन्यवाद करता हूँ कि उसने मुझे सेवकाई की शुरुआत में मेरे परिवार को मेरी नंबर एक मंडली बनाने के महत्व के लिए कायल कीया । मेरे चर्च में लोग आए और गए, लेकिन मेरा परिवार अब भी मेरे साथ है और हमेशा रहेगा। मेरे बच्चों और मेरी पत्नी की तुलना में किसी पर मेरा अधिक प्रभाव नहीं पड़ा है या कभी भी अधिक प्रभाव नहीं पड़ेगा।

अब जब मेरे बच्चे बड़े हो गए हैं, मेरे जीवन की सबसे बड़ी खुशी में से एक यह है कि उन्हें प्रभु की सेवा करते और उसका अनुसरण करते देखू। मेरे लिए सुनने में इससे बड़ा कोई आनंद नहीं है कि बच्चे सच्चाई पर चल रहे हैं (3 यूहन्ना 4)। उनमें से प्रत्येक ने परमेशवर के प्रति वफादार रहने और पूरे दिल से उसकी सेवा करने का चुनाव कीया है। मुझे इसमें बहुत खुशी होती है, हालांकि मैं इसका श्रेय नहीं लेता। वह उनके और परमेशवर के बीच है। यह सब उसकी कृपा है। मैं इस तथ्य में आराम कर सकता हूं कि उस समय जहां तक मैं सक्षम था, मैंने उनसे प्यार करने और उन्हें परमेशवर के बारे में सिखाने

की पूरी कोशिश की। मैं निश्चित रूप से परिपूर्ण नहीं था। मुझे उनके साथ समय बिताने और उन्हें प्रभु के लिए बढ़ाने में बहुत आनंद आया। परमेशवर को इसका श्रेय जाता है कि वे क्या है , लेकिन मैं धन्यवादी हूं कि मुझे बहुत पछतावे के साथ नहीं जीना पड़ा। जैसा कि लोग कहते हैं, अपनी मृत्यु शय्या पर कोई नहीं चाहता कि उसने काम करने में अधिक समय व्यतीत कीया होता ! वे चाहते हैं कि उन्होंने इसे अपने परिवार के साथ बिताया होता । सुनिश्चित करें कि आपका परिवार अभी और हमेशा आपकी पहली प्राथमिकता है (1 तीमुथियुस 3:4-5; तीतुस 1:6; नीतिवचन 22:6)

क. धर्मी प्रशिक्षण क्या है?

धर्मी प्रशिक्षण वो है जो बच्चों को विकास करना परमेशवर का अनुसरण करना सिखाता है क्योंकि वे उसके लिए जीना चाहते हैं और उसकी सेवा करना चाहते हैं (इफिसियों 6:4)। यहोशू ने अपने आप को और अपने परिवार को यह करने के लिए प्रतिबद्ध कीया : "...परन्तु मैं और मेरा घराना, हम यहोवा की उपासना करेंगे!" (यहोशू 24:15)

अब्राहाम एक धर्मी पिता हमने देखा कि अब्राहाम एक अच्छा पति नहीं था, लेकिन वह एक अच्छा पिता था। परमेशवर ने कहा कि अब्राहाम ने अपने बच्चों और अपने पूरे परिवार को परमेशवर का अनुसरण करने के लिए प्रशिक्षित कीया (उत्पत्ति 18:19)।

यूसफ एक धर्मी पिता यूसफ एक अच्छा पति और एक अच्छा पिता था। यीशु ने अपनी किशोरावस्था में अन्य यहूदी लड़कों की तरह शादी नहीं की, लेकिन अपने पिता के साथ एक बढ़ई के रूप में काम करता रहा जब तक कि वह तीस साल का नहीं हो गया (लूका 3:23)। हर दिन वे घर पर और काम पर एक साथ थे, आपस में बात करते और अच्छे दोस्त बन रहे। यूसुफ ने यीशु को इस तरह का अकार दिया जो किसी ने भी नहीं दिया होता, और उसने यह एक अद्भुत कार्य कीया। यीशु ने यूसुफ से वैसे ही सीखा जैसे हम अपने माता-पिता से सीखते हैं (इब्रानियों 5:8)। इसलिए परमेशवर ने यूसुफ को अपने पुत्र का पिता होने के लिए चुना। यीशु के अलावा यूसुफ के चार बेटे थे: कुछ बेटियों के अलावा याकूब, यूसुफ, शमौन और यहूदा (मत्ती 13:55-56; 12:46-48; मरकुस 3:31-33; लूका 8:19-20; यूहन्ना 2: 12; प्रेरितों के काम 1:14)। याकूब और यहूदा, आरम्भिक कलीसिया में दो महापुरुषों को यूसुफ ने बड़ा कीया था (गलातियों 1:18, यहूदा 1)। वास्तव में, यूहन्ना के भाई याकूब के मारे जाने के बाद (प्रेरितों के काम 12:2), याकूब, यूसुफ का पुत्र, यरूशलेम की प्रारंभिक कलीसिया के अगुवों में से एक बन गया (गलातियों 1:19; 2:9, 12; प्रेरितों के काम 12 :17; 15:13; 21:18; 1 कुरिन्थियों 15:7)। याकूब और यहूदा प्रत्येक ने ऐसी पुस्तकें लिखीं जो नए नियम में हैं। याकूब की पुस्तक नए नियम की लिखी गई पहली पुस्तक थी। एक आदमी के लिए इतने अच्छे, धर्मी पुत्रों को पालने के लिए, जिसमें स्वयं यीशु भी शामिल है, यूसुफ एक बहुत अच्छा पिता रहा होगा।

परमेशवर का अनुसरण करने के लिए प्रशिक्षण यीशु को प्रेम से परमेशवर की आज्ञा मानने और उसकी सेवा करने के लिए यूसुफ और मरियम ने पाला था। लूका 2:52 कहता है कि वह शारीरिक रूप से (एक स्वस्थ, मजबूत शरीर), बौद्धिक रूप से (बुधि और ज्ञान में), सामाजिक रूप से (दूसरों के साथ मिलना सीखा) और आध्यात्मिक रूप से (परमेशवर के साथ एक मजबूत व्यक्तिगत संबंध विकसित) विकसित हुआ। हमें भी अपने बच्चों को उन क्षेत्रों में प्रशिक्षित करना होगा । हमें बच्चे के पैदा होते ही शुरू कर देना चाहिए ताकि यह उसके साथ उसका पूरा जीवन रहे (नीतिवचन 22:6)। तीमुथियुस की माँ और नानी ने तीमुथियुस को पवित्रशास्त्र पढ़ाया जब वह एक शिशु था (2 तीमुथियुस 3:14-15)।

ख. धर्मी प्रशिक्षण क्यों लें

परमेशवर आज्ञा देता है हमारे बच्चों को बचपन से ही परमेशवर को प्रेम करने और उसका अनुसरण करने के लिए प्रशिक्षण देना परमेशवर की आज्ञा है, जिसे वह माता-पिता से करने की उम्मीद करता है (इफिसियों 6:4)।

बच्चों को इसकी आवश्यकता है परमेशवर ने प्रत्येक बच्चे को अलग तरह से बनाया है। प्रत्येक व्यक्ति अपने स्वयं के व्यक्तित्व और आध्यात्मिक उपहारों और प्रतिभाओं के साथ विशिष्ट है। परमेशवर चाहता है कि प्रत्येक बच्चा बड़ा होकर वह पुरुष या स्त्री बने, जैसे परमेशवर ने उसे होने के लिए बनाया है। एक धर्मी घर, जिसमें एक पति अपनी पत्नी के लिए बेशर्त, बलिदानी प्रेम दिखाता है और एक पत्नी अपने पति के प्रति विनम्र भरोसा दिखाती है, यही वो घर है जो एक बच्चे को चाहिए जहाँ वह सुरक्षित हो सकते है और परमेशवर से प्यार करना और उस पर भरोसा करना सीख सकते है।

ग. धर्मी प्रशिक्षण कैसे पाएं

परमेशवर पिता को यह सुनिश्चित करने के लिए जिम्मेदार ठहराता है कि उसके बच्चों का पालन-पोषण एक धर्मी ढंग से हो (1 तीमुथियुस 3:4, 12)। कुछ पुरुष सोचते हैं कि बच्चों की परवरिश करना पत्नी का कर्तव्य है क्योंकि पुरुष उन चीजों को करने में बहुत व्यस्त है जो उसे लगता है कि अधिक महत्वपूर्ण हैं। वे गलत हैं। परमेशवर उम्मीद करता है कि पिता अपने बच्चों के पालन-पोषण की देखरेख करें। अधिकांश कार्य माताएँ कर सकती हैं, परन्तु पिता परमेशवर के प्रति उसकी सहायता करने और उसकी देखरेख करने के लिए उत्तरदायी है (इफिसियों 6:4; कुलुस्सियों 3:21)।

बेशर्त प्यार दिखाने द्वारा परमेशवर के सभी गुणों में से, उसका बेशर्त प्यार है जो हमारे लिए सबसे ज्यादा मायने रखता है। पत्नियों को अपने पति से बेशर्त प्रेम का अनुभव करने की आवश्यकता है (इफिसियों 5:25), और बच्चों को भी अपने माता-पिता से इसकी आवश्यकता है। इस तरह वे अपने लिए परमेशवर के बेशर्त प्यार के बारे में जानेंगे। आपने कार्य करने के ढंग से माता-पिता अपने बच्चों को परमेशवर के बारे में सिखाते हैं क्योंकि माता-पिता अपने बच्चों के लिए 'परमेशवर ' हैं - वे पूरी तरह से उनके जीवन के प्रभारी हैं और बच्चा पूरी तरह से माता-पिता पर निर्भर है। जैसे-जैसे वे बड़े होते जाएंगे, वे उस भरोसे को परमेशवर पर स्थानांतरित कर देंगे, इसलिए इसका एक छोटे बच्चे में मजबूती से विकास होना चाहिए।

सुनिश्चित करें कि आपके बच्चे जानते हैं कि वे जैसे भी हैं आप उनसे प्यार करते हैं, ना कि केवल वे जो करते हैं या नहीं करते हैं उसके कारण। उन्हें यह ना सिखाएं कि आप उन्हें कुछ काम करने के लिए अधिक प्यार करते है और दुसरे कामो को करने के लिए कम प्यार करते हैं। परमेशवर हमेशा हमें एक ही प्यार करता है। जब हम पाप करते हैं, तो यह हमारी संगति को उसके साथ अलग कर देता है लेकिन हमारे लिए उसके प्रेम को कम नहीं करता है। जब हमारे बच्चे अवज्ञा करते हैं, तो यह उन्हें हमारे करीब होने से रोकता है, लेकिन यह उनके लिए हमारे प्यार को नहीं बदलता है। सुनिश्चित करें कि आपके बच्चे जानते हैं कि आप उनसे प्यार करते हैं, चाहे वे कुछ भी करें, जैसे आप जानते हैं कि परमेशवर आपसे प्यार करेंगा चाहे आप कुछ भी करें।

दाऊद ने बिना शर्त प्यार नहीं दिखाया राजा दाऊद एक अद्‌भुत व्यक्ति था और आध्यात्मिक रूप से परमेशवर के बहुत करीब था, लेकिन वह एक अच्छा पिता नहीं था। उन्होंने अपने पिता से कभी नहीं सीखा। उसके पिता ने उसे प्रेम का अनुभव नहीं कराया (1 शमूएल 16:8-11) और ना ही उसके भाइयों ने (1 शमूएल 17:28-29)। उसकी कई पत्नियाँ थीं और वह अपने पुत्रों के निकट नहीं था (2 शमूएल 3:2-

5)। जब उसके पुत्र अम्मोन ने अपनी सौतेली बहन तामार के साथ बलात्कार किया , तो दाऊद ने इसके बारे में कुछ नहीं कीया (2 शमूएल 13:1-22)। क्योंकि दाऊद ने वह नहीं कीया जो पिता को करना चाहिए था, तामार के भाई अबशालोम ने मामलों को अपने हाथों में ले लिया और अम्मोन को मार डाला और फिर भाग गया। दाऊद ने अबशालोम की कमी तो खली लेकिन वह उसके पास अपना प्यार दिखाने के लिए नहीं गया (2 शमूएल 13:23-39)। अंत में, अबशालोम उसके साथ मेल-मिलाप करने के लिए दाऊद के पास गया, परन्तु दाऊद ने उसे प्रेम या मित्रता की पेशकश नहीं की और अबशालोम को बुरा लगा (2 शमूएल 14:23-33)। दाऊद ने उसे चूमा तो जरूर जो उसे करना चाहिए था लेकिन उसे यह नहीं बताया कि वह उसे माफ करता है या बहाल करता है। अबशालोम अपने पिता की अस्वीकृति से आहत हुआ और उसने अपने पिता को उखाड़ फेंकने के लिए विद्रोह शुरू कर दिया। वह मारा गया (2 शमूएल 15:1 - 18:32), और दाऊद का दिल टूट गया (2 शमूएल 18:33) और कहने लगा कि काश वह अबशालोम के बजाय मर गया होता। मरने के बाद उसने अबशालोम के लिए बहुत प्यार दिखाया, लेकिन उसने अबशालोम को बेशर्त प्यार कभी नहीं दिखाया जब वह जीवित था।

यह जानने के द्वारा कि प्यार कैसे दिखाना है बच्चों को प्यार दिखाने के अलग-अलग तरीके हैं, जैसे पत्नी या पति को प्यार दिखाने के अलग-अलग तरीके हैं। कुछ लोग दयालु, प्रेमपूर्ण शब्द सुनना पसंद करते हैं या नीचे लिखी तारीफों के साथ एक नोट प्राप्त करना पसंद करते हैं। जबकि कई उनके साथ समय बिताए जाने पर प्यार महसूस करते है। अभी भी कई लोगो के लिए उनकी मदद में कुछ बलिदान किया जाना वास्तव में उन्हें छूता है। कुछ लोग वास्तव में प्यार महसूस करते हैं जब उन्हें उपहार दिया जाता है, बेशक वो बहुत छोटा ही कियों ना हो । दूसरों को प्यार महसूस कराने के लिए शारीरिक रूप से छूए जाने या गले लगाए जाने की जरूरत होती है। यह जानकर कि आपके बच्चों (या साथी) से कौन प्यार बोलता है, आपको उनसे अपने प्यार का बेहतर संचार करने में मदद कर सकता है।

परमेशवर की खासियत को दर्शाने के द्वारा हम अपने बच्चों को जो कहते है से अधिक जो हम करते है उसके द्वारा अधिक सिखाते हैं। जो हम कहते हैं और जो हम करते हैं वह मेल खाना चाहिए होना चाहिए। यदि हम कहते कुछ और हैं और करते कुछ और हैं तो हम पाखंडी हैं, और परमेशवर कपटियों/पाखंडियो से घृणा करता है (मत्ती 7:5; 23:13-40; 6:2-16; लूका 6:42)। हम अपने शब्दों से बच्चों को पढ़ाते हैं, फिर हमें यह भी दिखाना चाहिए कि उन चीजों को अपने जीवन से कैसे लागु करना है। हम उन्हें परमेशवर के बेशर्त, बलिदानी प्रेम के बारे में बता सकते हैं, लेकिन जब तक वे यह नहीं देखते कि पति और पत्नी एक दूसरे के साथ ऐसा व्यवहार करते हैं और माता-पिता अपने बच्चों के साथ ऐसा व्यवहार करते हैं, वे वास्तव में नहीं समझेंगे। अपने आप से पूछें, "इस स्थिति में परमेशवर मेरे साथ कैसा व्यवहार करता होगा ?" ऐसे में आपको अपने बच्चों के साथ ऐसा ही व्यवहार करना चाहिए।

उन्हें परमेशवर को समर्पित करने द्वारा जैसे ही वे पैदा होते हैं, पिता को पूरे परिवार के साथ प्रार्थना करनी चाहिए और नए बच्चे के लिए परमेशवर का धन्यवाद करना चाहिए। परमेशवर का धनयवाद करते हुए बच्चे के लिए प्रार्थना करनी चाहिए और उसे पालने और बड़ा करने में परमेशवर को मदद करने के लिए कहना चाहिए। माता-पिता को चाहिए कि वे खुद को परमेशवर के प्रति समर्पित करें जैसे वे आपना बच्चा परमेशवर को समर्पित करते हैं।

बेटे-बेटियों के साथ एक जैसा व्यवहार करने द्वारा बेटे-बेटियों दोनों को समान प्यार और प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। अलग-अलग मानक/सिधांत नहीं हो सकते। बाइबल उन दोनों को "बच्चों" शब्द में शामिल करती है और यह कभी नहीं कहती है कि किसी के साथ अलग व्यवहार कीया जाना चाहिए। वे परमेशवर की दृष्टि में समान हैं (गलातियों 3:28)।

उनके साथ समय बिताने द्वारा हर दिन प्रत्येक बच्चे के साथ समय बिताएं, उन्हें सुनें, उनके साथ खेलें, उन्हें दिखाएं कि वे विशेष हैं और आपके द्वारा समय दिए जाने का हक रखते हैं। हमारा स्वर्गीय पिता हमेशा हमारे लिए उपलब्ध है, और हमें भी अपने बच्चों के लिए उपलब्ध होना चाहिए। उनके साथ वो काम करें जो उन्हें पसंद हो। उन्हें वहां ले जाएं जहां वे जाना पसंद करते हैं। जब आप कहीं जाते हैं या कुछ करते हैं, तो जब भी संभव हो उन्हें साथ ले जाएं। आपके साथ यह विशेष समय बहुत महत्वपूर्ण है और माता-पिता और बच्चे के लिए अच्छी यादें बनाता है। उन्हें दिखाएँ कि वे उस कलीसिया से अधिक महत्वपूर्ण हैं जिसकी आप पासबानी करते हैं (1 तीमुथियुस 3:4-5; तीतुस 1:6)। जब आप बात कर रहे हों या उनके साथ कुछ काम कर रहे हों तो अगर फोन बजता है, तो इसका जवाब ना दें। उन्हें अपना पूरा ध्यान दें, जैसे आपका स्वर्गीय पिता हमेशा आपको अपना पूरा ध्यान देता है।

उनके दोस्त बनने द्वारा मेरे बच्चे मेरी पत्नी के बाद मेरे सबसे अच्छे दोस्त हैं। जब वे छोटे थे तब हमारी दोस्ती शुरू हुई थी। आपसी विश्वास, प्यार और सम्मान की शुरुआत तब होनी चाहिए जब बच्चे बहुत छोटे हों। बच्चों को हीन मत समझो - उनके पास वयस्कों की तरह ही विचार और भावनाएँ हैं। यीशु ने बच्चों को दूर नहीं कीया, वास्तव में उसने कहा कि वयस्कों को बच्चों की तरह होना चाहिए, ना कि बच्चों को वयस्कों की तरह होना चाहिए (मत्ती 18:3; 19:13-14; 21:16; मरकुस 10:13-16)। हर बच्चे के साथ दोस्ती तब शुरू करें जब वह छोटा हो। वे आपके लिए बहुत खुशी लाएंगे और आप उनके लिए एक अद्भुत आशीर्वाद साबित होंगे।

उनके लिए प्रार्थना करने द्वारा अपने प्रत्येक बच्चे के लिए प्रतिदिन नाम लेकर प्रार्थना करें। अय्यूब अपने बच्चों के लिए प्रतिदिन प्रार्थना करता था , यहाँ तक कि जब वे बड़े हो गए और अपने दम पर जी रहे थे (अय्यूब 1:4-5)। उसने परमेशवर से उनकी रक्षा के लिए प्रार्थना की (अय्यूब 1:10-11)। शैतान जानता है कि अगर वह परिवारों को तोड़ सकता है और बच्चों को नियंत्रित कर सकता है, तो वह दुनिया को नियंत्रित कर सकता है। जिन बच्चों को वह सबसे ज्यादा जीतना चाहता है, वे पासबानो के बच्चे हैं। माता-पिता दोनों को व्यक्तिगत रूप से और एक साथ प्रार्थना करनी चाहिए, लेकिन यह विशेष रूप से पिता की जिम्मेदारी है। सुबह सबसे पहले अपने बच्चों के लिए प्रार्थना करें। उनके लिए और उनके साथ प्रार्थना करो जब तुम उन्हें रात में बिस्तर पर रखो। दिन में जब भी जरूरत पड़े उनके लिए और उनके साथ प्रार्थना करें।

उद्धार के लिए उनकी आवश्यकता को समझने में उनकी मदद करने के द्वारा जैसे आपके बच्चे शारीरिक रूप से आपके परिवार में पैदा हुए हैं, वैसे ही वो आत्मिक रूप से परमेशवर के परिवार में भी पैदा हुए होंगे (यूहन्ना 1:12-13; 3:3)। उनके जन्म से पहले ही माता-पिता को प्रतिदिन उनके उद्धार के लिए प्रार्थना करनी चाहिए। इस से पहले की वो आपके शब्दों को समझने लगे, इस से पहले ही उनके साथ प्रार्थना करना शुरू कर दें। उनसे यीशु के बारे में बात करें और उस पर उनका विश्वास बनए। अपने स्वयं के जीवन से यीशु के लिए जीवन जीने के महत्व को दिखाएं। अपने विश्वास के बारे में बात करें और यह की यीशु आपके लिए क्या मायने रखता है। विश्वास के बीज तुम बोते हो, और जवानी में सींचते हो, वे जीवन भर फल देते रहेंगे (नीतिवचन 22:6)।

उन्हें बाइबल सिखाने के द्वारा अपने बच्चों को बाइबल सिखाएँ और उन्हें बाइबल की कहानियाँ सुनाएँ, इससे पहले कि वे आपकी हर बात को समझ सकें। उन्हें ये बातें बचपन से ही सीखनी चाहिए (2 तीमुथियुस 3:15)। जिस प्रकार एक बच्चे के शरीर को स्वस्थ रहने और बढ़ने के लिए शारीरिक पोषण की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार उनकी आत्मा को बढ़ने के लिए परमेशवर के वचन को जानने की आवश्यकता होती है (1 कुरिन्थियों 3:1-2; यिर्मयाह 15:16)। प्रतिदिन अपने बच्चों के साथ प्रार्थना करने

और बाइबल पढ़ने के लिए समय निकालें। सुबह जब वे उठते हैं या सोने से पहले दोनों अच्छे समय होते हैं। जब वे बड़े हो जाएँ तो उन्हें अपनी बाइबल पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करें। एक साधारण बच्चों की बाइबल से शुरू करें ताकि उनके लिए पढ़ना और समझना आसान हो। परमेशवर चाहता है कि हम सब उसके वचन को जुबानी याद कर लें ताकि वह हमारे हृदय में हो (भजन संहिता 119:9-11)। यीशु ने एक बच्चे के रूप में याद की गयी आयातों को बोलते हुए शैतान पर विजय प्राप्त करने में सक्षम ठहरा (मत्ती 4:1-11)। बाइबिल के बारे में बात करने के लिए दिन के दौरान आपने पास हर अवसर का उपयोग करें और कि जीवन में घटित होने वाली घटनाओं पर यह कैसे लागू होता है (व्यवस्थाविवरण 6:6-7)।

उन्हें यह सिखाने द्वारा कि कैसे प्रार्थना करें अपने बच्चों को सिखाएं कि कैसे प्रार्थना करें और उन्हें अपने साथ प्रार्थना करने के लिए कहें। परमेशवर से बात करना दोस्त से बात करने जैसा है। ज़ोर से प्रार्थना करें ताकि आपके बच्चे आपकी बात सुनें और आपके उदाहरण से सीखें। उन्हें भी ज़ोर से प्रार्थना करने के लिए एक मोड़ लेने के लिए प्रोत्साहित करें। परमेशवर को बच्चों की प्रार्थना सुनना अच्छा लगता है; वास्तव में, वह कहता है कि वयस्कों को उसके पास बच्चों के रूप में आना चाहिए (मत्ती 18:3; 19:13-14; 21:16; मरकुस 10:13-16)। जब आप उन्हें प्रार्थना करना सिखाते हैं, तो उन्हें परमेशवर की आवाज सुनना सिखाएं। संचार केवल बात करने के बारे में नहीं है, यह सुनने के बारे में भी है। परमेशवर को हमसे जो कहना है वह उससे कहीं अधिक महत्वपूर्ण है जो हमें परमेशवर से कहना होता है। उन्हें सिखाएं कि परमेशवर की आवाज कैसे सुनें।

उन्हें परमेशवर की आज्ञाकारिता में एक पवित्र जीवन जीने का शिक्षण देने द्वारा अपने शिक्षण और उदाहरण के द्वारा दिखाएं कि उनका अपने विश्वास को दैनिक जीवन में लागू करने का क्या महत्व है (2 कुरिन्थियों 5:7; गलातियों 5:16)। उन्हें सिखाए की पापरहित, एक पवित्र जीवन कैसे व्यतीत करना है, अपने पापों को तुरंत स्वीकार करना (1 यूहन्ना 1:9), प्रलोभनों पर विजय प्राप्त करना और परीक्षाओं और कठिनाइयों के समय में विश्वासयोग्य बने रहना। जब आप उनके सामने आते हो तो उनसे इन बातों के बारे में बात करें ताकि वे भी आपके उदाहरण से सीख सकें (व्यवस्थाविवरण 6:6-7)।

उन्हें प्रोत्साहित करने के द्वारा यदि माता-पिता अपने बच्चों से बहुत अधिक उम्मीद रखते हैं या उन पर बहुत कठोर हैं, तो वे आसानी से हतोत्साहित हो सकते हैं और जो आप उन्हें सिखाते हैं वह नहीं करना चाहते हैं (इफिसियों 6:4; कुलुस्सियों 3:21)। उनकी आलोचना ना करें; आप जो चाहते हैं की वो करें उसे के लिए अस्वीकृति या भय का प्रयोग ना करें। परमेशवर हमारे साथ, यानि अपने बच्चों के, साथ ऐसा कुछ नहीं करता है। वह हमसे प्यार करता है चाहे कुछ भी हो और हमें अनुसरण करने के लिए प्रोत्साहित करता है। हमें भी अपने बच्चों के साथ ऐसा ही व्यवहार करना चाहिए।

धर्मी, निरंतर अनुशासन के द्वारा माता-पिता को अपने बच्चों को प्यार से अनुशासित करने की आवश्यकता है, जब उन्हें इसकी आवश्यकता होती है (नीतिवचन 22:15; 23:13)। हमारा स्वर्गीय पिता आवश्यकता पड़ने पर हमें प्रेम से अनुशासित करता है (इब्रानियों 12:7-11)। उन्हें ठीक करने के लिए पर्याप्त देखभाल करना प्यार को दर्शाता है। अनुशासन की देखरेख के लिए पिता जिम्मेदार है, लेकिन माता-पिता दोनों की जिम्मेदारी है कि इसे एक साथ पूरा करें।

अनुशासन <u>अटल</u> होना चाहिए; एक दूसरे से अधिक की उम्मीद ना करते हुए । यह बच्चों पर कठिन और उनके के लिए बहुत भ्रमित करने वाला साबित होगा । प्रत्येक बच्चे पर प्रत्येक दिन बराबर के नियम लागू होने चाहिए। ऐसा नही हो सकता किआप उन्हें एक दिन किसी चीज़ से दूर हो जाने की अनुमति दें फिर अगले दिन उन्हें इसके लिए अनुशासित करते हैं। आप एक बच्चे को किसी चीज के साथ बने रहने नहीं होने दे सकते हैं और फिर उसी चीज के लिए दूसरे बच्चे को अनुशासित करते हैं। अनुशासन उम्र

के हिसाब से अलग-अलग हो सकता है, लेकिन यह इस अंतर के लिए अलग नहीं होना चाहिए के बच्चा लड़का या लड़की है(लिंग आधारित नहीं होना चाहिए) । अनुशासन घर पर या घर से दूर होने पर समान होना चाहिए। यदि ऐसा नहीं है, तो बच्चे जल्द ही नोटिस करेंगे और जब वे घर पर नहीं हैं तो कई चीजों के साथ बने रहने की /होने की कोशिश करेंगे। अनुशासन माता-पिता की मनोदशा पर निर्भर नहीं कर सकता है - यदि वे खुश हैं, थके हुए हैं, आदि। यह अटल होना चाहिए क्योंकि परमेशवर हमारे साथ अटल हैं। यदि नहीं, तो हमारे बच्चे कड़वाहट से भर जाएँगे या निराश हो जाएंगे (कुलुस्सियों 3:21)। वे हताश हो जाएंगे और इससे कुछ नहीं सीखेंगे (इफिसियों 6:4)।

<u>अनुशासन क्रोध में नहीं क्या जा सकता।</u> परमेशवर कभी भी क्रोध में हमें अनुशासित नहीं करता (रोमियों 8:1)। जब माता-पिता क्रोधित होते हैं, तो अनुशासन सजा बन जाता है। यह सोचने के बजाय कि भविष्य में बच्चे को अलग तरह से कार्य करना सिखाने के लिए सबसे अच्छा क्या है, नाराज माता-पिता सिर्फ बच्चे पर अपना गुस्सा निकालते हैं और उन्हें पीड़ित करते हैं क्योंकि उन्होंने माता-पिता को नाराज कर दिया है। एक माता-पिता उस तरह से बच्चे के लिए उचित काम नहीं करते हैं। यह भी एक बच्चे को कड़वा , निरुत्साहित या हताश कर सकता है, ऐसा कुछ जिसे परमेशवर स्पष्ट रूप से माता-पिता, और विशेष रूप से पिताओं को नहीं करने की आज्ञा देता है (कुलुस्सियों 3:21; इफिसियों 6:4)। यदि माता-पिता एक-दूसरे के साथ या परमेशवर के साथ नहीं मिल रहे हैं, तो वे कभी-कभी अपने बच्चों पर इसका असर डालते हैं। यह भी पाप है।अनुशासित करते समय, सुनिश्चित करें कि परिणाम उसके अनुसार है जो बच्चे ने किया है (या नहीं कीया) । यदि वह एक बचकानी, अपरिपक्व गलती करता है, तो अनुशासन लगभग उतना गंभीर नहीं होना चाहिए जैसे कि उसने इरादतन और जानबूझकर विद्रोह करना चुना हो।

जब बच्चे बहुत छोटे होते हैं, तो पिटाई एक बच्चे के लिए एक अच्छा अनुशासन हो सकता है (नीतिवचन 13:24; 29:15)। हालाँकि, जब वे बड़े हो जाते हैं, तो प्राकृतिक परिणामों का उपयोग करना बेहतर होता है, जैसा कि परमेशवर हमारे साथ करता हैं। यदि आप सरकार के कानूनों को तोड़ते हैं, तो आपको जुर्माना देना होगा। आप अपने स्वास्थ्य का ध्यान नहीं रखते हैं, आप बीमार हो जाते हैं। यदि आप अपने बिलों का भुगतान नहीं करते हैं, तो आप अपनी संपत्ति खो देंगे। इस तरह परमेशवर दुनिया को आदेश देता हैं। अपने बच्चे के साथ भी ऐसा ही करें। अगर वे दूसरों के साथ नहीं मिल सकते हैं तो उन्हें खुद बैठना होगा। अगर वे काम में मदद नहीं करेंगे, तो उन्हें खाने को नहीं मिलेगा (2 थिस्सलुनीकियों 3:10; 1 तीमुथियुस 5:8)। हमारे घर में स्कूली शिक्षा हमारे बच्चे का 'काम' था और अगर वे लगातार इसे करना बंद कर देते हैं तो हम उन्हें बताएंगे कि उन्हें खाने से पहले यह करना होगा। यदि वे जानबूझकर अवज्ञा के विद्रोह से कुछ तोड़ते हैं या खो देते हैं, जो दुर्घटनातमिक नहीं था , तो उन्हें इसे ठीक करना चाहिए या दूसरा खरीदना चाहिए। अगर उनके पास पैसा नहीं है तो वे पैसे कमाने के लिए घर पर अतिरिक्त काम कर सकते हैं। परमेशवर से इन चीजों के बारे में आपको ज्ञान देने के लिए प्रर्थना करें । हालाँकि, अनुशासन के लिए कभी भी सताव, डांट, प्यार को रोकना या क्रोध का उपयोग अदि नहीं करना चाहिए। परमेशवर कभी भी हमारे साथ इसका इस्तेमाल नहीं करता हैं।

सुनिश्चित करें कि आपने उन्हें बताया कि अनुशासन पूर्ण होने के बाद उन्हें क्षमा कर दिया गया है और बहाल कर दिया गया है। इसके बारे में बात करें, उनके साथ प्रार्थना करें, उन्हें गले लगाएं और सुनिश्चित करें कि वे जानते हैं कि आप उनसे बेशर्त प्यार करते हैं, चाहे वे कुछ भी करें।

अस्वस्थ/कमजोर अनुशासन के बाइबल उदाहरण बाइबल में माता-पिता के अपने बच्चों को सही ढंग से अनुशासित नहीं करने और उनके और बच्चों के लिए इससे होने वाली समस्याओं के उदाहरणों की बड़ी संख्या है। <u>सम्सून के माता-पिता</u> को उसे कभी भी अधर्मी स्त्रियों से फसने नहीं देना चाहिए था,

लेकिन उन्होंने ऐसा होने दिया। उन्होंने उसे एक पत्नी दी जो विश्वासी नहीं थी क्योंकि उसने उस पर जोर दिया था (न्यायियों 14:1-4)। यहीं से वह रास्ता शुरू हुआ जो उसकी मौत का कारण बना। एली एक अच्छा धर्मी याजक था, परन्तु जब उसके पुत्रों ने पाप कीया तो उसने उन्हें रोका नहीं। उसने उनसे सिर्फ उनके पाप के बारे में बात की लेकिन उन्हें रोका नहीं; इसके बजाय उसने उन्हें तम्बू में सेवा करते रहने दिया। परिणामस्वरूप, वह और वे मर गए, और परमेशवर ने उसके परिवार से महायाजक पद को हटा दिया (1 शमूएल 2:22-25)। लूत ने स्पष्ट रूप से अपनी बेटियों की परवरिश ठीक से नहीं की, क्योंकि उन्होंने उसे पिलाकर उससे ही गर्भवती हुई (उत्पत्ति 19:30-38)।

निष्कर्ष

हमारे बच्चे परमेशवर के हैं। वह उन्हें हमें कुछ वर्षों के लिए उधार देता है ताकि हम उनका आनंद उठा सकें और उन्हें उसके लिए बढ़ा सकें। माता-पिता परमेशवर के लिए सिर्फ बच्चे-पालक हैं। उन्हें परमेशवर के लिए बड़े करने के लिए प्रतिबद्ध है । यहोशू के समान बनो: "...परन्तु मैं और मेरा घराना हम यहोवा की उपासना करेंगे!" (यहोशू 24:15)।

भजन संहिता 127:1-5 कहता है, "यदि भवन को यहोवा ना बनाए, तो उसके बनानेवाले व्यर्थ परिश्रम करते हैं। ... 3. पुत्र यहोवा की ओर से निज भाग हैं, सन्तान उसकी ओर से प्रतिफल है। 4. योद्धा के हाथ में बाणों की तरह जवानी में पैदा हुए बेटे होते हैं। धन्य है वह मनुष्य जिसका तरकश उन से भरा है। जब वे फाटक में अपके शत्रुओं से लड़ेंगे, तब वे लज्जित ना होंगे।" परमेशवर को हमारे विवाह और परिवार के केंद्र में होना चाहिए ताकि वह अपनी आवश्यकता के अनुसार कार्य करे। उनका कहना है कि बच्चे तीर की तरह होते हैं। जब वे सटीक रूप से बनाऐ जाते हैं तो उन्हें जरूरत के अनुसार उसे पूरा करने के लिए भेजा जा सकता है। माता-पिता को आपने बच्चों को इस तरह से विकसत करना है कि वो प्रभु का अनुसरण करे और जीवन में उसकी इच्छा पूरी करे, जहां वह उन्हें भेजता है और उनकी अगुवाई करता है कि वहां जाए और उसकी सेवा करे । जब माता-पिता अपने बच्चों को उसके लिए जीने वाले, परिपक्व मसीही वयस्क बनने के लिए बड़ा करते हैं, तो वे अपने माता-पिता और अन्य मसीहीओं के लिए एक आशीर्वाद होंगे जिनके जीवन पर वे प्रभाव डालते हैं।

यदि हम इन बातों को करने का प्रयास करते हैं, तो हम सुनेंगे, "धन्य, अच्छे और विश्वासयोग्य दास!" (मत्ती 25:21)।

मेरी पत्नी की तरफ से

अपने पति को विनम्रता से यह बताने से ना डरें कि आपको और आपके परिवार को घर में उसकी जरूरत है। यदि वह व्यस्त है तो लचीला और समझदार बनें लेकिन उसे हर दिन समय निर्धारित करने के लिए प्रोत्साहित करें जो वह आपके और आपके परिवार केलिए समय निकाले । वह बच्चों के साथ बात करके और समय बिताकर और उनकी चिंताओं के बारे में जानकर और फिर पूरे परिवार के साथ प्रार्थना करके ऐसा कर सकता है। फिर उससे कहो कि तुम्हें उससे आशिश्त हुई हो और तुम्हे उस पर गर्व है। यह उसे फिर से ऐसा करने के लिए प्रोत्साहित करता है।

पुस्तक का निष्कर्ष

मैं इस पुस्तक को लिखने के अवसर और विशेषाधिकार के लिए आभारी हूं। परमेशवर ने मुझे विवाह और परिवार के बारे में जो कुछ सिखाया है, उसे साझा करना एक विशेषाधिकार और सम्मान की बात है।

मुझे आपसे सुनना अच्छा लगेगा यदि आपके पास इस पुस्तक को बेहतर बनाने के लिए कोई सुझाव है, शादी के बारे में आपने जो सबक सीखा है, उसमें से यदि मेरे लिए प्रशन या प्रार्थना के लिए अनुरोध है । मुझसे jerry@schmoyer.net पर संपर्क कीया जा सकता है।

आप का धन्यवाद और परमेशवर आपको बरकत दे जब आप अपने विवाहों और परिवारों के माध्यम से उसकी सेवा करते हैं। अगर मैं आपसे इस जीवन में नहीं मिला तो मैं आपको स्वर्ग में देखूंगा और साथ में हम अपने जीवन में परमेशवर की दया को साझा कर सकते हैं।

जैरी श्मोयर

सभोपदेशक 4:12 यद्यपि एक पर अधिकार जमाया जा सकता है, लेकिन दो अपना बचाव कर सकते हैं। तीन धागों की डोरी जल्दी नहीं टूटती।

पति + पत्नी + परमेशवर

SP-28.08.2021